25 अगस्त, 2025
भाद्रपद, शुक्ल पक्ष, द्वितीया
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
सोमवार, वर्ष 10, अंक 305

मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पिता को इतना प्यार करता हूं...

Ph.D. Awarded

By the order of Vice-Chancellor, Usha Martin University, Ranchi, Jharkhand, **Ms. Nimisha Sinha D/o. Suresh Shankar Sinha and Pushpa Sinha W/o Dr. Ashish Alok** is declared to have passed the Doctor of Philosophy Ph.D. IN LAW (Faculty of Legal Studies) examination held on **18th August 2025** on the topic **"Effectiveness of Cyber Laws in Controlling Cyber Crimes in India with Special Reference to Jharkhand"** under the Guidance of Dr. Swati Sawar (Assistant Professor & HOD, Department of Legal Studies), Usha Martin University, Ranchi, Jharkhand.

नगड़ी में रिम्स-2 की जमीन पर आंसू गैस के गोलों के बीच ग्रामीणों ने की धनरोपनी

■ पूर्व सीएम चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट किया गया ■ भाजपा के अन्य नेताओं को भी लिया गया हिरासत में

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रविवार को रुक-रुक कर हो रही बारिश के बीच नगड़ी स्थित रिम्स-2 की प्रस्तावित जमीन पर जम कर हंगामा हुआ। पुलिस द्वारा दागे जा रहे आंसू गैस के गोलों के बीच जिले के विभिन्न इलाकों से आये आदिवासी समुदाय के लोगों ने वहां धनरोपनी की। यह बवाल पूर्व घोषित 'हल चलाओ रोपा रोपो' कार्यक्रम के दौरान हुआ। पुलिस प्रशासन ने इस कार्यक्रम का नेतृत्व करनेवाले पूर्व सीएम चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट कर लिया। राज्य के अन्य हिस्सों से नगड़ी आ रहे भाजपा के कई नेताओं को भी हिरासत में लिया गया।

DEMO PIC

सुबह से ही तैनात की गयी थी पुलिस

सुबह से ही तय कार्यक्रम के तहत अलग-अलग क्षेत्रों से लोगों का जुटान नगड़ी स्थित जमीन पर होने लगा। जिस जगह पर रिम्स-2 का निर्माण होना है, वहां चारों ओर से लोग जुटने लगे।

'नगड़ी जमीन बचाओ संघर्ष समिति' के आह्वान पर ग्रामीणों के समर्थन में जेएलकेएम के केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्रनाथ महतो भी पहुंचे और हल-बैल चला कर जमीन बचाने की बात कही। लोगों की बढ़ती संख्या और हंगामे की संभावित आशंका को देखते हुए पुलिस ने भी चुस्ती दिखायी और भीड़ को हटाने के लिए सख्ती भी बरती।

इधर प्रदर्शनकारी भी थोड़े उग्र हुए। इसके बाद पुलिस ने बल प्रयोग करते हुए आंसू गैस के गोले छोड़े। इसके बावजूद लोगों ने खेतों में घुस कर पारंपरिक गीत और नृत्य के साथ धनरोपनी की।

दिशोम गुरु का मुखौटा पहन पहुंचे ग्रामीण

आंदोलनकारी किसान, आदिवासी महिला पुरुष दिशोम गुरु शिबू सोरेन का मुखौटा लगाकर खेतों की पगडंडी होते हुए रिम्स-2 की जमीन पर पहुंच गये। वहां पहुंचे लोग खेतों में हल चलाने और रोपा रोपने जैसे पूर्व निर्धारित काम करने लगे। आंदोलन में शामिल होने के लिए लातेहार, लोहरदगा, बिजूपाड़ा, हातमा और बेड़ो समेत कई इलाकों से सैकड़ों ग्रामीण पहुंचे थे।

चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट किया था

कार्यक्रम को देखते हुए पुलिस ने सुबह पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट किया था और उन्हें उनके घर से बाहर निकलने नहीं दिया गया। चंपाई सोरेन ने बताया कि डीएसपी वी रमण आये और उन्होंने कहा कि आपको आवास से बाहर नहीं जाना है। वहीं डीएसपी ने कहा कि विधि-व्यवस्था बनाये रखने के लिए निषेधात्मक कार्रवाई के तहत उन्हें हाउस अरेस्ट किया गया है। उधर अलग-अलग जिलों से रांची आ रहे कई भाजपा नेताओं को भी पुलिस ने रांची पहुंचने से पहले हिरासत में ले लिया। इनमें पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के बेटे बाबूलाल सोरेन भी शामिल थे।

धनबाद में चाल धंसी, एक की मौत

धनबाद (आजाद सिपाही)। धनबाद के इस्ट बसुरिया स्थित लिब्रा आउटसोर्सिंग कोलियरी क्षेत्र में रविवार को चाल धंसने से एक युवक की मौत हो गयी, जबकि एक लड़की गंभीर रूप से घायल हो गयी। घायल लड़की का इलाज शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, धनबाद में चल रहा है। स्थानीय लोगों के मुताबिक कुछ लोग बगल की माइंस से घरेलू उपयोग के लिए कोयला निकाल रहे थे। इसी दौरान अचानक चाल धंस गयी। हादसे में इस्ट बसुरिया ओपी क्षेत्र निवासी छोटू भुईंया की मौके पर ही मौत हो गयी, जबकि सुहाना कुमारी मलबे में दब कर घायल हो गयी, जिसे स्थानीय लोगों ने निकाल कर अस्पताल पहुंचाया। सुहाना के पिता नरेश केवट ने बताया कि इलाके के लोग अक्सर घर का चूल्हा जलाने के लिए पास की माइंस से कोयला निकालते हैं। रविवार को उनकी बेटी भी वहां गयी थी। उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की थी, लेकिन वह नहीं मानी। हादसे के बाद से पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

हजारीबाग के चरही स्थित सीसीएल की तापीन नॉर्थ परियोजना में उग्रवादियों का तांडव

टीपीसी ने निजी कंपनी की छह गाड़ियां जलायीं

● ऑपरेटरों को पीटा और पर्चा छोड़ दिया संदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

चरही। हजारीबाग जिले के चरही थाना क्षेत्र स्थित सीसीएल की तापीन नॉर्थ परियोजना में शनिवार की देर रात उग्रवादी संगठन तृतीय प्रस्तुति कमेटी (टीपीसी) ने बड़ी वारदात को अंजाम दिया।

घटना रात 12 से एक बजे के बीच की बतायी जा रही है। उग्रवादियों के दस्ते ने आउटसोर्सिंग कंपनी आरकेएस की खड़ी गाड़ियों को निशाना बनाया। उन्होंने पोकलेन और हाइवा समेत छह भारी वाहनों से तेल निकाल कर आग के हवाले कर दिया।

अचानक लगी आग से इलाके में अफरा-तफरी और दहशत का माहौल बन गया। इस दौरान ड्यूटी पर मौजूद ऑपरेटरों और कर्मियों के साथ मारपीट भी की गयी और उन्हें काम बंद करने की धमकी दी गयी।

पोस्टर चिपका कर दी सख्त चेतावनी : घटना को अंजाम देने के बाद उग्रवादियों ने मौके पर पोस्टर चिपका कर कंपनी को काम तत्काल बंद करने का अल्टीमेटम दिया। पोस्टर में साफ लिखा गया है कि जब तक संगठन से बात नहीं होगी, सभी कंपनियां काम बंद रखें, अन्यथा गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। आरकेएस कंपनी पिछले चार वर्षों से तापीन नॉर्थ परियोजना में कोयला खनन का कार्य कर रही है।

वाहनों में आगजनी (इनसेट) की घटना के बाद जांच करने पहुंचे पुलिस पदाधिकारी।

आरकेएस कंपनी पर सबसे बड़ा हमला : कंपनी के वाहनों पर हमला और आगजनी की यह घटना अब तक की सबसे बड़ी वारदात मानी जा रही है। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से उग्रवादी इस इलाके में सक्रिय थे और कंपनियों को लगातार धमका रहे थे।

इलाके में दहशत, प्रशासन सतर्क
इस घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि उग्रवादी संगठनों की बढ़ती सक्रियता क्षेत्र के विकास के लिए गंभीर चिंता का विषय है। सीसीएल प्रबंधन और पुलिस प्रशासन ने घटना को बड़ी चुनौती मानते हुए सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की बात कही है। सीसीएल ने अपने कर्मचारियों और ठेका कंपनियों के कर्मियों को सुरक्षा का भरोसा दिलाया है।

पुलिस ने शुरू की जांच

घटना की सूचना मिलते ही चरही थाना पुलिस मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने की कोशिश की। पुलिस ने घटनास्थल से उग्रवादियों द्वारा छोड़ा गया पोस्टर बरामद किया है। मामले की जांच शुरू कर दी गयी है। चरही थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल ने बताया कि घटनास्थल रामगढ़ जिले की सीमा में आता है। उन्होंने कहा कि अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए सघन अभियान चलाया जायेगा और दोषियों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जायेगा।

भंडरा में बच्चे का हाथ-पैर तोड़ने का मामला

सीएम हेमंत सोरेन ने लिया संज्ञान, कार्रवाई का आदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भंडरा के एक निजी स्कूल की शिक्षिका द्वारा बच्चे की बेरहमी से पिटाई करने और हाथ-पैर तोड़ने की घटना की जांच कर दोषियों पर कार्रवाई का आदेश दिया है। सीएम ने घटना के बारे में मिली सूचना के तत्काल बाद सोशल मीडिया के जरिये उपायुक्त को घटना की जांच और समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इस घटना पर समुचित कार्रवाई हो, ताकि आगे ऐसे कोई भी घटना दुबारा ना हो। साथ ही बच्चे के इलाज एवं काउंसलिंग की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए सूचना दें।

मामले की जांच शुरू : सीएम के निर्देश के बाद उपायुक्त डॉ कुमार ताराचंद ने उन्हें तत्काल जवाब भेज कर सूचित किया कि इस संबंध में जिला शिक्षा पदाधिकारी की अध्यक्षता में चार सदस्यीय समिति गठित कर मामले की जांच की कार्रवाई प्रारंभ कर दी गयी है। पीड़ित का इलाज सीएचसी भंडरा में कराया जा चुका है। साथ ही इस मामले में पीड़ित के अभिभावक द्वारा भंडरा थाना में कांड संख्या 58/2025 के साथ मामला दर्ज कराया गया है।

क्या है मामला : यह मामला पलमी स्थित संत मेरी पब्लिक स्कूल से जुड़ा है। मसमानो गांव निवासी सुकरा उरांव ने स्कूल की शिक्षिका कांति किरण किंडो पर अपने आठ वर्षीय पुत्र प्रिंस उरांव पर बेरहमी से

पिटाई करने और हाथ-पैर तोड़ने का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया है कि उनका बेटा स्कूल में यूकेजी में पढ़ता है और स्कूल द्वारा संचालित हॉस्टल में ही रहता है। 20 अगस्त को स्कूल की शिक्षिका कांति किरण किंडो ने उनके बेटे प्रिंस को हॉस्टल में खराब खाना दिये जाने की शिकायत करने के कारण बेरहमी से डंडे से पीटा। पिटाई के कारण भयभीत होकर उनका बेटा हॉस्टल से भागकर अपने गांव पहुंचा। फिर परिजनों को पूरे मामले से अवगत कराया। बच्चे की हालत को देखते हुए उसके परिजन उसे सदर अस्पताल लोहरदगा ले गये, जहां इलाज के दौरान उसका एक्सरे निकाला गया, जिसमें पाया गया कि प्रिंस के हाथ की एक उंगली टूटी हुई है, जबकि दाहिने पैर की एड़ी सहित अन्य हिस्सों में चोट लगी है। इसे लेकर जब बच्चों के परिजन स्कूल पहुंचे और वहां के अध्यापक और उक्त शिक्षिका से बात करने की कोशिश की, तो उन लोगों ने बच्चे के परिजनों के साथ दुर्व्यवहार किया।

BABU DINESH SINGH UNIVERSITY
(Established Under Government of Jharkhand Act-06, 2023 & Section 2(f) of the UGC Act, 1956, Member of AIU, Delhi)

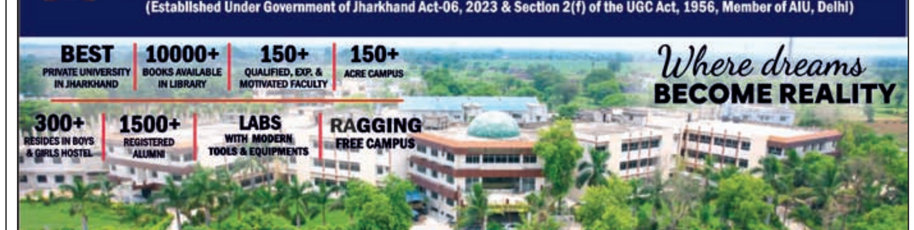

CAREER-ORIENTED PG/UG/DIPLOMA PROGRAMMES

Programs Approved by AICTE & Apex Bodies

ADMISSION OPEN SESSION 2025-26

Faculty of Engg. & Tech
B.Tech
- Civil Engineering
- Electrical and Electronic Eng.
- Computer Science & Eng.
- CSE (Artificial Intelligence)
- CSE (Cyber Security)

Polytechnic / Diploma
- Civil Engineering
- Mechanical Eng.
- Electrical and Electronic Eng.
- Computer Science & Eng.
- Electrical Engineering

Faculty of Law
- LL.B. ▪ B.A. LL.B. ▪ B.B.A. LL.B

Faculty of Management
- Bachelor of Business Administration (BBA)
- Master of Business Administration (MBA)

Faculty of Information Tech.
- Bachelor of Computer Application (BCA)
- Master of Computer Application (MCA)
- Post Graduation in Computer Application (PGDCA)

Faculty of Education
- Bachelor of Elementary Education (B.Ed)
- Diploma of Elementary Education (D.El.Ed.)
- M.A (Education)

Faculty of Arts & Social Science
- B.A (Hindi) ▪ B.A (English) ▪ B.A (Sanskrit)
- B.A (Economics) ▪ B.A (Psychology)
- B.A (Sociology) ▪ M.A (Hindi) ▪ M.A (English)
- M.A (Sanskrit) ▪ M.A (Economics)
- M.A (Psychology ▪ M.A (Sociology)

Faculty of Pharmacy
- Diploma in Pharmacy (D.Pharm)
- Bachelor of Pharmacy (B.Pharm)

Faculty of Dental Science
- Bachelor of Dental Surgery (BDS)
- Master of Dental Surgery (MDS)

Faculty of Homeopathy
- Bachelor of Homeopathic Medicine & Surgery- BHMS
- M.D Homeopathy ▪ B.Sc Medical Pathology
- B.Sc Medical Biochemistry ▪ B.Sc Medical Microbiology
- M.Sc Medical Microbiology
- M.Sc Medical Biochemistry

Faculty of Nursing & Allied Health Science
- Bachelor of Science in Nursing (B.Sc. Nursing)
- General Nursing and Midwifery (GNM)
- Auxiliary Nurse Midwives (ANM)

Paramedical
- OT ▪ DMLT ▪ ECG ▪ X-RAY
- Medical in Sanitary Inspector
- Medical in Ophthalmic Assistant
- Medical in Certificate in Dresser

Library Science
- B.Lib.I.Sc. ▪ M.Lib.I.Sc

Faculty of Science
- B.Sc. (Mathematics) ▪ B.Sc. (Chemistry) ▪ B.Sc. (Physics)
- B.Sc. (Botany) ▪ B.Sc. (MLT) ▪ B.Sc. (Zoology)
- B.Sc. (Pathology) ▪ B.Sc. (Biochemisty) ▪ B.Sc. (Microbiology)
- M.Sc. (Mathematics) ▪ M.Sc. (Chemistry) ▪ M.Sc. (Physics)
- M.Sc. (Botany) ▪ M.Sc. (Zoology) ▪ M.Sc. (Physiology)
- M.Sc. (Biochemisty) ▪ M.Sc. (MLT) ▪ M.Sc (Microbiology)

Faculty of Commerce
- B.Com ▪ M.Com

TRANSPORT FACILITIES | HOSTEL FACILITIES | LUSH GREEN CAMPUS | WI-FI CAMPUS | WORLD CLASS INFRASTRUCTURE | 100% PLACEMENT ASSISTANCE

Admission Helpline: 9661462506, 6206297213, 9934688493

Farathiya, Garhwa-822114, Jharkhand https://bdsu.ac.in/

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पिता को इतना प्यार करता हूं...

- सेवा करते-करते मानों मैंने उस अमृत को चख लिया, जिसे कई सिद्धि के बाद भी अर्जित नहीं किया जा सकता
- पिता कहते नहीं, लेकिन कभी उनकी आंखें पढ़ कर देखना, पास बैठने को बोलेंगी
- माथे पर हाथ फेरने को कहेंगी, बोलेंगी बेटा मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत है
- इंसान ईश्वर ढूंढने मंदिर-मंदिर जाता है, बस पिता को गले लगा लो, ईश्वर प्राप्त हो जायेंगे
- मैं अपने पिता के लिए रोज पहाड़ तो लाता, लेकिन वह बूटी कौन सी थी, जो उनके लिए संजीवनी का काम करती, उसकी पहचान नहीं कर पाया, बस ईश्वर यहीं जीत जाते हैं और इंसान यहीं पिछड़ जाता है।

राकेश सिंह
संपादक

पिता को तो सभी प्यार करते हैं। स्वाभाविक भी है। जैसे सभी करते हैं, वैसे मैं भी अपने पिता से प्रेम करता था। पापा मेरे हीरो थे, ज्यादातर लोगों के लिए उनके पिता हीरो ही होते हैं। मैं पापा से जो कुछ भी मांगता, उससे ज्यादा ही पाता। मुझे लगता था, यही पिता-पुत्र का प्रेम होता है। पिता हमेशा देता है और बच्चा हमेशा मांगता है। लेकिन एक पिता को भी अपने बच्चों की जरूरत उतनी ही होती है, जितनी बच्चों को पिता की। इसे जो महसूस कर लेता है, वह ईश्वर प्राप्त कर लेता है, उसे मंदिर-मंदिर जाने की जरूरत नहीं पड़ती, वह उस अमृत का पान कर लेता है, जिसे समुद्र मंथन के दौरान भी पाया न जा सका। जिसे अनेकों सिद्धि के बाद भी हासिल नहीं किया जा सकता। पिता कहता नहीं है कि बेटा मुझे तुम्हारी जरूरत है, उसे बस महसूस करना पड़ता है। अपने शुरुआती दिनों में, मैं अपनी दुनिया में मगन रहता और पापा भी अपनी दुनिया में रहते। पापा परिवार को समय कम दे पाते। जब पापा ऑफिस से आते, हम सोये हुए होते और जब हम जागते, पापा सोये हुए होते। पत्रकार थे। यह कोई पहेली नहीं, हर पत्रकार की सामान्य दिनचर्या है। खासकर अखबार वालों की। ऊपर से पापा संपादक। जब भी मैंने पापा को देखा, उन्हें हमेशा ऊर्जा से लैस ही पाया। थकान क्या होती है, शायद यह शब्द उनकी डिक्शनरी में नहीं था। वह अपने काम से बहुत प्रेम करते थे। जिद्दी थे। क्या करें पत्रकार थे। पत्रकारिता उनके लिए सांस का काम करती थी। जीवनवाहिनी थी। इसी में वह जीते। उनके लिए समाज और पत्रकारों की पीड़ा प्रथम थी। उनका मानना था कि जिस समाज ने उन्हें इतना कुछ दिया है, उसे वापस लौटाना भी उनकी जिमेदारी है। कर्मठ और जुनूनी व्यक्ति थे मेरे पिता।

पीपल पर लदे फल खा, पानी पी, पेट की अग्नि शांत की

अपने जन्म से ही उन्होंने गरीबी ऐसी देखी कि कई बार वह और उनके भाइयों ने बचपन के दिनों में पीपल के पेड़ पर लदे काले फल खा और पानी पी कर पेट की अग्नि शांत को शांत किया। महुवा और कोइना चुनते। कभी चावल मिला, तो दाल नहीं, कभी गुड़ खा कर गुजारा कर लेते, बहुत हुआ तो सत्तू पी लेते। एक वक्त ऐसा भी था, जब मेरे पिता के पिता, यानी मेरे दादाजी, जिन्हे मैं बाबा बोलता, को देखते लोग अपने घर का दरवाजा बंद कर लेते, उनके दिमाग के कोने में यह बैठा था कि कहीं अपने सात बेटे और दो बेटियों को पालने के लिए वह उनसे खाना न मांग लें। लेकिन यह भी सत्य है कि मेरे बाबा ने कभी भी, किसी के दरवाजे पर हाथ नहीं फैलाया था। उन्होंने और मेरी आजी (दादी) ने अपनी जिम्मेदारियों को खूब निभाया और अपनी संतानों को इस लायक बनाया कि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। देखते ही देखते समय का चक्र ऐसा घूमा कि अपनी मेहनत, लगन और जूनून की बदौलत, एक साधारण से टाइपिस्ट की नौकरी से अपने करियर की शुरुआत करने वाले मेरे पिता, पत्रकारिता के शिखर पर पहुंचे।

पापा मेरे दिन और रात हो गये

पापा मेरे लिए हीरो थे और सदा हीरो रहेंगे। मैं अपने पिता से प्रेम तो करता था, लेकिन क्या पता था कि एक वक्त ऐसा आयेगा, जब मेरे पिता मेरे लिए मेरे दिन और रात हो जायेंगे। मेरा रोम-रोम पिता के लिए समर्पित हो जायेगा। वात्सल्य सिर्फ माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के लिए ही नहीं होता, वात्सल्य एक बेटे का उसके पिता के लिये भी होता है, यह अधिकार मैं इन 10 महीनों में हासिल कर पाया। जब अपने पिता को मैं अपने तीन साल के बेटे रुद्रव के जैसे नहलाता, उनके आखिरी समय में उनके डायपर बदलता, उन्हें तैयार करता, उनके लिए नये-नये कपड़े खरीदता, उनके बालों को हाथों से सेट करता। उनकी दाढ़ी को ट्रिम करता, उन्हें टिप-टॉप कर देता। जब पापा ना खाने की जिद करते, तो अपने हाथों से उन्हें खिलाता। उनके लिए उनके स्वास्थ्य के अनुसार डिश बनाता और बनवाता। उन्हें उठाता-बैठाता, वाक कराता, उनकी मसाज करता। मेरे पिता में मुझे बेटा रुद्रव दिखने लगा था। तीन साल का बेटा रुद्रव और सत्तर साल के मेरे पिता। मेरे लिए अब दोनों समान थे। जब पापा खान-पान में ढिलाई बरतने की कोशिश करते, तो मैं कभी-कभी गुस्सा भी करता, पापा-मम्मी को बोलते, देखो कैसे बोल रहा है, मम्मी बोलती करता भी तो वही है। पापा भी मेरी हर बात को सुनते। मैं अपने पिता की ऊर्जा बन चुका था।

जिसे कभी सुई तक नहीं लगी थी, उसकी नसों को छेदा जा रहा था

पिता का बीमार पड़ना मेरे लिए अत्यंत पीड़ा का विषय था, क्योंकि जब से मैंने होश संभाला, मैंने कभी भी अपने पिता को बीमार नहीं पाया। हमेशा उन्हें फिट ही पाया। मैंने कभी नहीं देखा था कि उन्हें एक सुई भी लगी हो, या उन्होंने कभी कोई टैबलेट भी खाया हो। हां बस एक बार उनका गॉल ब्लैडर का ऑपरेशन हुआ था। उसी वक्त उन्होंने अस्पताल का मुंह देखा था। दिल्ली का गंगा राम अस्पताल, वह भी दो दिनों में डिस्चार्ज हो गये थे। लेकिन साल 2024 के अक्टूबर महीने में जब पापा को फोर्थ स्टेज लंग कैंसर डिटेक्ट हुआ, ऐसा लगा मानों हमारे पैरों के नीचे से किसी ने जमीन अचानक से सरका दी हो। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि पापा को कैंसर भी हो सकता है। जो व्यक्ति रोजाना दस-दस किलोमीटर वाक करता हो, सादा खाता हो, सादा जीवन जीता हो, उसे कैंसर घेरेगा, भरोसा नहीं हुआ। हां शुरुआती दिनों में पापा सिगरेट पिया करते थे, लेकिन वह भी 15 साल पहले छोड़ चुके थे। जिस दिन पापा को पता चला कि उन्हें फोर्थ स्टेज लंग कैंसर है, तो डॉक्टर से उन्होंने पहला सवाल यही पूछा कि लाइफ है या नहीं। डॉक्टर शॉक्ड था कि कोई डायरेक्ट पूछ रहा है कि मैं रहूंगा या नहीं। पापा ने कहा कि बताइये, मेरे लिए जानना जरूरी है। तभी इलाज कराऊंगा, नहीं तो क्या फायदा। मैं बस अपने पिता की आंखों में झांक रहा था। उनकी आंखों में डर बिल्कुल भी नहीं था। थी तो अपने दो बेटों के लिए चिंता कि मेरे बाद मेरे बच्चों का क्या होगा। जैसा हर पिता अपने बच्चों के लिए करता है। मैं यह इसलिए समझ पा रहा था, क्योंकि पापा ने कैंसर डिटेक्ट होते सबसे पहले मुझसे कहा था कि सब संभाल लेना। तुम बड़े हो। फर्क मत करना। मैंने उनसे कहा था पापा आप यह क्या कह रहे हैं। कुछ नहीं हुआ है आपको। कैंसर अब लाइलाज बीमारी नहीं है। आप आसानी से ठीक हो जायेंगे। आप खुद से खुद को ठीक कर लेंगे। आपका विल पावर बहुत स्ट्रांग है। डॉक्टर को अपना काम करने दीजिये, बाकी आप पॉजिटिव रहिये। आप इसे आसानी से हरा दीजियेगा।

आजाद सिपाही विशेष

यह तस्वीर 27 फरवरी 2025 की है, जब मैं पापा की जीवनी उन्हीं की जुबानी (पातेपुर गांव में) शूट कर रहा था।

समय के साथ-साथ पापा के प्रति मेरा प्रेम प्रगाढ़ होता चला गया

खैर इलाज शुरू हुआ और समय बीतता चला गया, समय के साथ-साथ पापा के प्रति मेरा प्रेम प्रगाढ़ होता चला गया। मां को पापा के कैंसर होने की जानकारी नहीं दी गयी थी। लेकिन समय के साथ-साथ मैंने उनको भी तैयार किया। तैयार करना इसलिए भी जरूरी था कि कहीं कोई अनहोनी होती, तो मां बर्दाश्त नहीं कर पाती। देखते ही देखते एक कीमो से चार कीमो तक का सफर तय हुआ। जिस व्यक्ति को मेरे होश में कभी इंजेक्शन तक नहीं लगा था, उसकी नसों को अब छेदा जा रहा था। हर 15 दिन में होने वाला ब्लड टेस्ट भी अब हफ्ते में तब्दील हो रहा था। 11 हीमोग्लोबिन से 5.5 हीमोग्लोबिन पर पापा आ गये। डिस्चार्ज समरी या ओपीडी नोट्स में कीमो टोलेरेटेड वेल से सपोर्टिव केयर लिखा जाने लगा। पापा कमजोर होने लगे थे। 80 किलो से 57 पर आ चुके थे। लेकिन चार कीमो के बाद भी पापा ने व्हील चेयर नहीं पकड़ा। इलाज के दौरान अस्पताल में ऐसे कई पल हमने साथ बिताये, जब पिता की आंखों में आंसू छलकते देखा और मैं अपने आंसू अंदर दबाकर उनकी आंसुओं को पोछता। पापा बोलते बेटा इतना पैसा इलाज में लग रहा है, क्या छोड़कर तुम लोगों के लिए जाऊंगा। मैं कहता पापा सब आपका ही तो है। आप टेंशन क्यों ले रहे हैं। हम दोनों भाई सक्षम हैं। इलाज के क्रम में मैं जब पापा के साथ दिल्ली रहता, छोटा भाई राहुल ऑफिस और घर का मोर्चा संभालता। पापा को अपने जीवन पर किताब लिखनी थी। लेकिन काम में व्यस्तता के कारण लिख नहीं पाये। लेकिन यह मेरे दिमाग में थी। चार कीमो के बाद, पापा बोले गांव जाने की इच्छा हो रही है, जा पाऊंगा? मैं उन्हें गांव भी लेकर गया। उन्होंने गांव में बुढ़वा महादेव मंदिर का निर्माण करवाया है। उन्होंने महाशिवरात्रि के दिन भंडारा का भी आयोजन करवाया था। ठीक यही वह समय था, जब मैंने पापा की बायोग्राफी शूट कर डाली। पापा को देर तक बैठे मैं दिक्कत होती, लेकिन जब भी उन्हें ठीक लगता मैं शूट कर लेता। मेरे मन के किसी कोने में यह घर कर रहा था कि अगर में पापा की कहानी नहीं शूट कर पाया, तो बहुत कुछ अधूरा रह जायेगा। मैंने पापा की कहानी उन्ही की जुबानी शूट कर ली। पापा की जीवनी कोई उपन्यास से कम नहीं। धीरे-धीरे वह भी सामने लाऊंगा।

रात-रात भर पापा के पैरों के पास सो जाता

इलाज के क्रम में पापा के कुल पांच कीमो हुए, सात इम्युनोथेरपी और रेडिएशन के कुल दस सेशन हुए, लेकिन मजाल है कि पापा ने कभी भी व्हील चेयर पकड़ी हो। वह हमेशा वाक करके गये और वाक करके आये। एक चीज जो दोनों को हौसला दिये हुए थी, वह थी पॉजिटिव माइंडसेट। मुझे पापा और ईश्वर पर पूरा भरोसा था कि पापा बिलकुल ठीक हो जायेंगे। पापा मुझे छोड़ कर नहीं जायेंगे। समय के साथ-साथ मैं खुद को भूल चुका था। दिन और रात, मेरे लिए सब सामान्य हो चुके थे। मेरे जीवन का हर एक क्षण पिता को समर्पित हो चूका था। ऐसी कई रातें भी आयीं, जब इलाज के लिए हफ्तों अस्पताल के आसपास रुकना पड़ता। ऐसा समय भी आया, जब मैं कई रात लगातार सोया नहीं, फिर भी पता नहीं कहां से ऊर्जा मिलती। रात-रात भर जब पापा का पैर दबाता, खांसते तो पीठ सहलाता और जब पापा सोते, तो उनकी नाक बजती, यही नाक का बजना मुझे सुकून देती कि पापा सो रहे हैं, मैं उनके पैरों के पास सो जाता। हां जब इलाज के बाद जब रांची आता तो मम्मी एक्टिव हो जाती। खाना का डिपार्टमेंट मेरी मम्मी और मेरी पत्नी संभाल लेती। लेकिन पापा के लिए जो अलग-अलग तरीकों का जूस और सूप होता, वह मैं ही बनता। उनके लिए कुछ अलग सी रेसेपी तैयार कर राखी थी। छोटा भाई राहुल आजाद सिपाही का एक मोर्चा संभाले हुए था। मैं एडिटोरियल देखता। मैं अगर थोड़ी देर के लिये भी इधर-उधर होता, पापा परेशान होने लगते। मुझे ढूंढने लगते। मेरी मां को बोलते बेटा कहां है। मेरे छोटे भाई राहुल को बोलते, भैया कहां है।

यह तस्वीर 14 जनवरी 2025, तीसरे कीमो के बाद की है, जब पापा को मैंने मोटीवेट करने के लिए पॉडकास्ट शुरू किया था।

पापा के कमरे मैं चुपके से जाता, नाक बजती तो आ जाता

ऐसी कई रातें आयीं जब पापा दर्द में कराह रहे होते, फीवर भी आता। कीमो का साइड इफेक्ट असहनीय होता है। रात को सोता तो डर लगा रहता। कई बार पापा और मम्मी को देखने चुपके से उनके कमरे मैं चला जाता। नाक बजने की आवाज आती मन प्रसन्न हो जाता। हमारे लिए अब हर सुबह नयी होती चली गयी। हर सुबह पापा का मूड नया होता। एक दिन बिना दर्द के बीत जाए, तो उस पल को हम जी लेते। खुश हो लेते। मुस्कुरा लेते। यह सिलसिला दस महीनों तक चला। इलाज के दौरान जब बाहर जाता तो मैं पिता के लिए वर्ल्ड का बेस्ट शेफ बन चूका था। उनकी पसंदीदा दल पिठ्ठी बनाता। सत्तू भरी मकुनी भी बनाता। मैं हर वो डिश बनाना सीख चूका था, जो पिता को पसंद थी। मैंने उनके लिये एक स्पेशल डाइट प्लान बनाया हुआ था। इसका जिक्र आगे करूंगा।

मैं अपने पिता के साथ वो पल बिता पाया, जब पापा को मेरी सबसे ज्यादा जरूरत थी

मेरे पिता भले बीमार थे, उसकी पीड़ा तो मुझे थी, लेकिन दिल के कोने में एक आनंद भी था, जो कह रहा था कि मैं अपने पिता के साथ वो पल बिता पाया, जब मेरे पिता को मेरी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मैं बिना ब्लड टेस्ट के बता देता कि मेरे पिता के शरीर में कितना खून तैर रहा है। उनकी हर एक हरकतों से मैं अब वाकिफ हो चला था। जीवन में मैंने अपना पहला खून पिता को ही दिया और आखिरी जूस पिता ने जो पिया या निवाला जो लिया, वह भी मेरे हाथों से ही लिया। मैं अपने पिता के लिए कितना खरा उतर पाया या नहीं, यह तो मुझे नहीं पता, लेकिन पितृ प्रेम और सेवा की तृप्ति क्या होती है, उसकी पहचान मुझे हो चली थी। उस अमृत को मैंने चख लिया था, सच कहूं तो मैं अपने पिता की सेवा कर तर गया। मेरा जीवन सफल हो गया। आज मेरे पिता मेरे साथ नहीं हैं, लेकिन जब-जब मेरे पिता पर पीड़ा, दर्द और तकलीफ ने हावी होने की कोशिश की, मैं उनका हाथ पकड़कर उनकी आंखों के सामने मौजूद रहा। उनके सर को सहलाता, उनके हाथ-पांव दबाता, उनके लिए हर वो उपाय करता जो मेरे लिए मुमकिन था।

बस ईश्वर यहीं जीत जाते हैं और इंसान यहीं पिछड़ जाता है

जंगल-जंगल जड़ी ढूंढने के लिए भी भटका, दर्जनों पेड़ों के पत्तों का सहारा भी लेता, दिन-रात रिसर्च करता। कैंसर से जुड़ी कई केस स्टडीज को खंगालता। रात-रात भर सोशल मीडिया का हर एक प्लेटफार्म छान मारता। जहां भी कोई गुंजाइश दिखती उसके पीछे भागता। एक तरफ डॉक्टर तो अपना इलाज कर ही रहे थे, लेकिन मैं भी एक तरफ से मोर्चा संभाल डटा रहा, क्योंकि मुझे पता था कि कैंसर ट्रीटमेंट का सबसे बड़ा साइड इफेक्ट उसका ट्रीटमेंट ही है। लेकिन मेरे सामने कोई चारा भी तो नहीं था। ट्रीटमेंट भी करवाना था और उसके साइड इफेक्ट से पापा को भी बचाना था। डॉक्टर तो अपना 100 परसेंट दे ही रहे थे, लेकिन मैं कहां पीछे हटने वाला था। जब मेरे पिता मुझे छोड़ कर चले गये और मैं कुछ भी नहीं कर पाया, तब मुझे यही लगा कि जब लक्ष्मण जी मूर्छित पड़े थे, तब बजरंग बली उनके लिए संजीवनी बूटी से लैस पहाड़ उठा लाये। लेकिन मैं अपने पिता के लिए रोज पहाड़ तो ले आता, लेकिन वह बूटी कौन सी थी, जो उनके लिए संजीवनी का काम करती, उसकी पहचान नहीं कर पाया। बस ईश्वर यहीं जीत जाते हैं और इंसान यहीं पिछड़ जाता है।

एक पिता के लिए उसका सबे बड़ा सहारा उसकी संतान ही होती है

एक पिता के लिए उसका सबसे बड़ा सहारा उसकी संतान ही होती है। पिता का व्यक्तित्व चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो, समाज में उसकी पद-प्रतिष्ठा, मान सम्मान चाहे कितनी भी उंची क्यों न हो, पिता मानसिक रूप से कितना भी मजबूत क्यों न हो, लेकिन उसकी असली उर्जा उसके संतान में ही छिपी रहती है। पिता जब तकलीफ में भी होता है, तब भी वह अपनी संतान को अहसास तक नहीं होने देता कि वह कितना कष्ट में है। लेकिन पिता की आंखें सब कुछ कह देती हैं। दर्द में वह अपनी संतान को ढूंढता है। उसके पास रहना चाहता है। पिता चाहता है कि उसकी संतान उसके सिर पर हाथ फेरे। उसका हाथ पकड़ उसे सहलाये। उसको बोले पापा आप ठीक हैं न, कोई दिक्कत तो नहीं। पिता बस इतना ही सुनना चाहता है। उसका रोम-रोम इन शब्दों को सुनने मात्र से ही अपनी संतान को आशीर्वाद देने लगता है। मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पिता को इतना प्यार करता था कि मेरे पिता मेरे दिन और रात हो गये। यह कहानी है एक पिता और पुत्र के बांडिंग की। यह कहानी है उस दस महीनों की जब मेरा एक-एक सेकंड पापा का हो गया। यह कहानी है पिता और पुत्र के वात्सल्य की, उन आंसुओं की, जो मैं कभी दिखा नहीं पाया, लेकिन पता है जिस दिन फटूंगा, बादल जरूर फटेगा। मैंने अपने पिता को खो तो दिया, लेकिन मैंने उस अमृत को प्राप्त लिया, जो पिता के खोने का अहसास नहीं होने देती। क्योंकि मैं तृप्त हो चुका हूं, पिता की सेवा कर संतुष्ट हो चुका हूं। अभी पिता का आधा कार्य बचा है, उसमें व्यस्त हो चुका हूं।

इसी कहानी को साझा करते स्वर्गीय हरिनारायण सिंह के पुत्र और 'आजाद सिपाही' के संपादक राकेश सिंह।

(अगली कड़ी में पढ़ें : बेटा हफनी बढ़ रही है...)

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	24.3 °c	21.1 °c
सूर्यास्त (आज) :		18.14 बजे
सूर्योदय (कल) :		05.28 बजे

भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश पदाधिकारी, मोर्चा अध्यक्षों, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी एवं सेवा पखवाड़ा प्रदेश टोली की बैठक

सेवा ही संगठन भाजपा की प्रतिबद्धता : बाबूलाल मरांडी

■ भाजपा राजनीतिक और सामाजिक दोनों जिम्मेदारी निभाती है : डॉ रविंद्र राय ■ सेवा पखवाड़ा के कार्यक्रमों में जनभागीदारी बढ़ायें : कर्मवीर सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश कार्यालय में रविवार को प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी की अध्यक्षता में पार्टी द्वारा आगमी 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम हेतु प्रदेश पदाधिकारी, मोर्चा अध्यक्षों, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी एवं सेवा पखवाड़ा प्रदेश टोली की बैठक संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य देश के जन जन की सेवा। पार्टी का राजनीतिक लक्ष्य सत्ता सुख नहीं, बल्कि सत्ता के माध्यम से जनता की सेवा है। कहा कि पार्टी विभिन्न सांगठनिक कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के बीच जाकर सेवा का कार्य करती है। उसी के तहत आगामी 17 सितंबर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन से 2 अक्टूबर महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री की जयंती तक सेवा पखवाड़ा मनायेगी। कहा कि एक तरफ इंडी गठबंधन लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थाओं का गला घोंट रहा, वहीं भाजपा अपने सेवा कार्यक्रमों के माध्यम से जनभागीदारी बढ़ाते हुए लोकतंत्र को मजबूत कर रही है।

श्री मरांडी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कार्यकाल गांव, गरीब की सेवा से भरा पड़ा है। उन्होंने देश में उपलब्धियों का पहाड़ खड़ा किया है। कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय ने कहा कि देश और प्रदेश की जनता की आशा और आकांक्षा केवल भाजपा है। हमें कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के बीच बार बार जाना है। कहा कि भाजपा राजनीतिक के साथ सामाजिक जिम्मेदारियां भी भली भांति निभाती है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छता, पौधरोपण, रक्तदान,जल संरक्षण, स्वदेशी आंदोलन में जनभागीदारी लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि आगामी सेवा पखवाड़ा में सेवा के साथ दीनदयाल जयंती पर वैचारिक धारा को भी नयी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है।

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा करते हुए इसे धरातल पर उतारने की दिशा में आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा के तहत पदाधिकारियों के बीच कार्यों का वितरण किया गया है। प्रदेश स्तरीय 7 लोगों की टोली बनायी गयी, जिसमें प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा, मनोज कुमार सिंह, बालमुकुंद सहाय, विकास प्रीतम, भानु प्रताप शाही गणेश मिश्र, शामिल हैं। कहा कि सेवा पखवाड़ा के तहत रक्तदान शिविर, मैराथन दौड़, प्रदर्शनी, स्वास्थ्य शिविर, दिव्यांग जन केलिए यंत्र वितरण, सांसद खेलकूद प्रतियोगिता, स्वच्छता अभियान, पौधरोपण जैसे कार्यक्रम आयोजित होंगे। कहा कि वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा देते हुए आगामी 2 अक्टूबर गांधी और लालबहादुर शास्त्री जयंती पर खादी और हस्तकरघा निर्मित वस्त्रों की खरीदारी को बढ़ावा देते हुए पार्टी के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों के साथ आम जनता से खादी वस्त्रों की खरीदारी का आग्रह किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती 25 सितंबर को बूथ स्तर पर मनायी जायेगी। उन्होंने कहा कि सांसद खेल प्रतियोगिता सभी संसदीय क्षेत्र में आयोजित किये जायेंगे, जिसका पंजीकरण आगामी 29 अगस्त से प्रारंभ होगा। कहा कि यह खेल प्रतियोगिता ग्रामीण स्तर, प्रखंड स्तरीय, विधानसभा स्तरीय और संसदीय क्षेत्र स्तरीय आयोजित होगी। इसमें फुटबॉल, वॉलीबॉल, हॉकी, बैडमिंटन, बास्केट बॉल, खोखो, हॉकी, एथेलेटिक्स जैसे खेलों के ग्रामीण पारंपरिक खेल कबड्डी आदि की प्रतियोगिता आयोजित होगी। संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष बालमुकुंद सहाय ने और धन्यवाद ज्ञापन महिला मोर्चा अध्यक्ष आरती सिंह ने किया। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष नीलकंठ सिंह मुंडा, राकेश प्रसाद ,सांसद कालीचरण सिंह,भानु प्रताप शाही, प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा,प्रदेश मंत्री गणेश मिश्र, सीमा पासवान, दुर्गा मरांडी, सरोज सिंह, नंदजी प्रसाद, हेमंत दास, शिवपूजन पाठक, राहुल अवस्थी, योगेंद्र प्रताप सिंह, शशांक राज, पवन साहू, अनवर हयात, राकेश भास्कर, सत्यनारायण सिंह, कुमार अमित, सुबोध सिंह गुड्डु वरुण साहू, शैलेन्द्र सिंह सहित जिला अध्यक्ष,जिला प्रभारी शामिल हुए।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष समय लाभप्रद रहेगा। प्रियजनों का आवागमन। सुख-संपदा, लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

वृष सुख-सुविधा के साधन बनेंगे। आर्थिक लाभ। व्यापारिक यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी।

मिथुन धन लाभ। मान-यश-प्रतिष्ठा-उपहार-पुरस्कार की प्राप्ति। विरोधियों पर विजय मिलेगी।

कर्क माता पिता का सहयोग। वांछित सहयोग मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ संदेश प्राप्त होगा।

सिंह पारिवारिक वातावरण सुखमय होगा। परीक्षा-प्रतियोगिता में सफलता। मनोकामना पूरी होगी।

कन्या बिगड़ा काम बनेगा। व्यवसाय में आशातीत लाभ। सपरिवार भ्रमण। वाहन-सुख।

तुला नौकरी में उल्लास। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। भ्रमण-मनोरंजन।

वृश्चिक पारिवारिक दायित्व निर्वहन में खर्च अधिक करना पड़ेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होगी।

धनु आर्थिक लाभ। सम्मान-स्वाभिमान की रक्षा। मित्र-कुटुंबियों का सहयोग।

मकर बृहद योजना साकार करने में साथ मिलेगा। आजीविका संबंधी चिंता दूर होगी। सुख में वृद्धि।

कुंभ विरोधियों पर विजय। संपर्क-प्रभाव का लाभ मिलेगा। बकाये रकम की प्राप्ति होगी।

मीन बिना-विचारें कोई काम न करें। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति। परिश्रम का फल मिलेगा।

स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी पंडित राजकुमार शुक्ल को दी गयी श्रद्धांजलि

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा एवं आदित्य साहू को पंडित राजकुमार शुक्ल फाउंडेशन की ओर से अध्यक्ष अजय राय ने पंडित राजकुमार शुक्ल के जीवन से संबंधित पुस्तक भेंट की। इस अवसर पर फाउंडेशन द्वारा किये जा रहे कार्यों से भी अतिथियों को अवगत कराया गया।

इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कहा कि चंपारण आंदोलन और महात्मा गांधी को पहली बार बिहार में लाने वाले प्रथम व्यक्ति पंडित राजकुमार शुक्ल ही थे। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमूल्य है और उन्हें वह सम्मान मिलना चाहिए जिसके वे सच्चे हकदार हैं।

राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा ने भी पंडित शुक्ल के जीवन और कार्यों को नमन करते हुए कहा कि उनके त्याग और संघर्ष से नई पीढ़ी को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

आदित्य साहू ने कहा कि पंडित राजकुमार शुक्ल के योगदान को जन-जन तक पहुंचाया जायेगा तथा उनके विचारों को जीवंत बनाये रखने के कार्य को निरंतर गति दी जायेगी।

अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि फाउंडेशन का उद्देश्य पंडित राजकुमार शुक्ल के जीवन एवं उनके संघर्षों को देश की आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना है, ताकि स्वतंत्रता संग्राम के इन गुमनाम नायकों को इतिहास में उचित स्थान मिल सके।

श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश पर्व धूमधाम से मनाया गया

गुर राम दास राखो शरनाई...शबद गायन से संगत हुई निहाल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। गुरुद्वारा श्री गुरु नानक सत्संग सभा द्वारा कृष्णा नगर कॉलोनी स्थित गुरुद्वारा साहिब में रविवार को धन-धन श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश पर्व मनाया गया। इस उपलक्ष में सजाये गये विशेष दीवान की शुरुआत सुबह 7:40 बजे हजूरी रागी जत्था भाई महिपाल सिंह द्वारा आसा दी वार कीर्तन से हुई।

गुरुद्वारा के हेड ग्रंथी ज्ञानी जिवेंदर सिंह ने साथ संगत से गुरमत विचार साझा करते हुए गुरु ग्रंथ साहिबजी के पहले प्रकाश के बारे विस्तार से प्रकाश डाला और साध संगत को बताया कि श्री गुरुनानक देवजी से लेकर गुरु राम दासजी की वाणी श्री पोथी साहिब में लिखी जाती थी और वो पोथी गोइंदवाल साहिब (गुरु अर्जुन देवजी का ननिहाल) के बाबा मोहन सिंह के पास थी। गुरु अर्जुन देवजी इस पोथी साहिब को अमृतसर ले आये और चंवर से इसकी सेवा करते रहे। सन 1602 में गुरु अर्जुन देवजी ने रामसर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी की रचना शुरू की। इसमें गुरु अर्जुन देवजी बोलते थे और भाई गुरदास जी लिखते थे। सन 1604 में श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश हुआ और पहला प्रकाश बाबा बुड्ढाजी ने किया। उस समय श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी में 974 अंग (पृष्ठ) थे और उसमें पांच गुरुओं की वाणी थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला हुक्मनामा था 'संता के कारज आप खलोंया हर कम करावन आया राम'। फिर आगे चलकर श्री गुरु गोविंद सिंहजी ने दमदमा साहिब में अन्य पांच गुरुओं की वाणी को संकलित कर इसका संपादन किया। इस क्रम में उन्होंने वाणी का उच्चारण किया और भाई मनी सिंहजी ने उन वाणीयों को लिखने का काम किया और अंततः कुल 1430 अंग (पृष्ठ) का श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का स्वरूप तैयार हुआ। इसके संपादन में नौ महीने, नौ दिन और नौ घड़ियां लगीं।

इस दीवान में विशेष रूप से शिरकत करने पहुंच रहे सिख पंथ के प्रसिद्ध रागी जत्था भाई सुखप्रीत सिंह (लखनऊ वाले) ने सुबह 9 बजे से 10:45 बजे तक 'गुर राम दास राखो शरनाई... एवं संता के कारज आप खलोंया हर कम करावन आया राम... सो सतगुर प्यारा मेरे नाल है... एवं हम बैठे तुम देहो असीसां...' जैसे कई शबद कीर्तन कर साध संगत को निहाल किया। श्री आनंद साहिबजी के पाठ, अरदास, हुकुमनामा एवं कढ़ाह प्रसाद वितरण के साथ दीवान की समाप्ति सुबह 11 बजे हुई। इस मौके पर गुरुनानक सत्संग सभा द्वारा गुरु का अटूट लंगर चलाया गया। सत्संग सभा के प्रधान अर्जुन देव मिढ़ा एवं सचिव सुरेश मिढ़ा ने भाई सुखप्रीत सिंह एवं साथियों को गुरु घर का सारोपा देकर सम्मानित किया एवं प्रकाश पर्व में सहयोग के लिए विनोद मालाकार और गुड्डु साउंड को गुरु घर का सारोपा देकर नवाजा गया। कार्यक्रम का संचालन मनीष मिढ़ा ने किया।

झारखंड भाजपा ने की सूर्या हांसदा एनकाउंटर मामले की सीबीआइ जांच की मांग

- 11 जून 2025 को मिली थी खुली धमकी
- 12 जून को पुलिस ने साजिश के तहत दर्ज किया मुकदमा था
- माफिया गठजोड़ में पुलिस ने दिया घटना को अंजाम
- सूर्या हांसदा अपराधी नहीं, संवेदनशील सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता थे

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने राज्य सरकार पर बड़ा निशाना साधा। श्री मरांडी सूर्या हांसदा एनकाउंटर मामले की जांच द्वारा प्राप्त रिपोर्ट के बाद रविवार को प्रदेश कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। श्री मरांडी ने कहा कि उनके द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा की अध्यक्षता में गठित जांच समिति जिसमें पूर्व नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, प्रदेश उपाध्यक्ष भानु प्रताप शाही, पूर्व मंत्री रणधीर सिंह, प्रदेश प्रवक्ता अमित मंडल, पूर्व सांसद सुनील सोरेन, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री अनीता सोरेन शामिल थे, द्वारा हस्ताक्षरित जांच रिपोर्ट से स्पष्ट हो रहा है कि गोड्डा जिला के ललमटिया के सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता सूर्या हांसदा की साजिश के तहत पुलिस द्वारा हत्या की गयी है।

उन्होंने कहा कि इस आशंका की पुष्टि 11 जून 2025 को सोशल मीडिया पर जारी एक वायरल वीडियो से होता है, जिसमें गोड्डा में आयोजित एक सभा में एक राजनीतिक व्यक्ति, जो हाल में ही अवैध उत्खनन एवं अन्य संगीन मामलों में इडी कोर्ट से सशर्त जमानत पर बाहर आये हैं, ने कहा है कि जो सरकार की बात नहीं सुनेगा वह पुलिस की गोली से मारा जायेगा। और ठीक दूसरे दिन 12 जून को एक मुकदमे में सूर्या हांसदा का नाम जोड़ दिया जाता है। जांच समिति ने परिवार के सदस्यों से बात कर इस बयान को सूर्या हांसदा की हत्या से जुड़ा हुआ देखा। क्योंकि ठीक दो महीने बाद सूर्या हांसदा को पुलिस द्वारा गोली मार दी गयी। कहा कि झारखंड पुलिस स्व. सूर्या हांसदा को अपराधी बता रही, जबकि माननीय न्यायालय ने उन्हें किसी मुकदमे में अपराधी नहीं पाया। पुलिस ने जिन 24 मुकदमों का जिक्र किया है, उसमें से 14 में वे बाइज्जत बरी हो चुके थे। 5 मुकदमे में जमानत पर थे और 5 में जमानत विचाराधीन था। कहा कि 27 मई 2025 की जिस घटना को दिखा कर पुलिस ने एफआइआर दर्ज किया, उस दिन वे बेटे का जन्मदिन मना रहे थे। जिस कंपनी की गाड़ी जलाने बकी बात कही गयी, उस कंपनी के किसी अधिकारी कर्मचारी ने पुलिस को सूचना नहीं दी थी। कहा कि संथाल परगना पूरा क्षेत्र अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ, अवैध खनन, धर्मांतरण, आदिवासी बहु बेटियों की इज्जत से खिलवाड़, जमीन पर अवैध कब्जा का केंद्र बन गया है। स्व सूर्या हांसदा इन अवैध धंधों का विरोध करने के कारण आंखों की किरकिरी बने हुए थे। कहा कि सूर्या हांसदा किसी मुकदमे में वारंटी नहीं थे, इसलिए फरार नहीं थे। एक सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में क्षेत्र में सक्रिय थे। कहा कि पुलिस का इनकाउंटर से संबंधित बयान पूरी तरह से फर्जी प्रतीत होता है, क्योंकि सूर्या के शरीर पर तीन गोली के निशान थे, जिसमें कोई निशान पीठ पर नहीं पाया गया। बल्कि पेट में गोली लगी है। फिर कोई भागने वाले को पेट में गोली कैसे लग सकती है। कहा कि भारतीय न्याय संहिता एवं पुलिस रूल का गिरफ्तारी के वक्त पालन नहीं किया गया। गिरफ्तारी के समय किसी को साक्षी नहीं बनाया गया। कोई मेडिकल जांच नहीं करायी गयी। उन्होंने कहा कि 400 अनाथ बच्चों की पढ़ाई की चिंता करने वाले सूर्या हांसदा को अपराधी बता कर हत्या करवाती है। उन्होंने कहा कि स्व सूर्या हांसदा का परिवार ही नहीं, बल्कि जनता इस हत्या की सीबीआइ जांच चाहती है। इसलिए राज्य सरकार अविलंब सीबीआइ जांच की अनुशंसा करे। प्रेस वार्ता में प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, सह मीडिया प्रभारी योगेंद्र प्रताप सिंह भी उपस्थित थे।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी संदेहास्पद : भानु प्रताप शाही

जांच समिति के सदस्य एवं प्रदेश उपाध्यक्ष भानु प्रताप शाही ने प्रेस वार्ता में कहा कि बातचीत से यह स्पष्ट है कि पुलिस के टॉर्चर से स्व. सूर्या हांसदा की मौत हुई है। बाद में उन्हें गोली मार कर इनकाउंटर दिखाया जा रहा। घटनास्थल से मीडिया को दूर रखा गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर पर जो निशान पाये गये, उसकी स्पष्टता नहीं है। इसलिए फिर से पोस्टमार्टम कराकर रिपोर्ट तैयार किया जाये और पूरे घटना की सीबीआइ जांच हो।

विकास कार्यों का विरोध राज्यहित में नहीं : लाल किशोरनाथ शाहदेव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख्य प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने रिम्स-2 निर्माण को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के विरोध प्रदर्शन पर कटाक्ष किया है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के दबाव में चंपाई सोरेन को उनके आचरण के विरुद्ध रिम्स के निर्माण के विरोध के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी और सरकार, राज्य में स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर करने के लिए प्रयासरत हैं। सिर्फ रिम्स काफी नहीं, इसीलिए रिम्स टू का निर्माण होना है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी जिस तरीके से विकास कार्यों का विरोध कर रही है, वह राज्य के हित में कहीं से भी उचित नहीं। कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने कहा कि स्थानीय लोगों के हितों की रक्षा राज्य सरकार की जिम्मेवारी है और उनके हितों की रक्षा की अनदेखी नहीं होने दी जायेगी। उन्होंने कहा कि अभी एक रिम्स में है, उस पर पूरे राज्य राज्य का दबाव है। अगर रिम्स टू का अत्याधुनिक तकनीक से निर्माण होता है, तो यह पूरे राज्य के मरीजों के लिए यह एक सुखद होगा, लेकिन जिस तरह से बीजेपी विकास कार्यों का विरोध कर रही है। बीजेपी राजनीति कर रही है। वह कहीं से भी न्यायोचित नहीं है।

कांग्रेस प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने यह भी भरोसा दिलाया कि कांग्रेस पार्टी और राज्य सरकार नगड़ी के ग्रामीणों के हितों की भी अनदेखी किसी भी परिस्थिति में नहीं होने देगी। सभी राज्य सरकार पर भरोसा कर सकते हैं कि उनके हितों की रक्षा राज्य की सरकार अवश्य करेगी। विरोध प्रदर्शन के स्वरूप को देखने से भी साफ हो जाता है कि इसमें स्थानीय लोगों की कोई खास सहभागिता नहीं थी, सिर्फ भाजपा के इशारे पर रिम्स टू के निर्माण का विरोध किया जा रहा है।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

सड़कों पर जल जमाव से लोग परेशान

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड में कई दिनों से प्रतिदिन हो रहे बारिश से नदी नाला उफन रही है। सड़क पर जल जमाव से लोगों को परेशानी हो रही है। इधर चार दिनों से लगातार बारिश से लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। लोग घरों से नहीं निकल पा रहे हैं। लोगों की जिंदगी ठहर गयी है, लोग घरों में कैद होने को विवश हो गये। जिससे बाजार में रौनक नहीं है, लोग बारिश से दिहाड़ी मजदूरी भी नहीं कर पा रहे हैं। बारिश के कारण मजदूरी करने भी नहीं मिल रहा है। उनके समक्ष आर्थिक तंगी से झेलना पड़ रहा है। लोग यात्रा पर भी नहीं निकल पा रहे हैं जिससे सवारी गाड़ी, ऑटो और टोटो चालक झक मार रहे हैं। बारिश से किसान भी परेशान हैं, धान की फसल पानी में डूब रही है। जिससे धान में खर पतवार लगने का किसानों को डर सता रहा है। खेत जल मग्न होने से सब्जी के फसल पर भी असर साफ दिख रहा है।

लगातार बारिश से फसलों को पहुंच रहा नुकसान

मरकच्चो (आजाद सिपाही)। बीते कुछ दिनों से हो रही लगातार झमाझम बारिश किसानों के लिए मुसीबत बन गयी है। खेतों में जल जमा हो जाने से भदई फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है। धान, मक्का, झिंगी, नेनुआ, बोड़ा, उरद समेत अन्य दलहन जैसी फसलों के खेतों में जल जमाव हो जाने से पौधों के सड़ने जैसी स्थिति बन गयी है। किसानों का कहना है कि जिस उम्मीद से उन्होंने मेहनत कर फसल बोई थी वह अब डूबती नजर आ रही है। खेतों में कई जगहों पर खेत तालाब जैसे दिख रहे हैं। जिससे फसल के नष्ट होने का खतरा और बढ़ गया है। स्थानीय कृषकों ने बताया कि बारिश सामान्य होती तो फसल के लिए वरदान साबित होती लेकिन लगातार हो रही भारी वर्षा से खेतों में पानी की निकासी नहीं हो पा रही है। इससे किसान परेशान हैं। किसानों ने मांग की है कि किसानों की फसल क्षति का आकलन कर उन्हें मुआवजा और राहत दी जाये।

रक्तदान शिविर का किया गया आयोजन

कोडरमा (आजाद सिपाही)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान ने रविवार को सदर अस्पताल कोडरमा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के लोगों ने दीप प्रज्वलन कर किया। रक्तदान का उद्देश्य रक्त की कमी को पूरा करना था ताकि जरूरतमंदों को जीवन रक्षक रक्त मिलता रहे। उक्त आयोजन शांति दीदी का मार्गदर्शन में कार्यक्रम किया गया।जिसमें दर्जनों लोगों ने ब्लड बैंक सदर अस्पताल कोडरमा में पहुंचकर बहुत ही उमंग उत्साह के साथ रक्तदान किया किया। यह अभियान 22 से 25 अगस्त 2025 तक पूरे भारत वर्ष में किया जा रहा है, जिसमें लाखों यूनिट रक्त देकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस शिविर में रक्तदाताओं के लिए स्वास्थ्य जांच, पंजीकरण और प्रोत्साहन की व्यवस्था की गयी। रक्त दान शिविर में डॉ आर विश्वास, डॉ आई सी दास, डॉ पवन कुमार, समाजसेवी उमेश वर्मा, शिक्षक विनोद भाई, बीके संजय भाई, रंजीत, अरुण, भोले शंकर, मनीष, सुजल, सौरव, बीके पूर्णिमा, बीके अनीता, आरती, ललिता, बेदामी, शांति, शारदा, कंचन, उमा आदि का सहयोग रहा।

घर से नकद और सामान की हुई चोरी

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बड़कागांव थाना क्षेत्र के एक और गांव विश्रामपुर में घर का ताला तोड़कर 95 हजार नकद और 4 लाख रुपये का सामान और जेवरात चोरी होने का मामला प्रकाश में आया है। इस संबंध में भुक्तभोगी विश्रामपुर निवासी चिंतामणि महतो, पिता तिलक महतो ने थाना में आवेदन देते हुए कहा है कि हम सभी परिवार तीर्थ दर्शन के लिए घर से बाहर गये थे। जब सब परिवार घर वापस आया तो देखा कि मेरे घर का दोनों तरफ का दरवाजा बंद है लेकिन अंदर अज्ञात चोरों द्वारा सभी रूम का ताला तोड़कर मेरा घर में रखा अलमीरा, पलंग, गोदरेज, तोड़कर गोदरेज में रखा हुआ 95 हजार रुपया नगद सोना, चांदी अन्य कीमती सामान लगभग चार लाख का संपत्ति चोरी कर लिया गया है और घर में रखा सभी सामान बिखेर दिया गया। आवेदन में चिंतानमनी महतो ने जांच पड़ताल करते हुए उजागर करने और कार्रवाई करने की मांग की है। एक दिन पूर्व चंदौल पंचायत के महुगाईखुर्द टोला मरदु-सोती गांव में वार्ड सदस्य कृष्ण कुमार रविदास के बंद घर में ताला तोड़कर लगभग 5 लाख परिसंपत्ति की चोरी हो गयी थी। इस संबंध में भाजपा मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो ने कहा कि क्षेत्र में लगातार घरों में चोरी की घटनाओं में बढ़ोतरी हो रही है। इसलिए पुलिस प्रशासन को इस पर कड़ी एक्शन लेते हुए चोरों का खुलासा होनी चाहिए और कार्रवाई भी होनी चाहिए।

एक हाथी ने पूरे क्षेत्र में मचाया तांडव

टाटीझरिया (आजाद सिपाही)। एक जंगली हाथी पिछले एक सप्ताह से टाटीझरिया के गोधीया गांव में उत्पात मचाने के बाद अमनारी करमाटांड शनिवार रात को पहुंच कर फसल समेत मुर्गी फार्म के सामाग्री को नष्ट किये हुए है। प्रतिदिन शाम ढलते ही वह जंगल से निकलकर किसी ना किसी गांव की ओर रूख करता है। हाथी गांव के जिस ओर से गुजरता है उधर के फसल नष्ट कर देता है साथ ही उस क्षेत्र के लोग रात भर जाग कर बिताते हैं। विधायक सह मुखिया प्रतिनिधि उपेंद्र कुमार पांडेय, उपमुखिया कौलेश्वर कुमार, वन समिति अध्यक्ष शशिकांत प्रसाद, अवधेश प्रसाद, कृष्णा प्रसाद, रोहित कुमार, देवगंगा, मुकेश कुमार ने वन विभाग को हाथी से मुक्ति दिलाने की मांग किया है और कहा है कि उनके बर्बाद किये गये फसल और चारदीवारी की छती पूर्ति की जाये। शनिवार रात को सबसे पहले विशेश्वर प्रसाद के मुर्गी फार्म के पास पहुंच कर धक्का देना प्रारंभ किया लेकिन दरवाजा नहीं खुला। वहां के बाद राजवंती देवी पति कपिल प्रसाद के मुर्गी फार्म में लगे जाली को फाड़कर अंदर प्रवेश किया और वहां रखे सामाग्री को तोडकर नष्ट कर दिया। समाचार लिखे जाने तक हाथी अमनारी-टाटीझरिया बीच जंगल में जमा हुआ है। फॉरेस्टर विद्याभूषण ने कहा कि हाथी तीन चार खेमे में बट गया है उसी में से एक खेमे से एक हाथी बिछड़ गया है टीम लगा हुआ है भगाने का प्रयास किया जा रहा है।

झामुमो कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार का पुतला फूंका

संविधान से छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं : संजीव बेदिया

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। केंद्र की भाजपा नेतृत्व वाली सरकार द्वारा संसद में पेश किये गये विवादित विधेयक के खिलाफ रविवार को झामुमो ने जिला परिषद चौक पर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार का पुतला दहन किया और नारे लगाये। झामुमो नेताओं ने कहा कि यह विधेयक भारतीय संविधान के उस मूल सिद्धांत के खिलाफ है, जिसमें स्पष्ट किया गया है कि जब तक दोष साबित न हो, तब तक कोई भी आरोपी निर्दोष माना जायेगा। केंद्रीय जांच एजेंसियों के जरिये राज्यों मे सत्ता हथियाने की साजिश है। कार्यक्रम का नेतृत्व झामुमो के केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य सह हजारीबाग जिला अध्यक्ष संजीव कुमार बेदिया कर रहे थे। पुतला दहन के उपरांत श्री बेदिया ने कहा की केंद्र सरकार संविधान से छेड़छाड़ कर रही है। भारतीय संविधान के मौलिक सिद्धांत के साथ छेड़छाड़ किया जा रहा है जो बर्दाश्त नहीं। केंद्र सरकार मनमानी पर उतर आई है। उसे कभी आम जन मानसा से मतलब नहीं रहता। यह विधेयक असंवैधानिक रूप से जनप्रतिनिधि को उसके दायित्वों से विमुख करते हुए जनता द्वारा दिए गए जनादेश का अपमान करना है। अगर जल्द केंद्र सरकार इस ध्यान नहीं देती तो बड़े आंदोलन का आगाज होगा। पुतला दहन में जिला सचिव नीलकंठ महतो, केंद्रीय सदस्य सुनील शर्मा, इजहार अंसारी, जिला उपाध्यक्ष रंजीत मेहता, दीपक राय, युवा मोर्चा अध्यक्ष गौरव पटेल, उपाध्यक्ष सतेंद्र कुमार, महिला मोर्चा अध्यक्ष सुनीता देवी, साजमा खातून, बुद्धिजीवी मोर्चा अध्यक्ष सदन मेहता, अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष सरफराज अहमद, बड़कागांव प्रखंड अध्यक्ष संजय सिंह, इचाक प्रखंड अध्यक्ष राजेश मेहता, सचिव बिक्की खत्री, अभिषेक मेहता, चौपारण प्रखंड अध्यक्ष उज्ज्वल सिंह, बीस सूत्री अध्यक्ष मनोहर राम, प्रयाग मेहता, दयानंद कुमार, प्रवक्ता कुणाल यादव, छत्रू प्रसाद, इफ्तिखार टिंकू समेत बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जिला कल्याण पदाधिकारी का निधन

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। थाना क्षेत्र के दूधीमाटी स्थित किराये के आवास में रह रहीं जिला कल्याण पदाधिकारी शीतल उषा किरण कांडील का रविवार को इलाज के दौरान रांची में निधन हो गया। मूलतः हजारीबाग निवासी कांडील किराये के मकान में शनिवार सुबह अचेत अवस्था में पायी गयी थी जिसके बाद उन्हें सदर अस्पताल ले जाया गया था। प्राथमिक उपचार के बाद ब्रेन हेमरेज की पुष्टि होने पर उन्हें बेहतर इलाज के लिए रांची स्थित मेडिका अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कल्याण पदाधिकारी के सरकारी वाहन चालक शंकर ने बताया कि रोज की तरह शनिवार सुबह करीब नौ बजे वह उन्हें कार्यालय ले जाने के लिए दूधीमाटी स्थित आवास पहुंचा था। वहां दरवाजा अंदर से बंद मिला और मोबाइल फोन पर भी कोई उत्तर नहीं मिला। काफी देर इंतजार के बाद शंकर ने मकान मालिक की मदद से दरवाजा तोड़ा और अंदर दाखिल हुआ। अंदर डीडब्ल्यूओ शीतल बेहोश अवस्था में जमीन पर गिरी पड़ी थीं। उन्हें तुरंत एंबुलेंस से सदर अस्पताल लाया गया, जहां सीटी स्कैन में ब्रेन में ब्लड क्लॉट की पुष्टि हुई। सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. रंजीत कुमार ने बताया कि ब्रेन हेमरेज के कारण उनकी मस्तिष्क की गतिविधि प्रभावित हुई। गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें तत्काल रांची रेफर कर दिया गया था। सूचना मिलते ही विभागीय कर्मी और अन्य अधिकारी अस्पताल पहुंचे। इस बीच पदाधिकारी के पति भी अस्पताल पहुंच गये और उन्हें रांची ले गये। बता दें कि शीतल उषा किरण कांडील ने इसी महीने 8 अगस्त को कोडरमा जिला में बतौर कल्याण पदाधिकारी कार्यभार ग्रहण किया था। दूधीमाटी में किराये के मकान में रहकर वह रोजाना सरकारी वाहन से कार्यालय आती थीं।

मूसलाधार बारिश ने छीना गरीब का घर

बरही(आजाद सिपाही)। बरही प्रखंड अंतर्गत मलकोको पंचायत के पडरिया निवासी कन्हैया रजक पिता स्व. भुनेश्वर रजक का कच्चा - खपरैल मकान बीती रात हुई मूसलाधार बारिश में अचानक ढह गया। आधी रात हुए इस हादसे से घर में अफरा-तफरी मच गयी। गनीमत रही कि कोई बड़ी अनहोनी नहीं हुई, लेकिन परिवार पूरी तरह बेघर हो गया है। जिसपर कांग्रेस युवा नेता प्रयाग प्रसाद ने बताया कि बेघर परिवार मजदूरी कर अपना पालन - पोषण करते हैं। काफी सालों से अपने परिवार संग कच्चे - खपरैल मकान रह रहे थे। मकान ढह जाने से उनका पूरा परिवार अब खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर है। जिसको लेकर उन्होंने प्रखंड प्रशासन से आवास उपलब्ध कराने की मांग की है, ताकि उन्हें पुनः छत मिल सके।

अंचल अधिकारी जय कुमार राम का निधन

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। पलामू जिला के पाकी अंचल में पदस्थापित अंचल अधिकारी जय कुमार राम का आकस्मिक निधन हो गया। वे पिछले कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे और इलाज के लिए चेन्नई में भर्ती थे। इलाज के दौरान ही दो दिन पूर्व उनकी स्थिति बिगड़ गयी और वहीं उनकी मौत हो गयी। रविवार को उनका पार्थिव शरीर हजारीबाग लाया गया, जहां उनके पैतृक गांव कटकमदाग में गमगीन माहौल में अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। रविवार को जब उनका पार्थिव शरीर गांव पहुंचा तो लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। अंतिम संस्कार में प्रशासनिक पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, स्थानीय मुखियाओं और सैकड़ों ग्रामीणों ने भाग लिया। इस दौरान सभी की आंखें नम थीं और हर कोई उन्हें याद कर श्रद्धांजलि दे रहा था। उनके आकस्मिक निधन पर क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और ग्रामीणों ने गहरी संवेदना व्यक्त की है। वही उन्होंने अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़ गये। पत्नी और एक पुत्र एक पुत्री के साथ पूरा परिवार है।

विधायक ने युवाओं को सड़क सुरक्षा की जानकारी दी

दुनिया के लिए आप गिनती है लेकिन घर के लिए पूरी दुनिया है आप, बाइक धीरे चलाएं : प्रदीप प्रसाद

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग सदर विधानसभा के विधायक प्रदीप प्रसाद ने रविवार को सड़क पर तेज रफ़्तार से बाइक चला रहे युवाओं को रोककर न सिर्फ. समझाया, बल्कि परिवारजनों से भी संवाद कर सड़क सुरक्षा की महत्ता बतायी।

विधायक प्रदीप प्रसाद ने युवाओं को संदेश देते हुए कहा आप सड़क पर भीड़ के लिए गिनती हैं, लेकिन अपने घर-परिवार के लिए पूरी दुनिया। तेज गति में बाइक चलाकर जीवन से खिलवाड़ न करें। धीरे चलाएं और सुरक्षित चलाएं। उन्होंने स्पष्ट किया कि तेज रफ़्तार से चलने वाली बाइक न सिर्फ. बाइकर्स के लिए बल्कि राहगीरों और अन्य वाहन चालकों के लिए भी खतरा है। इसको देखते हुए विधायक ने प्रशासन को निर्देश दिया कि ऐसे बाइकर्स पर नजर रखी जाये और आवश्यकतानुसार कार्रवाई की जाये। विधायक ने युवाओं से विशेष अपील की है ट्रैफिक नियमों का पालन करें। बाइक चलाते समय हेलमेट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करें। सड़क पर चलते समय राहगीरों और अन्य वाहनों का भी ध्यान रखें। विधायक ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं से बचाव केवल प्रशासनिक सख़्ती से संभव नहीं है, बल्कि यह हम सभी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि आपका जीवन अनमोल है, इसे सुरक्षित रखना सबसे बड़ी समझदारी है।

दिगवार में 25 हाथियों के झुंड ने मचाया आतंक, फसलों को किया बर्बाद

आजाद सिपाही संवाददाता

दारु/हजारीबाग। प्रखंड क्षेत्र के दिगवार पंचायत के सोनडीहा मे 25 हांथियों का झुंड लगातार तीसरे दिन भी आतंक मचाये हुए है। हांथियों के द्वारा किसानों की अबतक लाखो कि फसल, घर और चारदिवारी बर्बाद हो चुकी है। शनिवार कि रात्रि को हांथियों ने सोनडीहा निवासी त्रिभुवन महतो, दसरथ महतो, निर्मल प्रसाद, रमेश रजक, अरुण कुमार, वरुण कुमार, महेश प्रसाद, पवन कुमार किसानो कि गन्ना, धान, मकई, ओल आदि ली कई एकड़ में लगी फसलों को बर्बाद कर दिया। वन विभाग कि टीम हांथियों को यहां से दूर खदेड़ने में अब तक नाकाम रही है। सोनडीहा के किसानों की कमर हांथियों के आतंक के कारण टूट चुकी है उनका लाखो का नुकसान हो गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि हर साल हांथियों के द्वारा उनकी फसलों को नष्ट किया जाता है पर कभी भी उन्हे विभाग से मुआब्जा नही मिलता है। हांथियों के बारे मे वनकर्मियों का कहना है कि बेस रेशाम से हांथियों को भगाने मे माहिर आदिवासी युवकों की टीम लगातार तीन दिनों से हांथियों को भगाने का प्रयास कर रही है। हांथियों के झुंड मे चार से पांच नवजात हांथी है जिस कारण हांथियों का झुंड नदी पार नहीं कर पा रहे है। क्षेत्र में लगातार बारिश होने से भी हांथियों को खदेड़ने मे सफलता नहीं मिल पा रही है। रविवार को हांथियों को भगाने के लिए टीम को दिन मे ही भेजा गया है जल्द ही हांथियों को सोनडीहा से दारु चिरवां होते हुए झरपो के रास्ते बरकट्ठा तरफ भेज दिया जायेगा। वन अधिकारियों ने ग्रामीणों से अपील की है कि हांथी द्वारा हुए नुकसान की भरपाई के लिए वे अंचल कार्यालय मे आवेदन दे जिसके बाद मुआब्जे कि प्रक्रिया पुरी की जायेगी।

विक्टोरिया मेमोरियल की तर्ज पर गया रोड में बनेगा माता का भव्य पंडाल

बरही (आजाद सिपाही)। अब ग्रामीण क्षेत्रों के श्रद्धालुओं को आकर्षक दुर्गा पूजा पंडाल देखने के लिए शहर की और रुख नहीं करना पड़ता है। क्योंकि इस वर्ष बरही गया रोड दुर्गा पूजा समिति ने करीब 11 लाख रुपया खर्च कर शक्ति की देवी मां दुर्गा की प्रतिमा को कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल पंडाल में स्थापित करने की योजना बनायी हैं जिसका निर्माण कार्य कुछ ही दिनों में शुरू कर दिया जायेगा। इसके पूर्व में भी समिति द्वारा यहां झारखंड विधानसभा, संसद भवन और बद्रीनाथ के तर्ज पर आकर्षक पूजा पंडालों का निर्माण कराया जा चुका है। कोलकाता स्थित विक्टोरिया मेमोरियल के स्वरूप का पंडाल को आकर्षक रूप देने के लिए बंगाल के दर्जनों कारीगर बरही पहुंचेंगे। पंडाल निर्माण में करीब 11 लाख से भी अधिक खर्च आने की उम्मीद है। इस बात की जानकारी दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष उदय केशरी, सचिव पप्पू केशरी और कोषाध्यक्ष बिनोद केशरी ने संयुक्त रूप से दी है। मां दुर्गा की पूजा अर्चना करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को कोई परेशानी नहीं होने दी जाएगी। पूजा समिति के सदस्यों के अलावा प्रशासन की और से दंडाधिकारी के साथ पुलिस बल की भी तैनाती रहेगी। इसके अलावा असामाजिक तत्वों पर तीसरी आंख की भी नजर रहेगी, जहां श्रद्धालु निर्भीक होकर मेले का आनंद ले पायेंगे। साथ ही कहा कि मेला में श्रद्धालुओं के मनोरंजन के लिए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी डिजनीलैंड मेला लगेगा।

गृह रक्षकों का 63 दिवसीय बुनियादी प्रशिक्षण संपन्न

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र, झारखंड गृह रक्षा वाहिनी, हजारीबाग में 23 जून से प्रारंभ हुआ 63 दिवसीय बुनियादी प्रशिक्षण रविवार को पारण परेड के साथ संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में कोडरमा जिले के 180 और रांची, गोड्डा, गढ़वा, सरायकेला, जमशेदपुर, गिरिडीह और धनबाद जिलों से अनुकम्पा के आधार पर नामांकित 38 सहित कुल 218 प्रशिक्षु गृह रक्षक शामिल हुए। समापन अवसर पर आयोजित पारण परेड में मुख्य अतिथि के रूप में हजारीबाग उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने प्रशिक्षु गृह रक्षकों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रशिक्षण के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रशिक्षु गृह रक्षकों को भी सम्मानित किया गया। बेहतर फायरिंग के लिए संजीत कुमार यादव को प्रथम और प्रितम कुमार सिंह को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रशिक्षुओं को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु गृह रक्षा वाहिनी के पदाधिकारियों और कर्मियों के साथ-साथ जिला बल और जैप-7 के दक्ष हवलदारों की प्रतिनियुक्ति की गयी थी। इस दौरान जिला समादेष्टा रोहित आनंद मौजूद थे।

गणपति महोत्सव की तैयारी जोरों पर

विष्णुगढ़ (आजाद सिपाही)। यहां के रमुआ में ग्राम देवी मंडप स्थिति सार्वजनिक गणपति मंदिर में पांच दिवसीय गणपति महोत्सव पूजा को लेकर पूजा कमिटी के पदाधिकारी और सक्रिय सदस्यों ने तैयारी को लेकर लगातार बैठक कर रहे हैं। पांच दिवसीय पूजा व मेला में बड़ी दूर-दूर से लोग जुटते है। पूजा कमिटी के अध्यक्ष शंकर कुमार ने कहा कि गणेश पूजा धूमधाम से मनाना है, जिसकी पूरी तैयारी कर ली गयी हैं। पूजा शेड्यूल में 26 अगस्त दिन मंगलवार सुबह गणेश प्रतिमा आगमन पर डांडिया की शानदार नृत्य प्रस्तुति के साथ शुरुआत होगी। 27 अगस्त दिन में पूजा अर्चना, शाम में संध्या आरती, रात्रि में बाल नृत्य प्रतियोगिता, 28 अगस्त दैनिक पूजन, संध्या आरती, रात्रि में बाल नृत्य प्रतियोगिता, 29 अगस्त दैनिक पूजन, संध्या आरती, रात्रि में माता रानी का भव्य जागरण और झांकी प्रस्तुति, 30 अगस्त दैनिक पूजन, संध्या आरती, रात्रि में बाल नृत्य प्रतियोगिता का फाइनल और प्रतिभावान प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार का वितरण, 31 अगस्त दैनिक पूजन, दोपहर हवन, आरती, संध्या में प्रतिमा विसर्जन के साथ इस पांच दिवसीय पूजा का समापन होगा। पिछले वर्ष प्रतिमा आगमन पर एंबीशन पब्लिक स्कूल के बच्चो द्वारा डांडिया का शानदार प्रस्तुति की गयी थी। इस वर्ष पूजा का हर गतिविधियों को अपडेट रखने के लिए अध्यक्ष शंकर कुमार, उपाध्याय बिरजू कुमार, अनूप कुमार, सचिव नीतीश कुमार, उपसचिव बिक्रम कुमार, कोषाध्यक्ष संदीप कुमार, उपकोषाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार कसेरा एवं मीडिया प्रभारी में संतोष शर्मा को जिम्मेदारी सौंपी गयी है। मौके पर सनी कुमार कसेरा, शुभम कुमार, रवि कुमार, अविनाश कुमार, सुजीत कुमार सोनी, राजू कुमार, आकाश कुमार, सोनू कुमार, विजय कुमार, राहुल कुमार, सुबोध प्रसाद कसेरा, रोहित कुमार कसेरा, सुधीर प्रसाद कसेरा, कृष कुमार, तुषार कुमार, जितेंद्र कुमार कसेरा, गोलू कुमार आदि सदस्य उपस्थित थे।

संकल्प जैन ने लहराया जेपीएससी में सफलता का परचम, सांसद मनीष जायसवाल ने दी बधाई

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) द्वारा हाल ही में घोषित किये गये परिणामों में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के युवाओं ने शानदार प्रदर्शन किया है। इसी कड़ी में शहर के मुनका बगीचा स्थित केडी चिल्ड्रन एकेडमी, कानी बाजार के निवासी संकल्प जैन ने अपने दूसरे प्रयास में ही उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उन्होंने इस प्रतिष्ठित परीक्षा में 48वां स्थान प्राप्त किया है। रविवार को सांसद मनीष जायसवाल ने अपने हजारीबाग स्थित सांसद सेवा कार्यालय में संकल्प जैन को सम्मानित किया। उन्होंने पुष्पगुच्छ भेंट कर संकल्प को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस दौरान सांसद जायसवाल ने कहा की एक अधिकारी के रूप में समाज में खुद को स्थापित करने से अधिक एक अच्छे इंसान के रूप में खुद को स्थापित करना और समाज में मानवीय संवेदना को जिंदा रखना सबसे महत्वपूर्ण है इसे स्मरण में सदैव रखना। संकल्प जैन के पिता व्यवसायी अभय कुमार जैन इस मौके पर गर्व के साथ मौजूद थे। साथ ही समाजसेवी नारायण गुप्ता और कुमार यादव सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे । संकल्प जैन की यह सफलता संकल्प के दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत का परिणाम है। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हजारीबाग के संत जेवियर स्कूल से पूरी की और स्नातक की पढ़ाई संत जेवियर कॉलेज, रांची से की। यह उनका दूसरा प्रयास था, जिसमें उन्होंने साक्षात्कार तक का सफर तय किया था, लेकिन इस बार उन्होंने अपनी पिछली असफलता को सफलता में बदलकर साबित कर दिया कि निरंतर प्रयास से कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। शहर के बाजार टांड़ स्थित कुशवाहा विकास समिति सह कुशवाहा भवन के तत्वावधान में रविवार को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सदर अस्पताल की टीम के द्वारा रक्त संग्रह किया गया। इस दौरान शिविर में 25 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। शिविर का शुभारंभ समाज के अध्यक्ष शिवचंद्र प्रसाद (शिवा) उपाध्यक्ष संतोष कुमार, सचिव भीम कुमार कुशवाहा, संरक्षक धनश्याम महतो, बसंत कुशवाहा, रमेश प्रसाद कुशवाहा आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इससे पूर्व समाज के लोगों ने सदर अस्पताल की टीम के आगमन पर उन्हें बुके देकर स्वागत किया। शिविर को संबोधित करते हुए कुशवाहा भवन के अध्यक्ष शिवचंद्र प्रसाद शिवा ने कहा कि रक्तदान एक ऐसा महान कार्य है, जिससे आप कई जरूरतमंदों की जान बचा सकते हैं, जैसे कि दुर्घटना पीड़ितों, सर्जरी वाले लोगों और हृदय-रोगियों की। रक्तदान एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा आप नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा कर सकते हैं और जीवन बचाने में योगदान दे सकते हैं। इसी उद्देश्य के साथ कुशवाहा भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में समाज के युवाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। शिविर को सफल बनाने में कोषाध्यक्ष अनिल कुमार, उत्तम कुमार, कुणाल कुमार, राम किशोर, संतोष कुमार महतो, रवि कुमार, मिथिलेश कुमार सहित कई लोगों का योगदान रहा।

रोशन पाथवे टू डिग्निटी फाउंडेशन का पौधरोपण अभियान चलाया गया

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। समाज में पर्यावरण संरक्षण और हरित क्रांति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रविवार को रोशन पाथवे टू डिग्निटी फाउंडेशन के तत्वावधान में शहर के जारा बस्ती में पौधरोपण अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम में फाउंडेशन के सदस्यों, स्थानीय नागरिकों, छात्रों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम के तहत जारा बस्ती में सैकड़ों पौधे लगाये गये। इसमें आम, नीम, पीपल, बरगद, पौधों सहित कई औषधीय वृक्षों को शामिल किया गया।फाउंडेशन के निदेशक डॉ आशीष कुमार ने बताया कि वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। इन्हीं से हमें शुद्ध वायु, जल और जीवनदायिनी छाया प्राप्त होती है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना और आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ वातावरण देना है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ अशोक कुमार, डॉ संजय साव, विश्वजीत कुमार, राकेश कुमार, अनिल कुमार, नागेंद्र महतो, सोनम कुमारी आदि उपस्थित शामिल थे।

स्मार्ट पीडीएस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

मांडू (आजाद सिपाही)। मांडू प्रखंड कार्यालय के सभागार कक्ष में सभी जन वितरण प्रणाली दुकानदार व ग्रामीण को स्मार्ट पीडीएस से संबंधित राशन वितरण का प्रशिक्षण दिया गया। डीलर को लॉगिन कर राशन वितरण, खाद्यान्न की प्राप्ति, खाद्यान्न प्राप्ति और वितरण का सत्यापन आदि को विस्तृत रूप से बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी बिमल कुमार बेदिया उपस्थित थे । जिला से आए मास्टर ट्रेनर ने सभी जन वितरण प्रणाली दुकानदार को प्रशिक्षण दिया गया। मौके पर गोदाम मैनेजर ज्ञानी प्रताप भारती, डीलर राकेश कुमार सिंह, संजय कुमार सिंह, प्रदीप गिरी, नंदलाल महतो, मो यूनुस अंसारी, शिव प्रकाश, तारकेश्वर प्रसाद सहित सभी डीलर उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सेवा मंच ने गरीबों के बीच भोजन का किया वितरण

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। भारी बारिश के बावजूद समाजसेवी संस्था राष्ट्रीय सेवा मंच ने प्रत्येक सप्ताह की भांति इस रविवार को भी भुरकुंडा साप्ताहिक बाजार में 200 गरीब व जरूरतमंदों के बीच भोजन वितरण किया। मौके पर मंच के अध्यक्ष डब्लू सिंह ने बताया कि हमारा प्रयास है कि कोई भी गरीब भूखा न रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में रिंकू वर्णवाल, प्रोफेसर रामानुज सिंह, उदयभान दुबे, बारीक अंसारी, हरी साव और महावीर सिंह आदि का विशेष योगदान रहा।

साइबर ठग गिरोह की महिला सरगना गिरफ्तार

बरामद हुए कई एटीएम और पासबुक

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। रामगढ़ में खुला साइबर थाना साइबर क्रिमिनल को पकड़ने में काफी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इस थाने में पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी की सक्रियता से एक ऐसी महिला गिरफ्तार की गयी है जो साइबर गिरोह चला रही थी। उसके पास से कई बैंक पासबुक आदि बरामद हुआ है। इस मामले की जानकारी रविवार को एसपी अजय कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि 18 जुलाई को साइबर थाने में साइबर गिरोह द्वारा 2 लाख 4 हजार 500 रुपए की ठगी किये जाने की सूचना आई थी। कांड संख्या 3/ 25 में कार्रवाई करते हुए साइबर थाने के पदाधिकारी ने उस कड़ी को पकड़ लिया जहां से

लोग ठगे जा रहे थे।

गिरफ्तार पूर्णिमा देवी के घर से मिले एटीएम और बैंक पासबुक : इस दौरान जांच टीम ने गोला थाने के तोयर, खोहा गांव निवासी पूर्णिमा देवी पति टेकलाल महतो को गिरफ्तार किया। जब उसके घर की तलाशी ली गयी तो साइबर फ्रॉड में प्रयोग किये गये नौ बैंक खातों का पासबुक, एक स्पीड पोस्ट रसीद, जिसके माध्यम से साइबर गिरोह को एटीएम कार्ड भेजा गया था और एक सिम कार्ड का कवर बरामद किया गया। उक्त सभी सामग्रियों को पुलिस ने जब्त किया है। जांच के क्रम में जब्त बैंक खातों का सत्यापन एनसीआरपी (नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल) के माध्यम से किया गया। जिसमें यह पुष्टि हुई थी पूर्णिमा देवी के नाम से संचालित अधिकांश खाता पर एक से अधिक साइबर ठगी की रिपोर्ट दर्ज है। इस मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

देश के हर कौन से पूर्णिमा के खाते में आए हैं पैसे : पूर्णिमा देवी ने अपने नौ बैंक खातों को हैंडल करने का अधिकार गिरोह के मुख्य सरगना को दिया था। उसने अपने सभी बैंक खातों का एटीएम और गिरोह के सरगना को बेंच दिया था। वह सरगना पूरे देश से मासूम नागरिकों को ठगता था और इसके बैंक खाते में रुपये मंगवाता था। रुपए आने के बाद तत्काल एटीएम से वह उसे निकाल लेता था। यहां तक कि पूर्णिमा को कमीशन के तौर पर रुपए भी भेजता था। पूर्णिमा ने अपना सिम कार्ड भी गिरोह के सरगना को बेंच दिया था।

आधा दर्जन बैंकों में पूर्णिमा ने खुलवाया खाता

साइबर गिरोह चला रही महिला पूर्णिमा देवी ने 6 बैंकों में अपना खाता खुला रखा था। पंजाब नेशनल बैंक के खाते पर तीन साइबर क्राइम की रिपोर्ट दर्ज है। केनरा बैंक के खाते पर एक साइबर क्राइम की रिपोर्ट दर्ज है। बैंक आफ महाराष्ट्र खाता पर 6 साइबर क्राइम की रिपोर्ट दर्ज है। बैंक ऑफ इंडिया के खाते पर 23 साइबर क्राइम की रिपोर्ट दर्ज है। केनरा बैंक के एक दूसरे खाते में सात साइबर क्राइम होने का रिपोर्ट दर्ज है। पंजाब नेशनल बैंक के दूसरे खाते में भी दो साइबर क्राइम होने का रिपोर्ट दर्ज है।

केंद्र सरकार के खिलाफ निकाला गया जुलूस, फूंका पुतला

आजाद सिपाही संवाददाता

चतरा। झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला अध्यक्ष नीलेश ज्ञासन के नेतृत्व में थाना मैदान से भाजपा के विरोध में जुलूस निकाला गया। जुलूस केशरी चौक पहुंचकर केंद्र सरकार के खिलाफ जोरदार नारेबाजी करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला दहन किया गया। इस दौरान काफी संख्या में झामुमो के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे। जिला अध्यक्ष नीलेश ज्ञासन ने कहा कि 20 अगस्त 2025 को केंद्र सरकार द्वारा संसद में पेश किया गया विधेयक भारतीय संविधान की मूल भावना का खुला उल्लंघन है। यह विधेयक न केवल जनप्रतिनिधियों को उनके संवैधानिक अधिकारों से वंचित करता है, बल्कि जनता के जनादेश का भी अपमान करता है। स्पष्ट है कि भाजपा नेतृत्व वाली केंद्र सरकार अपने राजनीतिक विरोधियों को कमजोर करने के लिए केंद्रीय जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। इस विधेयक के प्रावधानों के तहत किसी भी जनप्रतिनिधि को 30 दिनों से अधिक न्यायिक हिरासत में रखकर, उन्हें पद छोड़ने के लिए मजबूर किया जा सकता है। चाहे वे दोषी साबित हुए हो या नहीं। यह कदम लोकतंत्र की आत्मा पर गहरा आघात है और जनता को गुमराह करने की एक सुनियोजित साजिश है। उन्होंने कहा कि सत्ता की लोभ में भाजपा किसी भी हद तक जाने को तैयार है। इसी कारण झारखंड समेत पूरे देश में इस तानाशाही प्रवृत्ति के खिलाफ तीव्र जनाक्रोश व्याप्त है। जिसका आज चतरा में भी हम सभी विरोध प्रदर्शन कर रहे है।

बुद्धिजीवी मंच ने क्षेत्र के पत्रकारों को किया सम्मानित

समारोह में झारखंड की पत्रकारिता के स्तंभ हरिनारायण सिंह को दी श्रद्धांजलि

वर्तमान समय की पत्रकारिता है चुनौती भरा, देश हित में कलम की ताकत रहे मजबूतः हंसराज

आजाद सिपाही संवाददाता

बरकाकाना। सामाजिक संस्था बुद्धिजीवी मंच ने बरकाकाना स्थित रेलवे रिक्रिएशन क्लब में सम्मान समारोह का आयोजन किया।समारोह के दौरान क्षेत्र के पत्रकारों को सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता इसीआरइयू के केंद्रीय उपाध्यक्ष अवधेश कुमार गुप्ता और संचालन मंच के सचिव डॉ शाहनवाज खान ने किया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि डीटीएम बरकाकाना हंसराज व विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय कर्मशाला बरकाकाना के प्रभार महाप्रबंधक राकेश प्रसाद उपस्थित रहे। समारोह के दौरान सर्वप्रथम झारखंड के पत्रकारिता के स्तंभ हरिनारायण सिंह के आकस्मिक निधन पर उपस्थित लोगों ने दो मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित किया। तदोपरांत मंच अध्यक्ष प्रदीप करमाली ने स्वागत भाषण देकर उपस्थित अतिथियों और पत्रकारों का परिचय कर उनका अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि डीटीएम हंसराज ने बुद्धिजीवी मंच द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान समय की पत्रकारिता चुनौती भरा है, लेकिन देश हित में कलम की ताकत मजबूत रहनी चाहिए। वही विशिष्ट अतिथि राकेश प्रसाद ने कहा कि देश के चौथे स्तंभ के रूप में जाने वाले क्षेत्र के पत्रकार अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन बेहतर ढंग से करते आ रहे हैं जो अति प्रशंसनीय है। समारोह के दौरान पत्रकारों के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित आजाद सिपाही के पत्रकार सुनील कुमार और दुर्वेज आलम ने पत्रकारों की दिशा व दशा पर अपनी बातों को रखते हुए मंच के पदाधिकारियों और सदस्यों द्वारा सम्मान समारोह आयोजित करने पर उनका आभार व्यक्त किया। समारोह के दौरान विभिन्न मिडिया प्रतिष्ठानों से उपस्थित पत्रकार गोपाल गिरी, पंकज सोनी, बबन राउत, बसंत कुमार, विक्रांत कुशवाहा, अभिषेक पाठक को मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों ने प्रतीक चिन्ह भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। मौके पर मुख्य रूप से मंच के प्रवक्ता नेपाल विश्वकर्मा, उपाध्यक्ष सोनी महतो, किरण पटेल, नैना मसीह, सरिता देवी, सुनीता देवी, जयंती देवी, देवकी बेदिया, शिवशंकर बेदिया, गिरी शंकर महतो, गुड्डू कुमार, नरेश प्रजापति, दिनेश करमाली, मदन दांगी, गोकुल महतो, सुरेश शर्मा, जलील अंसारी, विक्की खान, राजा खान, जितेंद्र दास, बंटी सिंह, जिम्मी सिंह, मदन राम, सुमित उरांव, विनेश दांगी सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

उज्ज्वला का एकमात्र सेवा लक्ष्य : जगेश्वर प्रजापति

कुजू (आजाद सिपाही)। उज्जवला फाउंडेशन ने बोंगावार फोरलेन स्थित फाउंडेशन कार्यालय में बैठक की। बैठक की अध्यक्षता फाउंडेशन अध्यक्ष जगेश्वर प्रजापति और संचालन उपाध्यक्ष शांति देवी ने किया। बैठक के दौरान दूसरे चरण में आगामी तीज व करमा पर्व के मौके पर 81 सदस्यों के बीच साड़ी वितरित किया गया। साथ ही, फाउंडेशन की मजबूती पर विस्तृत चर्चा की गयी। मौके पर फाउंडेशन अध्यक्ष जगेश्वर प्रजापति ने कहा कि फाउंडेशन की समर्पण भावनात्मक सोच के साथ सेवा करना ही एकमात्र लक्ष्य है। जहां फाउंडेशन के सदस्य अपनी आत्मनिर्भरता साबित कर लोगों की सेवा में जुटा है। निश्चित ही आने वाले दिनों में उज्जवला फाउंडेशन झारखंड में एक नई पहचान बनायेगी। साथ ही, पर्व की पौराणिक महत्ता के साथ सुख समृद्धि की कामना की। बैठक में वीणा देवी, कौशल्या देवी, मनसरी देवी, सुमन देवी, रिंकु देवी, नेमी देवी, अनिता कुमारी, मीना देवी, मुलिया देवी, करमी देवी, बेबी देवी, कांति देवी समेत कई सदस्य शामिल रहे।

मूसलाधार बारिश से मिट्टी का मकान ध्वस्त, प्रशासन से सहायता की गुहार

हंटरगंज/ चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय समेत ग्रामीण क्षेत्रों में तीन दिनों से लगातार मुसलाधार बारिश से नदी, आहर, तालाब, डोभा ,खेत-खलिहान पूरा डूब गया है ।मानव जीवन अस्त व्यस्त है। लोगों को घरों से निकलना मुश्किल हो गया है। ढलाई के मकान का छत रिस रहे हैं। वहीं खपरैल घरों में लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। प्रखंड के चकला पंचायत के ग्राम कोदलिया गांव निवासी राजकुमार साव के मिट्टी का खपरैल मकान ध्वस्त हो गया है। पीड़ित परिवार बेघर हो गया है। घर में रखे खाने पीने का सामान भी नष्ट हो गया है। कइस घर में राजकुमार साव के अतिरिक्त फूलमती देवी, विनय साव, गुड़िया देवी, ईडन कुमार और आस्था कुमारी रहते हैं। इसके अलावा प्रखंड क्षेत्र के गेरुआ पंचायत अंतर्गत बड़हीबीघा में रविवार तेज मूसलाधार बारिश से बड़हीबीघा कोयरीटोला निवासी रामदास प्रसाद के घर में पानी घुस गया। जिससे घर का एक हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। पीड़ित परिवार ने प्रशासन से सहायता की गुहार लगायी है।

सड़क दुर्घटना में चार लोग घायल

प्रतापपुर/ चतरा (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के जोरी प्रतापपुर मुख्य मार्ग स्थित सिजुआ- केवलिया मार्ग पर हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे में चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। जानकारी के अनुसार रविवार दोपहर एक ऑटो और बाइक की आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गयी, जिससे दोनों वाहन बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए। जानकारी के अनुसार, ऑटो चालक बोड़ा है मोड़ निवासी 38 वर्षीय अशोक साव अपने ऑटो में सब्जी लेकर साप्ताहिक बाजार जा रहे थे। इसी दौरान, बाइक पर सवार दो युवक- कौरा जुडी गांव निवासी अनिल कुमार दास 24 वर्षीय और अदौरिया गांव निवासी अमित कुमार 22 वर्षीय, जोरी बस स्टैंड की ओर जा रहा था। इसी बीच बाइक की टक्कर ऑटो से हो गयी। ऑटो में सवार एक अन्य युवक टटू कुमार भी हादसे में घायल हैं। इस भीषण टक्कर में सभी चारों लोग गंभीर रूप से घायल हैं। गंभीर रूप से घायल दो युवकों को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल चतरा रेफर किया गया है। हादसे की खबर सुनकर घायलों के परिजन और स्थानीय मुखिया मनीष सिंह भी अस्पताल पहुंच गये।

जीएसआइ ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन 26 को

कुजू (आजाद सिपाही)। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण का फील्ड प्रशिक्षण केंद्र, कुजू में नव-निर्मित प्रशासनिक भवन और प्रशिक्षु आवासीय का उद्घाटन समारोह आगामी 26 अगस्त को किया जाना है। जिसकी तैयारी पूरी कर ली गयी है। जिसका उद्घाटन केंद्रीय कोयला और खान राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे करेंगे। साथ ही, जीएसआई के महानिदेशक असित साहा भी मौजूद रहेंगे। उक्त आशय की जानकारी झारखंड इकाई के उपमहानिदेशक अखौरी विश्वप्रिय, केंद्र के निदेशक प्रभाकर लकड़ा व वरिष्ठ भूवैज्ञानिक रवि शंकर चौबे ने संयुक्त रूप से दी। गत 50 वर्षों से देशी व विदेशी भूवैज्ञानिक भव्य जूट निर्मित तंबुओं में रहकर प्रशिक्षण लिया करते थे। अब प्रशिक्षु अत्याधुनिक भवनों में रहकर प्रशिक्षण लेंगे। नवीन परिसर में वीआईपी कक्ष, अत्याधुनिक विशाल कॉन्फ्रेंस हॉल, एक स्मार्ट व्याख्यान कक्ष तथा एक व्याख्यान कक्ष है। आवासीय इकाइयों, खेल व योग सुविधाओं तथा सौर ऊर्जा और वर्षा जल संचयन जैसे पर्यावरण अनुकूल संसाधनों से सुसज्जित किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि सन 1975 में वन विभाग से स्थानांतरित करीब साढ़े चार एकड़ भूमि पर फैले कुजू में स्थापित एफटीसी में तलछटी भूभाग के मानचित्रण और कोयला अन्वेषण पर आधारित आवासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के संचालन में विशेष दक्षता रखता है। केंद्र ने अबतक जीएसआई के 48 बैचों के युवा अधिकारी प्रशिक्षुओं को ओरिएंटेशन एवं उन्नत पाठ्यक्रम प्रशिक्षण देने का गौरव प्राप्त कर चुका है। साथ ही, ओएनजीसी, ओईल, सीएमपीडीआई, सीआईएल तथा विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के लिए भी एक पसंदीदा प्रशिक्षण स्थल रहा है।

डुमरी विधायक जयराम महतो ने बारलौंग में डिजिटल टूल्स का किया वितरण

डिजिटल पेनियर सेवा सेंटर खुलने से ग्रामीणों को होगा लाभ : जयराम

आजाद सिपाही संवाददाता

रजरप्पा। डिजिटल एंपावरमेंट फाउंडेशन के तत्वावधान में रविवार को रामगढ़ जिले के बारलौंग में डिजिटल टूल्स वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जेएलकेएम के केंद्रीय अध्यक्ष सह डुमरी विधानसभा विधायक जयकुमार महतो रहे। इस अवसर पर चयनित सूचना पेनियोर को लैपटॉप, कलर और ब्लैक एंड व्हाइट प्रिंटर, लेमिनेशन मशीन और अन्य उपकरण वितरित किये गये।

डिजिटल क्रांति से जुड़ेगा ग्रामीण समाज विधायक जयकुमार महतो ने कहा कि आज के दौर डिजिटल क्रांति का है। इन उपकरणों से सुसज्जित सूचना पेनियोर सेंटर ग्रामीणों को डिजिटल सेवाओं से जोड़ेंगे। वित्तीय लेन-देन, सरकारी योजनाओं की जानकारी और ऑनलाइन सुविधाओं तक पहुंच आसान होगी। उन्होंने कहा कि इससे ग्रामीण आत्मनिर्भर बनेंगे और अपनी आय में वृद्धि कर परिवार को सशक्त बना सकेंगे। पास पड़ोस के हजारों ग्रामीणों को सीधा लाभ मिलेगा, साइबर अपराध से बचाव के लिए जागरूकता जरूरी महतो ने यह भी कहा कि डिजिटल सुविधाओं के साथ-साथ साइबर अपराध भी तेजी से बढ़ रहे हैं। ऑनलाइन धोखाधड़ी, साइबर फ्रॉड और उत्पीड़न से बचाव के लिए जागरूकता ही सबसे बड़ा उपाय है। उन्होंने डिजिटल एंपावरमेंट फाउंडेशन के प्रयासों को सराहनीय बताया, महिलाओं और युवाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।6000 महिलाओं को मिल रही डिजिटल साक्षरता जिला समन्वयक सुरेश राम ने बताया कि स्किलअप प्रोजेक्ट के तहत फिलहाल रामगढ़ जिले के हजारों महिलाओं और युवाओं को व्हाट्सएप के माध्यम से डिजिटल साक्षरता और वित्तीय समावेशन से जोड़ा जा रहा है। साथ ही युवाओं को एआइ, डिजिटल प्रोडक्टिविटी और एएमआइएल तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है, जिससे वे भविष्य में आत्मनिर्भर बन सकें।

महिलाओं की रही विशेष भागीदारी : कार्यक्रम का संचालन सूचना पेनियोर निशा कुमारी ने किया। आयोजन में उनका योगदान सराहनीय रहा। मौके पर वीरेंद्र प्रसाद, नमिता कुमारी, आशा कुमारी, शोभा कुमारी, तिलकी कुमारी, रेणुका देवी, संजोता देवी, उषा कुमारी, संगीता देवी, नीलम कुमारी और पूनम कुमारी उपस्थित रहीं।

लाभार्थियों को मिले डिजिटल टूल्स : डिजिटल उपकरण प्राप्त करने वालों में नरेंद्र बेदिया, अंजुम साहिन, नगीना कुमारी, तमन्ना परवीन, पिंकी कुमारी, तरुण कुमारी, ममता देवी, वीरेंद्र प्रसाद, बिदिया, रेखा कुमारी, निशा कुमारी और सुमित्रा देवी शामिल हैं। मौके पर प्राणेश्वर महतो, सुधीर अकेला, पिंटू कुमारी, सूरज मुंडा, मनोज कुमार, राधिका कुमारी, मोनिका कुमारी, नमिता कुमारी सहित अन्य शामिल रहे।

25 वर्षों में भी नहीं मिला झारखंडियों को हक और अधिकार : टाइगर जय राम महतो

पतरातू(आजाद सिपाही)। पतरातू प्रखंड के अम्बेडकर पार्क पीटीपीएस में झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के बैनर तले खतियानी अधिकार सभा सह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए झारखंड लोकतांत्रिक क्रांति मोर्चा के अध्यक्ष सह विधायक टाइगर जयराम महतो ने कहा कि झारखंड राज्य अलग हुए 25 साल बीत गये फिर भी लोग रोजी रोजगार हक अधिकार विस्थापन और मूलभूत सुविधाएं जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। जबकि राज्य में सभी संसाधन मौजूद हैं। बड़कागांव विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी बालेश्वर कुमार ने कहा कि दुर्भाग्य की बात है की पूर्व मंत्री योगेंद्र साहू के पुत्री पूर्व विधायक अंबा प्रसाद को टाइगर जयराम महतो से विस्थापन के मुद्दे को लेकर समर्थन मांगना पड़ रहा है। जबकि वर्तमान में उनकी राज्य में सरकार है। कार्यक्रम के दौरान आजसू पार्टी के विजय साहू ने झारखंड लोकतांत्रिक क्रांति मोर्चा की सदस्यता ग्रहण की। इन्हें झारखंड लोकतांत्रिक क्रांति मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष सह डुमरी विधायक टाइगर जयराम महतो ने पार्टी का पट्टा पहना कर पार्टी में शामिल कराया। इस मौके पर झारखंड लोकतांत्रिक क्रांति मोर्चा के कार्यकर्ता ग्रामीण मौजूद थे।

सेवानिवृत्त एसआइ राम निवास सिंह का निधन

गोला(आजाद सिपाही)। गोला थाना से सेवानिवृत एस आई रामनिवास सिंह का निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे। परिवार वालों ने बताया कि रात्रि में अचानक तबीयत खराब होने पर उन्हें मेदांता अस्पताल इरबा ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। स्व सिंह अपने पीछे धर्मपत्नी, छह पुत्री और दो पुत्र अभिषेक सिंह और आशीष सिंह को छोड़ गये। स्व आर एन सिंह दस वर्ष पहले गोला थाना में पदस्थापित थे। इधर दिवंगत को उनके कुसुमडीह स्थित आवास में उनके रिश्तेदारों सहित गोला के झारखंड पेंशनर कल्याण समाज, भाजपा सहित विभिन्न राजनीतिक दल के लोग पहुंचे और शोक सवेंदना व्यक्त की। दु:ख हरण पोद्दार, बच्चन प्रजापति, रामस्वरूप लाल खन्ना, गोपी प्रसाद, नरेश चन्द्र पोद्दार, जगदीश प्रसा, बालगोविन्द राम, बलराम करमाली, कुंवर कुमार बख्शी, अरुण बख्शी, जनार्दन पाठक, मनोज मिश्र, प्रदीप सिंह, योगेंद्र नायक, बबलू साव, विजय ओझा, प्रीतम झा, जीतेन्द्र साहू, रवि हाजरा, अजय कुमार पाठक, विकास कुमार पाठक, मोहम्मद सिद्दीक, मोहम्मद बबलू, शिवप्रकाश, निहार रंजन ने शोक व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी है।

शपथ पत्र

शपथ पत्र संख्या 832, दिनांक 19.08. 2025 के अनुसार, मै चिंता मुनी उरांव, जो कि जी.एस. सं. 189542 एल, रैंक एम.एस.डब्ल्यू.पी.एन.आर., नाम पंचू उरांव की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी हूँ और वर्तमान में ग्राम हुरहुरी, डाकघर सिलागाई, पुलिस स्टेशन चान्हो, जिला रांची, झारखंड-835301 में रहती हूँ, सत्यनिष्ठा से शपथपूर्वक निम्नलिखित बयान देती हूँ :

1) यह कि, मैंने दस्तावेजों को अद्यतन करने के कारण अपना नाम चिंता मुनी कुमारी से बदलकर चिंता मुनी उरांव कर लिया है। मेरी जन्म तिथि 15 जनवरी 1996 (पंद्रह जनवरी उन्नीस सौ छियानवे) है। 2) यह कि, मैं यह शपथ पत्र अपने नाम के प्रमाण के उद्देश्य से प्रस्तुत कर रही हूँ।

3) यह कि, दोनों नाम चिंता मुनी कुमारी और चिंता मुनी उरांव एक ही व्यक्ति के हैं। 4) यह कि, मैं इसके बाद सभी कार्यवाही, लेनदेन, चाहे वह निजी हो या किसी भी अन्य अवसर पर, केवल चिंता मुनी उरांव के नाम से जानी जाऊँगी। 5) यह कि, ऊपर दिया गया बयान मेरी जानकारी, सूचना और विश्वास के अनुसार सत्य और सही है, और इसमें से कुछ भी महत्वपूर्ण छिपाया नहीं गया है।

योगी राज में कृषि की नयी छलांग

किसान जब हल से धरती को चीरता है, तो केवल अन्न ही नहीं, जीवन भी उपजाता है। उसका पसीना खेतों में हरियाली लाता है और समाज की नसों में संबल भरता है। उत्तर प्रदेश का यही किसान सदियों से देश की ताकत रहा है। वह कभी अकाल की विपदा से जूझा, कभी मंडियों की लूट का शिकार हुआ, कभी मौसम की मार झेली और कभी नीतिगत उपेक्षा। लंबे समय तक उसे उसके श्रम का पूरा प्रतिफल और सहारा नहीं मिला। लेकिन अब परिदृश्य बदल रहा है। खेतों की मेड़ों पर निराशा की जगह भरोसे की हरियाली है। योजनाएं सीधे अन्नदाता तक पहुंच रही हैं और उसका विश्वास लौट रहा है कि शासन उसकी चिंता करता है और परिश्रम को प्रतिष्ठा देता है। उत्तर प्रदेश में कृषि की यह नयी करवट केवल संयोग नहीं, बल्कि सजग संकल्प और सुविचारित रणनीति का नतीजा है। वर्ष 2016-17 में जहां कृषि विकास दर 8.6 प्रतिशत थी, वहीं 2024-25 में यह 17.7 प्रतिशत तक पहुंच गयी। यह वृद्धि मात्र आंकड़ों की छलांग नहीं, बल्कि किसान के आत्मविश्वास की उड़ान है। पहले जहां पसीना सूखी मिट्टी में खो जाता था, वहीं अब वही श्रम समृद्धि की धारा में बदल रहा है। फल और सब्जी उत्पादन में 400 लाख टन का स्तर छूकर उत्तर प्रदेश देश का अग्रणी राज्य बन गया है। यह सफलता केवल खेतों की पैदावार नहीं, बल्कि मेहनतकश हाथों और दूरदर्शी नीतियों का संगम है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से 2.86 करोड़ कृषकों को सीधे बैंक खातों में 80,000 करोड़ से अधिक पहुंचना इस बदलाव का प्रमाण है कि अब बिचौलियों की बेड़ियां टूटी हैं और मेहनत की कमाई सीधे किसान की हथेली तक पहुंच रही है। सिंचाई और ऊर्जा के क्षेत्र में उठाये गये कदमों ने खेती को नयी दिशा दी है। 93,000 से अधिक कृषकों को सौर पंप मिले, 31 प्रमुख परियोजनाएं पूरी हुईं और 46 लाख से अधिक किसानों को लाभ पहुंचा। 14 लाख किसानों को मुफ्त बिजली से सीधी राहत मिली। 6,600 नलकूपों का आधुनिकीकरण और डार्क जोन में 569 असफल नलकूपों का पुनर्निर्माण 1.10 लाख परिवारों के लिए नये अवसर खोल रहा है। गन्ना उत्पादक किसानों का श्रम अब मिठास के साथ रोजगार भी बांट रहा है। 2017 के बाद 3 नयी चीनी मिलें स्थापित हुईं, 6 पुनःसंचालित हुईं और 38 का विस्तार हुआ। इन पहलों ने 1.25 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार दिया। यह विकास केवल उद्योग की प्रगति नहीं, बल्कि गांव-गांव गन्ने से गुड़ और श्रम से सुख-समृद्धि की कहानी गढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से 2.86 करोड़ कृषकों को सीधे बैंक खातों में 80,000 करोड़ से अधिक पहुंचना इस बदलाव का प्रमाण है कि अब बिचौलियों की बेड़ियां टूटी हैं और मेहनत की कमाई सीधे किसान की हथेली तक पहुंच रही है।

अभिमत
आजाद सिपाही

डॉ रामदयाल मुंडा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक विचारक, चिंतक, साहित्यकार, कलाकार, और सामाजिक आंदोलन के अगुआ थे। उनका जन्म रांची से 60 किलोमीटर की दूरी में तमाड़ के दिउड़ी ग्राम के गंधर्व मुंडा के घर 23 अगस्त, 1939 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा 1947 से 1953 तक लूथरन मिशन मिडिल स्कूल, अमलेसा में हुई। माध्यमिक शिक्षा 1953 से 1957 तक खूंटी के एसएस हाई स्कूल से हुई। इन्होंने मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास किया।

जे नाची से बाची - डॉ राम दयाल मुंडा

(23 अगस्त, 1939-30 सितंबर, 2011)

डॉ मोहम्मद जाकिर

डॉ राम दयाल मुंडा को अपनी मिट्टी, मातृभूमि, संस्कृति से अपार प्रेम था। वे आदिवासी संस्कृति की पहचान वैश्विक स्तर पर दिलायी। डॉ रामदयाल मुंडा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक विचारक, चिंतक, साहित्यकार, कलाकार, और सामाजिक आंदोलन के अगुआ थे। उनका जन्म रांची से 60 किलोमीटर की दूरी में तमाड़ के दिउड़ी ग्राम के गंधर्व मुंडा के घर 23 अगस्त, 1939 को हुआ था।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा 1947 से 1953 तक लूथरन मिशन मिडिल स्कूल, अमलेसा में हुई। माध्यमिक शिक्षा 1953 से 1957 तक खूंटी के एसएस हाई स्कूल से हुई। इन्होंने मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास किया। संगीत, बांसुरी एवं ढोलक बजाने की कला उन्हें अपने मामा के गांव में मिली। हाई स्कूल में पढ़ते उन्होंने बांसुरी, ढोलक बजाना सीख लिया। फिर रांची कॉलेज में दाखिला लिया। रांची विश्वविद्यालय से 1957 से 1963 तक में एंथ्रोपोलॉजी में मास्टर्स डिग्री हासिल की। 1960 में उन्होंने एक छात्र और नर्तक के रूप में संगीतकारों की एक मंडली बनायी। अपनी विशिष्ट 'मुंडा छाप' बनाये रखने के लिए लंबे केश रखने लगे। वे आकाशवाणी केंद्र रांची से भी जुड़े।

दिउड़ी से खूंटी, खूंटी से रांची और रांची से 1963 में उच्चतर अध्ययन और शोध के लिए अमेरिका के शिकागो यूनिवर्सिटी गये। जहां से उन्होंने 1968 में नॉर्मल जाइड़ के मार्गदर्शन में एसिअटिक भाषाओं पर भाषा विज्ञान में पीएचडी की। 1968 से 1971 में वहीं से दक्षिण एशियाई भाषा एवं संस्कृति में शोध और अध्ययन किया। डॉ मुंडा को 1977 और 1978 में अमेरिकन और जापान के फाउंडेशन की तरफ से फेलोशिप भी मिला। उन्होंने अमेरिकन यूनिवर्सिटी में साउथ एशियन स्टडीज के अध्ययन विभाग में 1981 तक एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे. जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विद्वता, कला एवं सौम्य व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़े। 18 वर्षों तक वे अमेरिका में लोकप्रिय लेखक, कलाकार एवं प्राध्यापक रहे।

डॉ राम दयाल मुंडा का एक बहुआयामी व्यक्तित्व था। वे बहुभाषी, कवि, लेखक, चिंतक, प्रशासक, विनम्र, वादक आदि के असाधारण व्यक्ति थे।

1980 दशक के शुरुआत में वे रांची लौट आए. तत्कालीन आयुक्त एवं रांची प्रभारी कुलपति कुमार सुरेश सिंह के सहयोग से रांची विश्वविद्यालय में आदिवासी और क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना की। यह देश के किसी भी विश्वविद्यालय में आदिवासी भारत साहित्य का पहला विभाग था।

डॉ रामदयाल मुंडा ने रांची विश्वविद्यालय प्रतिकुलपति 1985-1986 और 1986-1988 के कुलपति रहे। डॉ रामदयाल मुंडा न सिर्फ एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के भाषाविद्, समाजशास्त्री और आदिवासी बुद्धिजीवी और साहित्यकार थे, बल्कि वो एक बेजोड़ आदिवासी कलाकार भी थे। उन्होंने कई भाषाओं में जैसे मुंडारी, नागपुरी, पंचपरगनिया, हिंदी अंग्रेजी में गीत कविताओं और गद्य साहित्य की रचना की। उनकी संगीत रचनाएं वो लोकप्रिय हो गया। झारखंड के आदिवासी लोक कला विशेष कर 'पाईका नाच' वैश्विक को स्तर पर पहचान दिलायी। विश्व आदिवासी दिवस मनाने की परंपरा शुरू करने में उनका अहम योगदान रहा। उन्होंने झारखंड मोमेंट लिखा, जिससे पता चलता है कि वे भारत के आदिवासी समुदायों के परम्परागत और संवैधानिक अधिकारों को लेकर काफी सजग थे। वे आदिवासियों की स्वतंत्र पहचान और पक्षधर थे। इसलिए धर्म को महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने आदिवासियों के पारंपरिक धरम को आदि धरम कहा। इस प्रतिष्ठित करने की दिशा में कार्य किया। उनका मानना था कि आदिवासियों का धर्म मुख्यधारा के धर्म हिंदू क्रिश्चियन और इस्लाम धर्म से अलग है। उन्होंने इसी पर 'आदि धर्म' नामक पुस्तक लिखी। डॉ मुंडा ने नागपुरी, मुंडारी, हिंदी और अंग्रेजी में भारतीय आदिवासियों की भाषा, साहित्य, समाज, धर्म और संस्कृति पर कई पुस्तकें तथा निबंध लिखे। डॉ रामदयाल मुंडा आदिवासी कहते थे कि आदिवासियों के विकास के तीन रास्ते हैं। पहला अपने पुराने तरह के साथ रहो, दूसरा मुख्यधारा के स्थापित धर्मों के साथ जुड़ कर उनकी संस्कृति अपना लो या तीसरा की अपनी शर्तों के साथ ही विकास की मुख्यधारा में शामिल हो जाओ। वे तीसरी के पक्ष में थे। यह उनके जीवन शैली पहनावा, आचार-विचार से दिखता था। इसका बेहतरीन उदाहरण उनके द्वारा रचित सरहुल मंत्र है। इसमें भी स्वर्ग के परमेश्वर से लेकर धरती से जुड़े धरती माई तथा देश के विकास से जुड़े और सैकड़ों दिवंगत व्यक्तियों को एक साथ बुला कर पंक्ति में बैठने का आमंत्रण देते हैं।

कहते हैं - हम तोहरे की बुलात ही, हम तोहरे से विनती करत ही, हामरे संग तनी बैठ लेवा, हामरे संग तनी बतियाय लेवा, एक दोना हडिया के रस, एक पतरी लेतवा भात हामरे संग पी लेवा, हामरे साथे खाय लेवा।

वे 1988 में कुलपति के पद से मुक्त हुए और अपने पुराने विभाग में आ गये। वे राजनीति, संस्कृति एवं साहित्य में अपना योगदान देते रहे। झारखंड अलग राज्य आंदोलन में सक्रिय रहे। उनके गीत 'अखंड झारख७ड में अब भेला बिहान गो...' आज भी गूंजते हैं. उन्हें 'महाराजा मदरा मुंडा' सम्मान तथा 'झारखंड रत्न' से सम्मानित किया गया। उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मश्री का सम्मान से भारत सरकार ने नवाजा।

2017 में 'जे नाची से बाची', नाम से फिल्म मेकर मेघनाथ और बीजू टोप्पो ने एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनायी। मेघनाथ उन्हें ने झारखंड के रवींद्रनाथ टैगोर मानते थे। क्योंकि वे झारखड में टैगोर की तरह सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति के लिए बिगुल बजाया था।

डॉ राम दयाल मुंडा का एक बहुआयामी व्यक्तित्व था। वे बहुभाषी, कवि, लेखक, चिंतक, प्रशासक, विनम्र, वादक आदि के असाधारण व्यक्ति थे। वे एक गांव से निकल कर झारखंड एवं भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। मगर वे कभी अपनी संस्कृति अपनी मिट्टी को नहीं भूले। आदिवासी पहचान और अस्मिता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले स्व. डॉ रामदयाल मुंडा को 86 वीं जयंती पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ एक राज्य स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के मैदान में किया जाता रहा है। रूमबुल (प्रतिध्वनि) नामक संस्था डॉ राम दयाल मुंडा के विचारों को आगे बढ़ती है। मुंडारी साहित्य परिषद द्वारा मुंडारी साहित्य सम्मान के साथ-साथ अन्य आठ जनजाति भाषाओं में विशेष योगदान करने वालों को हर वर्ष सम्मानित करती है।

कोल्हान की खबरें

गुरुजी और रामदास सोरेन को दी गयी श्रद्धांजलि

माइकल जॉन सभागार में कोल्हान स्तरीय श्रद्धांजलि सभा

गुरुजी को भारत रत्न दिलाने के लिए चलाया विशाल हस्ताक्षर अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। गुरुजी विचार मंच पूर्वी सिंहभूम के द्वारा बिस्टुपुर स्थित माइकल जॉन सभागार में कोल्हान स्तरीय विराट श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। रविवार को श्रद्धांजलि सभा में आंदोलन की बल पर झारखंड राज्य निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री सह झारखंड के मसीहा स्वर्गीय ढिशुम गुरु शिबू सोरेन और राज्य में जनता के साथ खरे रहने वाले पूर्व शिक्षा मंत्री सह घाटशिला के लोकप्रिय विधायक रहे स्वर्गीय रामदास सोरेन को नम आंखों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। गुरुजी विचार मंच के विराट श्रद्धांजलि सभा में अपने लोकप्रिय दोनो नेताओ के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए हजारों हजार की संख्या में कोल्हान सहित राज्य के अन्य जिले से सभी पार्टी के वरिष्ट नेता व कार्यकर्ताओं से साथ आमजनों की जनसैलाब उमड़ पड़ी।सभी दोनों महान नेताओं के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। मौके पर सभी ने उनके संघर्षमय जीवन, समाजसेवा और झारखंड की अस्मिता की रक्षा के लिए किए गए योगदान को याद किया। मौके पर गुरूजी विचार मंच की ओर से झामुमो केंद्रीय प्रवक्ता और पूर्व विधायक कुणाल षडंगी ने लोगों को मंच और उसके उद्देश्य की जानकारी दी। श्री षडंगी ने कहा दिशोम गुरु शिबू सोरेन और रामदास सोरेन राजनीति को कभी सत्ता का माध्यम नहीं समझा बल्कि इसे जनता की आवाज उठाने और समाज उत्थान की जरिया मानते थे। उनकी निष्ठा, सादगी और संघर्षशीलता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

गुरुजी विचार मंच का उद्देश्य : गुरुजी विचार मंच की स्थापना का मुख्य उद्देश्य दिशोम गुरु शिबू सोरेन की विचारधारा, संघर्ष और जनहित की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाना है। मंच का मानना है शिबू सोरेन ने राजनीति को कभी सत्ता का साधन नहीं, बल्कि समाज के दबे-कुचले वर्गों की आवाज उठाने का एक माध्यम बनाया। श्रद्धांजलि सभा में मंच की ओर से यह घोषणा की गयी आने वाले दिनों में पूरे झारखंड में ऐसे संगोष्ठियों और जनसभाओं का आयोजन कर गुरुजी के विचारों को युवाओं तक पहुंचाया जायेगा।

विधायक और मंत्रियों के विचार : झारखंड सरकार के राजस्व मंत्री दीपक बिरुआ ने कहा गुरुजी ने हमेशा वंचित और शोषित वर्गों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। आज उनके दिखाए मार्ग पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। विधायक संजीव सरदार ने कहा गुरुजी ने हमें सिखाया राजनीति से जनसेवा का मार्ग सत्ता का नहीं। विधायक मंगल कालिंदी ने कहा गुरु जी के मार्गदर्शन पर चलना ही पूरे राज्य में उनके सच्ची श्रद्धांजलि होगी।श्री कालिंदी ने कहा रामदास सोरेन ने शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। उनके अधूरे सपनों को पूरा करना हम सबकी जिम्मेदारी है। विधायक सविता महतो ने कहा गुरुजी जैसे नेता सदियों में एक बार मिलते हैं। उनकी सादगी और संघर्ष हम सबके लिए प्रेरणा है।

भारत रत्न की मांग : विराट श्रद्धांजलि सभा में गुरुजी को भारत रत्न सम्मान देने की माँग को लेकर एक विशाल हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। मौके पर उपस्थित लोगों ने उत्साहपूर्वक हस्ताक्षर किए और अपने संदेश लिखकर इस माँग को बल दिया। गुरुजी विचार मंच के अनुसार यह अभियान आगे भी पूरे राज्य में चलाया जाएगा। लाखों लाख हस्ताक्षर के बाद इसे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भेजे जाएंगे।

मौके पर गुरुजी विचार मंच के विराट श्रद्धांजलि सभा में झारखंड सरकार के राजस्व मंत्री दीपक बिरुआ, विधायक संजीव सरदार, विधायक मंगल कालिंदी, विधायक सविता महतो, विधायक सुखराम उरांव, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री दिनेश सारंगी, पूर्व सांसद सुमन महतो, पूर्व विधायक लक्ष्मण टुडू, अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष हिदायतुल्ला खान, उपाध्यक्ष ज्योति मथारू, ज़िला परिषद अध्यक्ष बारी मूर्मू, उपाध्यक्ष पंकज सिंहा, ज़िप सदस्य पारितोष सिंह,कांग्रेस जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे, कार्यकारी अध्यक्ष धर्मेंद्र सोनकर, पूर्व ज़िलाध्यक्ष विजय खान, उद्योगपति आरके अग्रवाल, लोयोला स्कूल के प्राचार्य फॉदर विनोद, एनआईटी डीएवी के प्राचार्य ओपी मिश्रा, एडीएल सोसाइटी, गुजराती सनातन समाज, उत्कल एसोसिएशन, सिख समाज, बंगभाषी समाज, पुलिस एसोसिएशन और जिला शिक्षक संघ के प्रतिनिधि सहित सैकड़ो आमजनों ने शामिल होकर दिवंगत नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित की।

लगातार बारिश से बढ़ा चांडिल डैम का जलस्तर, खोले गये 11 रेडियल गेट

आजाद सिपाही संवाददाता

चांडिल। झारखंड में लगातार हो रही बारिश से चांडिल डैम का जलस्तर तेजी से बढ़ गया है। रविवार को जलस्तर खतरे के करीब पहुंचने पर विस्थापित गांव के लोगों ने विधायक सविता महतो को फोन कर जानकारी दी। सूचना मिलने पर विधायक ने तुरंत प्रशासन से वार्ता कर गेट खोलने का आग्रह किया। इसके बाद डैम के 11 रेडियल गेट खोले गए, जिनमें 5 गेट को ढाई मीटर और 6 गेट को डेढ़ मीटर तक खोला गया। इस दौरान डैम का जलस्तर 181.22 मीटर दर्ज किया गया। गेट खुलने के बाद बड़ी मात्रा में पानी सुवर्णरेखा नदी में छोड़ा गया, जिससे नदी का बहाव और तेज हो गया। जलस्तर बढ़ने से निचले इलाकों में अलर्ट जारी किया गया। रविवार शाम विधायक सविता महतो स्वयं डैम के नीचे पुल पर पहुंचीं और स्थिति का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों से जलस्तर और सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ली। मौके पर झामुमो केंद्रीय सदस्य काबलु महतो, जिला सचिव बैधनाथ टुडू, धर्मु गोप, सुदामा हेम्ब्रम, राहुल वर्मा, दीनबंधु महतो, संजय हांसदा सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

फुटबॉल टूर्नामेंट में केएडी श्रीदुबक अमदंगर क्लब ने जीत हासिल की

आजाद सिपाही संवाददाता

चाकुलिया। चाकुलिया प्रखंड के बेंड पंचायत स्थित आमडांगरा गांव में केएडी श्रीदुबक अमदंगर क्लब की ओर से दो दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। रविवार को फाइनल मैच में मुख्य अतिथि विधायक समीर कुमार महंती के साथ झामुमो नेता अमर हांसदा और राजा बारीक भी उपस्थित हुए। आयोजन समिति के सुकलाल सोरेन, सनातन हेंब्रम, सुखेंदु किस्कू, रविन्द्र सोरेन, बालक सोरेन, विराम सोरेन, विक्रम सोरेन, शंभू सोरेन और अन्य सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया। मौके पर अतिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर व किक मारकर फाइनल खेल का शुभारंभ किया। फाइनल मैच में केएडी श्रीदुबक अमदंगर क्लब के टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। अतिथियों के द्वारा पुरस्कार में एक बड़ी खासी और ट्रॉफी सौपा गया। वहीं बाजार बेल्ट गिड़नी टीम उपविजेता रही। टीम को खासी व ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर झामुमो नेता अमर हांसदा, राजा बारीक, टुलू साव, मिथुन कर, बयाल किस्कू, प्रकाश गोप सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्तित रहे। मौके पर ग्रामीणों ने टूनामेंट को सफल बनाने में बढ़-चढ़कर योगदान दिया। इस दौरान पूरे क्षेत्र में उत्सव का माहौल देखने को मिला।

सरायकेला प्रशासन ने टोल प्लाजा पर वाहनों की जांच की

सरायकेला (आजाद सिपाही)। नगड़ी किसान आंदोलन की गूंज अब सरायकेला तक पहुंच गयी है। आंदोलन में शामिल होने जा रहे समर्थकों को लेकर प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया है। जिले के कांड्रा मोड़ स्थित टोल प्लाजा पर पुलिस ने विशेष जांच अभियान चलाते हुए वाहनों की सघन चेकिंग शुरू कर दी। पुलिस के अनुसार यह ड्राइव केवल नियमित जांच के लिए है और जिन गाड़ियों के पास वैध कागज नहीं मिल रहे, उनका चालान काटा जा रहा है।

कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान में पंचायत कमिटियों का विस्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

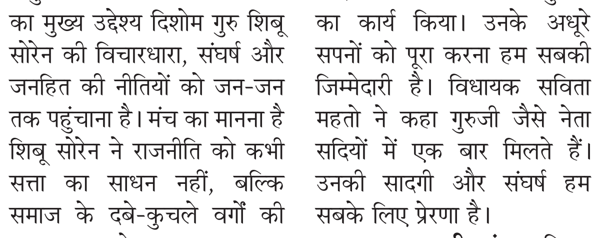

जमशेदपुर। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी और पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के आह्वान पर संगठन सृजन अभियान के तहत जमशेदपुर ग्रामीण प्रखण्ड के बागबेड़ा, करनडीह-घाघीडीह मंडल की तीन पंचायत कांग्रेस कमिटियों का विस्तार किया गया। इस अवसर पर नियुक्त पदाधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत कांग्रेस के जिला पर्यवेक्षक एवं झारखंड सरकार के अल्पसंख्यक आयोग के वाइस चेयरमैन ज्योति सिंह मथारू, कांग्रेस जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता प्रखण्ड अध्यक्ष आशीष ठाकुर ने की।जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे ने कहा कांग्रेस पार्टी अब गाँव स्तर पर संगठन को मजबूत बनाने में जुटी है और इसी क्रम में पंचायत कांग्रेस कमिटियों का विस्तार किया जा रहा है।श्री मथारू ने कहा कांग्रेस नेता राहुल गांधी लोकतंत्र को बचाने के लिए सड़कों पर संघर्षरत हैं।ऐसे में पंचायत स्तर के पदाधिकारी जनता के बीच जाकर कांग्रेस की विचारधारा को मजबूत करें और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर रहें।इस अवसर पर अखिलेश सिंह यादव, बागबेड़ा मंडल पर्यवेक्षक महेन्द्र कुमार पाण्डेय, जिला उपाध्यक्ष संजय सिंह आजाद, बागबेड़ा मंडल अध्यक्ष राजनारायण यादव, करनडीह-घाघीडीह मंडल अध्यक्ष रंजन सिंह, टाटानगर मंडल अध्यक्ष मनोज कुमार मिश्र मुन्ना, मंडल पर्यवेक्षक सुरज मुण्डा शामिल रहे। पंचायत स्तर पर नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान कर संगठन की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इनमें बागबेड़ा मध्य ग्राम पंचायत के अध्यक्ष करम दयाल मुण्डा, बागबेड़ा कॉलोनी ग्राम पंचायत के अध्यक्ष भवनाथ सिंह तथा पश्चिम किताडीह ग्राम पंचायत की अध्यक्ष सोनी कुमारी सहित अन्य उपाध्यक्ष, महामंत्री और पदाधिकारी शामिल रहे।

बारिश से मिट्टी का मकान ध्वस्त, परिवार बेघर

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश से ग्रामीणों की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। पिछले कई दिनों से रुक-रुककर हो रही वर्षा से खासकर कच्चे मकान बारिश की मार से बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। कई घर गिर चुके हैं, वहीं कई मकानों में दरारें आ गयी हैं। रविवार को मकरी पंचायत के बगही टोला निवासी फूलेंद्र राम का कच्चा मकान अचानक ढह गया। घर गिरने से उसमें रखा जरूरी सामान भी मलबे के नीचे दबकर पूरी तरह नष्ट हो गया है। घटना की जानकारी मिलते ही प्रखंड उप प्रमुख पिंटू टोपनो मौके पर पहुंचे। उन्होंने पीड़ित परिवार से मुलाकात कर हरसंभव मदद दिलाने का भरोसा दिलाया। उप प्रमुख ने कहा कि मामले की सूचना संबंधित विभाग और प्रशासन को दी जायेगी तथा पीड़िता को सरकारी प्रावधानों के तहत मुआवजा उपलब्ध कराने की पहल की जायेगी।

संविधान के 130वें संशोधन के विरोध में झामुमो ने किया केंद्र सरकार का पुतला दहन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। संविधान में प्रस्तावित 130वें संशोधन के खिलाफ झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने रविवार को गढ़वा के रंका मोड़ पर जोरदार विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार पर जनविरोधी नीतियां थोपने का आरोप लगाते हुए टाउन हॉल के मैदान से रंका मोड़ तक शवयात्रा निकालकर पुतला दहन किया और जमकर नारेबाजी की। झामुमो जिला अध्यक्ष शंभू राम का कहना है कि यह संशोधन न केवल संविधान की मूल आत्मा से छेड़छाड़ है, बल्कि संघीय ढांचे पर सीधा हमला है। पार्टी नेताओं ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार राज्यों के अधिकारों को लगातार कमजोर कर रही है और संवैधानिक संस्थाओं को अपने राजनीतिक हितों के अनुसार इस्तेमाल कर रही है। जिला सचिव शरीफ अंसारी ने कहा कि

संविधान बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की दूरदृष्टि और करोड़ों भारतीयों के संघर्ष का परिणाम है। केंद्र सरकार बार-बार उसमें बदलाव कर जनता की आवाज को दबाने की कोशिश कर रही है। 130वां संशोधन इसी कड़ी का हिस्सा है, जिसे झामुमो किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा। विगत कुछ वर्षों में हुए घटनाक्रम में जनता ने देखा है कि किस रूप में केंद्र सरकार ने राज्यों को अस्थिर करने का हर संभव प्रयास किया है। चुने हुए मुख्यमंत्री को बिना किसी कारण के 5 महीने तक जेल में रखा गया था। इस विधायक को पास कर केंद्र की सरकार सरकारी एजेंसी का दुरुपयोग करते हुए किसी भी राज्य की चुनी हुई सरकार पर झूठा आरोप लगाकर उसके मुख्यमंत्री को जेल भेज सकती है तथा जेल जाते ही भाजपा के द्वारा विपक्षी पार्टियों को तोड़ने और सरकार को अस्थिर करने का खेल शुरू हो जायेगा। विगत एक दशक में केंद्र सरकार ने ऐसे कई कारनामे किये हैं। इस विधायक से विपक्ष ही नहीं बल्कि भाजपा के सहयोगी पार्टियों लिए भी खतरा है। जो लोग भी गठबंधन तोड़कर बाहर जाने का प्रयास करेंगे, उनके नेता को फर्जी मुकदमे में फंसा कर जेल भेज दिया जायेगा। प्रदर्शन के दौरान झामुमो कार्यकर्ताओं ने जनता से अपील की कि वे इस संशोधन के खिलाफ एकजुट हों। पार्टी ने चेतावनी दी कि यदि केंद्र सरकार इस संशोधन को वापस नहीं लेती है, तो राज्यभर में आंदोलन को और तेज किया जायेगा। कार्यक्रम में शम्भू राम, शरीफ अंसारी, तनवीर आलम खां, मनोज कुमार ठाकुर, जवाहर पासवान, अनिता दत, धीरज दुबे, निलु खां, फुजैल अहमद, अरविंद यादव, रंथा नायक, वसीम खां, संजय सिंह छोटू, फरीद खां, धनंजय तिवारी, मुजीबुर रहमान, बब्लु तिवारी, शफीक अंसारी, जब्बार खां, दिव्य प्रकाश केसरी, आशीष अग्रवाल, रेखा चौबे, आराधना सिंह, नवीन तिवारी, राजन उरांव आदि मौजूद थे।

मोबाइल से न बिगाड़ें भविष्य, ज्ञान और कौशल में करें निवेश : संजय कुमार पांडेय

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने किया युवा सुपर-100 कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार युवा प्रकोष्ठ के निर्देशन में जिला स्तरीय एक दिवसीय युवा सुपर 100 कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन बीएसकेडी पब्लिक स्कूल के सभागार में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार पांडेय, विशिष्ट अतिथि शंभूनाथ दुबे, प्रांतीय युवा सदस्य नीरज कुमार महतो, प्रियरंजन कुमार, सुरेश कुमार, रामजी गुप्ता, मुख्य प्रबंध ट्रस्टी संजय सोनी, जिला समन्वयक विनोद पाठक एवं युवा समन्वयक वीरेंद्र सोनी ने संयुक्त रूप से मां गायत्री, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता के तस्वीर के समक्ष पुष्प अर्पित कर

अखंड ज्योति एवं दीप प्रज्वलित कर किया। शिविर में संगीतज्ञ अशोक विश्वकर्मा ने एक से बढ़कर एक गुरु वंदना गीत गाकर उपस्थित लोगों का मंत्रमुग्ध कर दिया। शिविर की शुरूआत गायत्री परिवार के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी संजय सोनी के स्वागत भाषण से किया गया। उन्होंने कहा कि आज का यह प्रशिक्षण युवाओं को सही दिशा देने का काम करेगा और युग परिवर्तन में युवाओं के लिये मील का पत्थर साबित होगा। एसडीएम संजय कुमार पांडेय ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर कोई तनावग्रस्त है। ऐसे में सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि हम अपने स्वास्थ्य और आत्म-विकास पर ध्यान दें। उन्होंने युवाओं को मोबाइल के दुरुपयोग से बचने की सलाह देते हुए कहा कि मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने युवाओं को सुविधाएं तो दी हैं, लेकिन इसके कारण उनका कीमती समय और ऊर्जा बर्बाद हो रही है। प्रांतीय युवा सदस्य सुरेश कुमार ने कहा जोश, उत्साह, उमंग एवं कार्य करने की क्षमता से भरा होना ही युवा है। युवाओं को भाग्य नहीं, कर्म पर विश्वास होना चाहिए। शिविर में शंभूनाथ दुबे, नीरज कुमार महतो, प्रियरंजन कुमार,रामजी गुप्ता,संजय सोनी व कार्तिका कुमारी आदि ने संबोधन किया।

कांडी थाना में असफाक आलम ने संभाला पदभार

कांडी (आजाद सिपाही)। कांडी थाना में नये थाना प्रभारी के रूप में असफाक आलम ने शनिवार को पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व वे जिले के रमना थाना में प्रभारी पद पर पदस्थापित थे। असफाक आलम 2018 बैच के अधिकारी हैं। पदभार ग्रहण के बाद मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र को भय और अपराध मुक्त बनाना उनकी पहली प्राथमिकता होगी। साथ ही थाना से जुड़े मामलों का शीघ्र निष्पादन और पुलिस-पब्लिक के बीच विश्वास बहाली उनकी कार्ययोजना का अहम हिस्सा रहेगा। रविवार को युवा समाजसेवी बाबू खान ने थाना पहुंचकर नए प्रभारी का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। वहीं घटहुआं कला पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि अरुण कुमार राम, उप मुखिया संतोष कुमार गुप्ता, लादेन खान और सुनील चौहान ने भी गुलदस्ता भेंट कर नये थाना प्रभारी का अभिनंदन किया।

हासनदाग दुर्गा पूजा समिति का गठन, अध्यक्ष विनय चौधरी और अविनाश बने कोषाध्यक्ष

मेराल (आजाद सिपाही)। दुर्गा पूजा महोत्सव धूमधाम एवं शांतिपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर रविवार को हासनदाग देवी धाम परिसर में पूर्व मुखिया दुखन चौधरी की अध्यक्षता में ग्रामीणों की एक बैठक हुई। जिसमें हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दुर्गा पूजा में वाराणसी के विद्वानों द्वारा दुर्गा सप्तशती एवं श्री रामचरितमानस नवाह पारायण पाठ तथा रात्रि में रामलीला कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। कार्यक्रम संचालन के लिए सर्वसम्मति से दुर्गा पूजा समिति का पुनर्गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से विनय कुमार चौधरी को अध्यक्ष बनाया गया जबकि रमेश चंद्रवंशी को सचिव, अविनाश कुमार चौबे उर्फ बिट्टू को कोषाध्यक्ष, अनिल कुमार चौधरी को मंच संचालक नियुक्त किया गया। वही संजय चौधरी, देवनाथ चौधरी, उपध्या राम, मुकेश चौधरी, राकेश चौधरी तथा मुकेश ठाकुर को उपाध्यक्ष तथा संरक्षक के रूप में बीडीसी नंदू चौधरी, मुखिया पति हरेंद्र चौधरी, पूर्व मुखिया दुखन चौधरी, रामप्रवेश चंद्रवंशी पूर्व जीप सदस्य रामनरेश चौधरी, आशुतोष चौबे, सेवानिवृत शिक्षक सुरेंद्र चौबे, कोमल चौधरी, सुदर्शन विश्वकर्मा, राजबलि चौधरी, विवेकानंद चौबे, अरुण चौबे, मथुरा चौधरी, इलायची राम को नामित किया गया। साथ ही 21 लोगों को सक्रिय सदस्य बनाया गया जिसमें द्वारिका चौधरी, राजेंद्र चौधरी, मनोहर, मुकुंद चौधरी, चंद्रिका राम, मनीष ठाकुर, जगनारायण ठाकुर, विनोद चौधरी, आरकेश चंद्रवंशी, बीरैंची चौधरी, धनंजय चौधरी, मलू चौधरी, शंकर बैठा आदि का नाम शामिल है।

लगातार बारिश से कच्चा मकान धराशायी

हरिहरपुर(आजाद सिपाही)। बीते पांच दिनों से हो रही लगातार बारिश ने आम जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। कच्चे घरों में रहने वाले लोग सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। इसी क्रम में शनिवार की रात मझिगावां पंचायत के बबुराहा टोला निवासी विकास कुमार पासवान का खपड़ैल मकान बारिश के कारण अचानक धराशाई हो गया। मकान गिरने के समय घर के अंदर विकास पासवान की पत्नी शिला देवी (25 वर्ष) अपने तीन छोटे बच्चों देवा पासवान (6 वर्ष), मधु कुमारी (3 वर्ष) और लक्ष्मी कुमारी (2 वर्ष) के साथ मौजूद थीं। गनीमत रही कि हादसे में सभी लोग सुरक्षित बच गये। विकास पासवान वर्तमान में मजदूरी करने दूसरे राज्य में गए हुए हैं। शिला देवी ने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। ऐसे में घर की मरम्मत कराना संभव नहीं है। उन्होंने प्रशासन से मदद की गुहार लगाते हुए कहा कि यदि सरकार से कुछ सहायता मिल जाये तो मैं अपने बच्चों के साथ निर्भय होकर रह सकूं। गौरतलब है कि पिछले कई दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश के कारण क्षेत्र के आम लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

श्राद्ध कर्म हेतु मुखिया ने किया आर्थिक सहयोग

केतार (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के मुकुन्दपुर पंचायत अंतर्गत आदिवासी बहुल टोला मायर निवासी दिनानाथ सिंह के पिता लक्ष्मण सिंह के श्राद्ध कर्म में मुखिया मुंगा साह ने आर्थिक सहयोग किया। ग्रामीणों ने इस नेक कार्य के लिए मुखिया मुंगा साह के प्रति आभार प्रकट किया। ग्रामीणों ने कहा कि मुखिया के दुःख की घड़ी में हमेशा खड़े रहते हैं।इस मौके पर सुनील साह, संतोष कमलापुरी, ओमनारायण गुप्ता, रघुवीर चंद्रवंशी, शुशील कुमार, हरेंद सिंह, रमेश सहित कई ग्रामीण उपस्थित रहे।

कांडी प्रखंड का हेठार इलाका तीसरी बार बाढ़ में डूबा

किसानों की फसलें हुईं चौपट, जिला प्रशासन करे नुकसान का आकलन : धीरज

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा ज़िले के कांडी प्रखंड अंतर्गत हेठार इलाका इस वर्ष तीसरी बार बाढ़ की चपेट में आ गया है। लगातार बारिश और नदियों के उफान के कारण गांवों में पानी घुस गया है, जिससे स्थानीय किसानों की तैयार फसलें बर्बाद हो गईं। धान, मक्का और दलहन जैसी मुख्य फसलों के खेत पानी में डूब जाने से ग्रामीणों के सामने गंभीर संकट खड़ा हो गया है। खेतों में महीनों की मेहनत पलक झपकते ही बर्बाद हो जाने से किसान मायूस और हताश हैं।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि यह तीसरी बार है जब कुछ ही

महीनों के भीतर बाढ़ का प्रकोप झेलना पड़ा है। कई गांवों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। खेतों में जमा पानी की वजह से न केवल फसलें नष्ट हो रही हैं, बल्कि मवेशियों के चारे की भी भारी कमी हो गयी है। लोग बताते हैं कि अगर तत्काल राहत और मुआवजे की व्यवस्था नहीं की गई तो किसानों के सामने जीविका संकट गहराता जायेगा।

इस मसले पर झामुमो मीडिया पैनलिस्ट सह केंद्रीय सदस्य धीरज दुबे ने जिला प्रशासन से फसलों के नुकसान का तत्काल आंकलन कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि हेठार इलाका बार-बार बाढ़ की चपेट में आ रहा है, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर ठोस कदम उठते नजर नहीं आ रहे। किसानों की हालत बेहद दयनीय है। जिला प्रशासन को तुरंत विशेष टीम भेजकर नुकसान का सर्वे कराना चाहिए और प्रभावित किसानों को मुआवजा उपलब्ध कराना चाहिए।

धीरज ने आगे कहा कि राज्य और केंद्र सरकार को मिलकर ऐसी दीर्घकालिक योजना तैयार करनी चाहिए, जिससे हर वर्ष किसानों को इस तरह की आपदा से जूझना न पड़े। श्री दुबे ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मांग किया कि सोन-कोयल तटीय इलाके में नदी किनारे तटबंध बनाया जाये, ताकि कृषि योग्य भूमि का कटाव बंद हो एवं सैकड़ो एकड़ कृषि योग्य भूमि नदी में समाहित होने से बचाया जा सके।

दो दिवसीय पेसा कानून प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

आजाद सिपाही संवाददाता

भंडरिया। प्रखंड सभागार में रविवार को दो दिवसीय पेसा कानून प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में प्रखंड के महिला एवं पुरुष वार्ड सदस्य, ग्राम प्रधान और पंचायत प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) अमित कुमार के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इससे पूर्व 22, 23 एवं 24 अगस्त को महिला वार्ड सदस्यों के लिए तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया गया था, जिसमें महिला प्रतिनिधियों को उनके अधिकारों, जिम्मेदारियों एवं कार्य प्रणाली की गहन जानकारी दी गयी थी। उस दौरान भी पेसा कानून के महत्व और इसके लाभ के बारे में विस्तार से बताया गया। प्रशिक्षक अनूप तिवारी ने पेसा कानून की पृष्ठभूमि, इसके निर्माण वर्ष, लागू

होने के उद्देश्य और ग्राम स्तर पर इसकी भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पेसा कानून का उद्देश्य आदिवासी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम सभा को सशक्त बनाना और स्थानीय स्वशासन को मजबूत करना है। इस कानून के तहत ग्राम सभा को निर्णय लेने, संसाधनों के संरक्षण और गांव से संबंधित विकास योजनाओं में सहभागिता का अधिकार प्राप्त है। वहीं पिंकी कुमारी ने सशक्त पंचायत और महिला नेत्रित्व पर मिश्रित जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महिलाएं यदि पंचायत स्तर पर सक्रिय और जागरूक होंगी तो गांव के विकास कार्यों में पारदर्शिता और तेजी दोनों आयेगी। प्रशिक्षण को सफल बनाने में मोनिका राज (प्रखंड समन्वयक पंचायती राज), सनी कुमार (बीपीएम), जयप्रकाश गुप्ता बीपीएमयू (बी.के.) का विशेष योगदान रहा। उन्होंने विभिन्न सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को व्यावहारिक उदाहरणों और समूह चर्चा के जरिए पेसा कानून को समझने का अवसर प्रदान किया। इससे वे गांव की समस्याओं का समाधान बेहतर तरीके से कर सकते हैं और योजनाओं को पारदर्शिता के साथ लागू कर सकते हैं।

बीडीओ अमित कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि पेसा कानून वास्तव में ग्रामीण लोकतंत्र की आत्मा है। इस कानून के तहत ग्राम सभा को जो अधिकार मिले हैं, वे गांव के विकास को गति देने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों से अपील की कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को व्यवहारिक रूप में उतारें और गांव की बेहतरी में इसका उपयोग करें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्राम प्रधान सुमित कुमार मिंज, संजय सिंह, मानदेव सिंह, राजेंद्र माझी, बुधराम माझी, प्रेम सिंह, कोमल सिंह, रमेश सिंह, जय गोविंद राम, यदुनाथ सिंह उपस्थित रहे। साथ ही महिला वार्ड सदस्यों में रजनी लकड़ा, तारावती देवी, उषा देवी, आश्रिता लकड़ा, कलावती देवी, मीना देवी ने सक्रिय भागीदारी की कार्यक्रम में शामिल सभी प्रतिभागियों ने इस पहल की सराहना की।

आरके पब्लिक स्कूल उचरी में करियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन

मंझिआंव (आजाद सिपाही)। उचरी स्थित आरके पब्लिक स्कूल में रविवार को 10वीं कक्षा के छात्रों के लिए करियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। सीआरपीएफ के सब-इंस्पेक्टर एसडी सिंह ने छात्रों को सशस्त्र बलों में करियर के विभिन्न विकल्पों के बारे में जानकारी दी। श्री सिंह ने भारतीय सेना, वायु सेना, नौसेना और अर्धसैनिक बलों में शामिल होने की प्रक्रिया, आवश्यक योग्यताएं, और पदोन्नति के अवसरों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इंजीनियरिंग, मेडिकल, सिविल सेवा, होटल मैनेजमेंट, बिजनेस मैनेजमेंट, चार्टर्ड अकाउंटेंसी, और कानून जैसे अन्य करियर विकल्पों पर भी प्रकाश डाला। छात्रों को अपने सवाल पूछने का पूरा मौका दिया गया, और श्री सिंह ने उनके सभी संदेहों को दूर किया। इस सत्र से प्रेरित होकर कई छात्रों ने भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। स्कूल के प्रिंसिपल, केआर झा ने एसडी सिंह को शॉल और एक पौधा भेंट कर सम्मानित किया। प्रिंसिपल ने 10वीं कक्षा के छात्रों के लिए इस उपयोगी सत्र के लिए श्री सिंह का आभार व्यक्त किया। स्कूल के डायरेक्टर और प्रसिद्ध शिक्षाविद, श्री अलख नाथ पांडे ने इस कार्यक्रम के सफल आयोजन पर खुशी व्यक्त की और उम्मीद जतायी कि यह छात्रों को सही दिशा देगा। इस अवसर पर 10वीं कक्षा के सभी छात्र और शिक्षक उपस्थित थे।

रंका में ब्रह्म विद्या विहंगम योग संस्थान की बैठक

रंका (आजाद सिपाही)। रंका अनुमंडल मुख्यालय में 23 अगस्त 2025 को ब्रह्म विद्या विहंगम योग संस्थान की बैठक आयोजित हुई। बैठक का शुभारंभ संस्था के झारखंड प्रदेश अन्न मंत्री उपेंद्र नाथ मिश्रा एवं जिला सह संयोजक सुरेंद्र विश्वकर्मा ने संयुक्त रूप से सद्गुरु देव के तस्वीर पर अखंड दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया गया। इस अवसर पर उपेन्द्र नाथ मिश्रा ने कहा कि आगामी 6 सितंबर 2025 को गढ़वा जिले के भवनाथपुर सिंदुरिया आश्रम एवं बोकारो स्टील माइंस महाविद्यालय टाउनशिप में संत प्रवर विज्ञान देव जी महाराज का पदार्पण होने जा रहा है। यह यात्रा कार्यक्रम आत्म जागरण से राष्ट्र जागरण , स्वर्वेद संदेश यात्रा एवं आगामी 25-26 नवंबर 2025 को भारत आध्यात्मिक राजधानी वाराणसी स्थित स्वर्वेद महामंदिर धाम के प्रांगण में ऐतिहासिक 25000 कुंडीय विश्व शांति वैदिक महायज्ञ का संदेश देने के लिए हो रहा है। उन्होंने कहा कि सद्गुरु देवों के बदौलत मेरा भारत विश्व गुरु था, है और रहेगा। इस मौके पर सरयु प्रसाद अग्रवाल, अनिल शाह, चंदेश्वर प्रसाद, परशुराम विश्वकर्मा, रामलाल ठाकुर, राम प्रताप अग्रवाल, नारायण शाह, परमानंद यादव, प्रतिमा देवी, शीला देवी, आशा देवी, उषा देवी, द्वारका प्रसाद, दिनेश प्रसाद, सत्येंद्र यादव, प्रदीप कुमार, अरुण यादव, राजू ठाकुर, ओमप्रकाश ठाकुर, सुरेंद्र ठाकुर, ओम प्रकाश यादव, श्रीराम ओझा, आशीष, विकास सहित काफी संख्या में शिष्य गुरू भाई बहन उपस्थित थे।

कांडी प्रखंड क्षेत्र में एसडीएम ने 225 बोरा यूरिया का अवैध स्टॉक पकड़ा

एहतियातन गोदाम सील, डीएओ व सीओ को दिए कार्रवाई के निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। रविवार को गढ़वा अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने कांडी प्रखंड क्षेत्र में खाद-बीज की कालाबाजारी को लेकर छापेमारी की। इस छापेमारी के दौरान कांडी मुख्य बाजार स्थित आयुष खाद बीज भंडार (संचालक संजय कुमार प्रसाद) की दुकान के पीछे कुछ दूरी पर एक गोदाम नुमा कमरे को देखा तो उन्हें संदेह हुआ। दरवाजों की चौखट के नीचे से मोबाइल घुसा कर वीडियो रिकार्डिंग के माध्यम से देखा गया तो वहां पीले पीले रंग की बोरियां वीडियो में दिखाई दीं। इस पर अविलंब गोदाम को खुलवाया गया तो भारी मात्रा में यूरिया का अवैध भंडारण पाया गया। दरअसल जब एसडीएम के

निर्देश पर थाना प्रभारी कांडी मोहम्मद अशफाक आलम की मौजूदगी में संदिग्ध कमरे को खुलवाया गया तो लगभग 225 बोरा से अधिक यूरिया मिला। पूछताछ में पहले दुकानदार ने गुमराह करने का प्रयास किया, कभी कहा कि यह डालटेनगंज के किसी व्यक्ति का है, कहा कि एक अन्य व्यक्ति राजेश शुक्ला का यह भंडार है, किंतु जब उनसे पूछा गया कि इस गोदाम की चाबी आपके पास कहां से आयी तो दुकानदार ने स्वीकार किया कि उनका यह स्टॉक दो माह पूर्व सेठी स्टोर से आया था, जिसे बेचने की बजाय ऐसे ही ऑनलाइन तथा ऑफलाइन स्टॉक शून्य दिखा दिया। इस अवैध भंडारण के पीछे ओवर प्राइसिंग और कालाबाजारी की मंशा प्रथम द्दष्टया प्रमाणित हुई।

छापेमारी होते देखकर बड़ी संख्या मे एकत्र हुये ग्रामीणों ने बताया कि इस दुकानदार द्वारा किसानों को 1000 रुपये में यूरिया और जाइम बाल्टी संयुक्त रूप से बेची जा रही थी। मौके पर मौजूद शिवरी निवासी ललन पासवान तथा रतनगढ़ निवासी राकेश कुमार सिंह ने एसडीओ को बताया कि इस दुकानदार ने चार दिन पहले उन्हें 500 रुपये में यूरिया खाद की 1 बोरी तथा 500 रुपये में जाइम की बाल्टी दी थी। मामले को गंभीर मानते हुए एसडीएम ने मौके पर ही खाद विक्रेता के इस गोदाम को सील करा दिया एवं चाबी कांडी प्रखंड के नाजिर को सौंप दी। साथ ही अंचल अधिकारी कांडी को संबंधित विक्रेता पर प्राथमिकी दर्ज कराने तथा जिला कृषि पदाधिकारी को स्टॉक अपने अधीन लेकर नियमानुसार निस्तारण कराने का निर्देश दिया। एसडीएम संजय कुमार ने कहा कि उपायुक्त के निर्देश पर पूरे जिले में खादझबीज की कालाबाजारी रोकने हेतु लगातार अभियान चलाया जा रहा है। किसानों का हक मारकर लालचवश कालाबाजारी करने वाले बख्शे नहीं जायेंगे। इस दौरान कांडी थाना के पुलिस बल एवं बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीण मौजूद थे। वहां मौजूद ग्रामीणों ने एसडीएम द्वारा की गयी कार्रवाई से खुशी जाहिर की।

सोनडीहा में छापेमारी: प्रति बोरी 750 रुपये की दर से बेचा जा रहा था यूरिया खाद

सगमा (आजाद सिपाही)। गढ़वा जिला अंतर्गत सगमा के सोनडीहा गांव से एक अहम खबर सामने आयी है, जहां बीडीओ विमल कुमार सिंह ने गुप्त सूचना के आधार पर एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। इस कार्रवाई में सोनडीहा गांव निवासी जीतेंद्र गुप्ता के घर से 15 बोरी यूरिया खाद जब्त किया गया है। यह खाद अवैध रूप से संग्रहित किया गया था और इसे बाजार दर से अधिक कीमत पर बेचे जा रही थी तैयारी थी। सूचना मिलने के बाद वीडियो विमल कुमार सिंह ने टीम के साथ तत्काल छापेमारी की। छानबीन के दौरान यह पता चला कि आरोपी व्यक्ति 15 बोरी यूरिया खाद को 750 रुपये प्रति बोरी की दर से बेच रहा था, जो कि सरकारी दर से अधिक है। यह मामला साफ तौर पर कालाबाजारी और किसानों के शोषण का है। जब्त की गयी खाद को पंचायत सचिवालय में सुरक्षित रूप से रखवा दिया गया है और मामले की जांच शुरू कर दी गयी है। बीडीओ विमल कुमार सिंह ने स्पष्ट कहा कि ऐसे मामलों में किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जायेगा और आवश्यकतानुसार कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

एनएलसी नॉर्थ धाधु कोल परियोजना को ग्रामीणों ने जमीन नहीं देने का लिया निर्णय

मुकेश कुमार सिंह

लातेहार (आजाद सिपाही)। लातेहार जिले के बालूमाथ प्रखंड अंतर्गत ग्राम गेरेंजा नॉर्थ धाधु कोल परियोजना एनएलसी कंपनी पर ग्रामीणों ने आरोप लगाया। आवेदन के माध्यम से लातेहार उपायुक्त को पत्र के माध्यम से कहा है कि कंपनी गैर कानूनी तरीके से परियोजना क्षेत्र में गतिविधि कर रही है। इस दौरान ग्रामीणों को कंपनी दलालों के माध्यम से डरा धामका रही है। भूमि अधिग्रहण करने का प्रयास भी करने का काम कर रही है। कोल परियोजना का पूरा क्षेत्र पांचवी अनुसूची के अंतर्गत आता है। कंपनी के द्वारा ग्राम सभा में कोई अनुमति ग्रामीणों से नहीं लिया जाता है और दलालों के माध्यम से फर्जी तरीके से ग्राम सभा का पेपर दिखाया जाता है। ग्रामीण जब पूछते हैं तो कंपनी के लोगों के द्वारा गोली

चलाने की भी धमकी दी जाती है। इस क्षेत्र के लोग खेती और मजदूरी का काम ज्यादातर लोग करते हैं। इस दौरान कंपनी के लोग गांव में घुसकर महिलाओं को तथा बच्चों को धमकाया करते हैं। ग्रामीण महिला पुरूष विरोध करते हैं तो उन्हें जेल भेजवा देने का और गोली चला देने का धमकी कंपनी के लोगों के द्वारा दिया जाता है। इधर ग्रामीण उपायुक्त लातेहार से कहते हैं कि यहां जो भी भूमि है वह खेती योग्य भूमि है। यहां साल भर खरीफ फसल रबी फसल और गरमा फसल उगते हैं। जो आजीविका का मुख्य स्त्रोत खेती तथा पशुपालन किया जाता है। परियोजना के सैकड़ो एकड़ वन जंगल है। जिसमें साल, महुआ, करंज,आम,नीम केंद्र जैसे अनेक प्रकार के वन उत्पादन होने वाले वृक्ष ज्यादातर देखने को मिलेंगे। इन सभी चीजों से यहां के लोग का जीविकोपार्जन किया जाता है। अगर यहां एनटीपीसी कंपनी के द्वारा कोयले की खनन की जाती है तो सैकड़ो एकड़ भूमि वन क्षेत्र पूरी तरह रेगिस्तान बन जायेगा। परियोजना से वन क्षेत्र पूरी तरह से बर्बाद हो जायेगा। परियोजना क्षेत्र से विस्थापित प्रभावित लोगों की और से एनएलसी जैसी कंपनी जो पांचवी अनुसूची के अंतर्गत ग्राम सभा के अधिकारों का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन और जबरन डरा धमका कर चंद दलालों के माध्यम से भूमि अधिग्रहण का प्रयास हमेशा करते आ रही है। इस पर लातेहार उपायुक्त से आग्रह है कि इसे तत्काल रोक लगाया जाये। हम सभी ग्रामीण उनका आभार व्यक्त करेंगे। उसके साथ ही उपायुक्त के आदेश पर कंपनी तत्काल सभी तरह के कार्य को बंद करें वही इस कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम प्रधान परमेश्वर गंझु के द्वारा किया गया। इस अवसर पर शंकर उरांव, नंदकुमार यादव, रामलाल उरांव, लखन उरांव, पवन उरांव, संजय यादव, पवन यादव, प्रदीप उरांव, विजय गंझु, दा ले उरांव, कामेश्वर उरांव, रामेश्वर उरांव, रमेश यादव, बीरनदेव उरांव समेत सैकड़ो महिला-पुरुष इस कार्यक्रम में मौजूद थे।

राज्य में लव-कुश समाज राजनीतिक भागीदारी के लिए आगे आये : सुदेश महतो

लोहरदगा में लव कुश जयंती समारोह का भव्य आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। स्थानीय नगर भवन में लव कुश महासभा लोहरदगा के द्वारा लव कुश जयंती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सूबे के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो, डॉ देवशरण भगत, समाज के जिलाध्यक्ष शैलेश कुमार, अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अभय कुमार महतो, राजेश महतो, पंकज महतो, ललित महतो, विकास कुमार, संगीता देवी, कमलेश कुमार आदि ने लव कुश के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर समारोह की शुरूआत किया।

इस दौरान शिक्षा, कला, उद्योग समेत विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाज के लोगों को सम्मानित किया गया। लव कुश समाज के मेधावी और प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को भी सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया। मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की रंगारंग प्रस्तुति किया गया। समाज के प्रतिभावान बालक बालिकाओं ने परंपरागत धार्मिक संगीत पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया।

मौके पर पूर्व डिप्टी सीएम सुदेश महतो ने समाज के लोगो को आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से सशक्त होने के लिए उर्जा का संचार किया। कहा, राज्य में लव कुश समाज समेत एक बड़े वर्ग को वर्तमान सरकार अपेक्षित करके रखा है। समय आ गया है सामाजिक न्याय वाले सभी समाज राजनीतिक भागीदारी के लिए चिंतन करें। उपेक्षित समाज को अपनी राजनीतिक क्षमता व ताकत को दिखाने की जरूरत है। शैक्षणिक, सामाजिक , आर्थिक के साथ राजनीतिक चिंतन की जरूरत है। राजनीति में जवाबदेही तय करने की जरूरत है।

लव कुश महासभा के जिला अध्यक्ष शैलेश कुमार ने कहा कहा कि मेहनती और ईमानदार लव कुश समाज का वर्तमान में अपेक्षित विकास नहीं हुआ है। सभी को एकसूत्र में बंधने की जरूरत है।

प्रदेश अध्यक्ष अभय महतो ने कहा आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करना होगा। मंच संचालन गुलशन कुमार ने किया कार्यक्रम में धर्मराज महतो, राजेश महतो, शंकर कुमार, विक्की कुमार, संगीता देवी, रामकुमार बबलू, मनीष कुमार, सुनील मेहता, राजन मेहता, उपेंद्र कुमार कुशवाहा, संतोष महतो, दीपक महतो अतिथि के रूप में डॉ देवशरण भगत, सूरज अग्रवाल, रामलखन साहू समेत लवकुश समाज के शहरी और ग्रामीण इलाके के स्त्री पुरुष और बच्चे बड़ी संख्या में मौजूद थे।

वर्षा ने खोली नगर परिषद की पोल : अनिल उरांव

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। भाजपा जिला समिति उपाध्यक्ष अनिल उरांव ने बयान जारी कर कहा कि, झारखंड में कांग्रेस, जेएमएम की लगभग 6 वर्षों से सरकार चल रही है बावजूद, विकास का कोई काम नजर नहीं आ रहा है। नगर परिषद में भी पूरे पांच वर्ष कांग्रेस के ही अध्यक्ष और उपाध्यक्ष रहे और उनके द्वारा भी जो काम किया गया वो भी साफ साफ दिखाई दे रहा है। शहर में चारों तरफ पानी भर गया है। शहर के लोगों के मकानो और दुकानो में वर्षा का पानी घुस रहा है। पानी के निकासी के लिए अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के कार्यकाल में कोई व्यवस्था नहीं किया गया। चारों तरफ जहां तहां पानी जमा होने के कारण मच्छरों का प्रकोप बहुत बढ़ गया है। जिसको दूर करने के लिए फोगिंग की भी उचित व्यवस्था नहीं किया

जा रहा है। शहर के चारों तरफ गली मुहल्ले में कचरा उठाने वाला कोई नहीं है। केवल मेन रोड से ही कचरा उठाव हो रहा है। पिछले कई सालों से शहर में चारों तरफ गली मुहल्ले में अंधेरा छाया हुआ है। जिसके लिए भेपर लाइट की कोई व्यवस्था नहीं किया गया है। लोहरदगा शहर के लोग नर्क जैसा जीवन जीने को मजबूर हैं। लोहरदगा में कांग्रेस का विधायक, सांसद होने के साथ कांग्रेस सरकार में भी है। बावजूद ये लोग यहां के लोगों को उनके बुरे हाल में मरने के लिए छोड़ दिये है।

अजीविका महिला संकुल संगठन के कार्यालय से कंप्यूटर की चोरी

बालूमाथ (आजाद सिपाही)। बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय स्थित आजीविका महिला संकुल संगठन के कार्यालय में अज्ञात चोरों ने चोरी की बड़ी वारदात को अंजाम दिया। चोरों ने कार्यालय का दरवाजा तोड़कर कंप्यूटर सेट समेत हजारों रुपये मूल्य का सामान चोरी कर लिया और मौके से फरार हो गए। इस संबंध में अग्नि कुमारी, पिता स्व. रघनु बड़ाइक, ग्राम सेमर बुढ़नी, (वर्तमान में जेएसएलपीएस बालूमाथ में सीसी पद पर कार्यरत) ने बालूमाथ थाना में लिखित शिकायत दर्ज करायी है। उन्होंने बताया कि शनिवार सुबह करीब 10:15 बजे जब वे कार्यालय पहुंचीं तो दरवाजा टूटा हुआ मिला। अंदर जाकर देखने पर पता चला कि कार्यालय उपयोग हेतु रखा गया कंप्यूटर सेट चोरी हो गया है। इसकी सूचना तत्काल संगठन के अध्यक्ष एवं सचिव को दी गई। जिसके बाद थाने में आवेदन सौंपा गया।

जमीरा में स्वर्गीय फूलदेव उरांव मेमोरियल फुटबॉल टूर्नामेंट शुरू

फूलदेव उरांव ने क्षेत्र में फुटबॉल के विकास के लिए सराहनीय योगदान दिया था : प्रतुल शाहदेव

आजाद सिपाही संवाददाता

चंदवा। चंदवा प्रखंड के जमीरा गांव में आज स्वर्गीय फुलदेव उरांव मेमोरियल फुटबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन हुआ। इसमें 32 टीम में हिस्सा ले रही है। टूर्नामेंट का उद्घाटन भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाह देव ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि स्वर्गीय फुलदेव उरांव क्षेत्र के एक होनहार फुटबॉलर थे जिन्होंने पूरे जिला में फुटबॉल का नाम रोशन किया था। खेल के कारण ही उनको पुलिस में नौकरी मिली थी। उनके आकस्मिक निधन के बावजूद भी उनके स्मृति में इस आयोजन के जरिये उनके योगदान को याद किया जा रहा है। प्रतुल ने कहा कि इससे पूरे क्षेत्र में फुटबॉल को बढ़ावा मिलेगा जो कि फुल देव उरांव की सोच भी थी।

इस अवसर पर स्वर्गीय फुलदेव उरांव की पत्नी सीता देवी, रामपाल उरांव, लाल अजीत नाथ शाह देव, राज किशोर मुंडा, आशीष सिंह, अंकित उरांव, अजय यादव, अनुरोध कुजूर, कुलदेव उरांव, लाल दीपक नाथ शाहदेव, लाल रोहित नाथ शाहदेव सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। उद्घाटन मैच वाइबीएन पतरातू एवं लकड़ा ब्रदर्स के बीच संपन्न हुआ।

लगातार बारिश से गिरा महिला का घर

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र में दो दिनों से लगातार हो रही बारिश से जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया है। रुक रुक कर मूसलाधार बारिश से प्रखंड क्षेत्र की सड़कों पर जल जमाव हो गया है। जिसे प्रखंड़ क्षेत्र के लोगों का घर से निकलना दूभर हो गया है।

बारिश के चलते सभी जगह गड्ढों में जल जमाव हो गया है। वही प्रखंड क्षेत्र में अनेक लोगों का कच्चा खपरैल मकान भी बारिश के कारण गिर कर धराशायी हो गया। शनिवार रात्रि प्रखंड क्षेत्र के अलौदी पंचायत अंतर्गत गढ़गांव सरना टोली निवासी जगमोहन उरांव की पत्नी मानमैत उराइन का घर गिर गया. मानमैत उराइन का कहना है की दो दिनों से लगातार हो रही बारिश के कारण भरभरा कर दीवाल गिर गया। घर गिरने से किसी का हताहत होने की सूचना नही है। घर मे रखा दैनिक उपयोग का सामग्री नष्ट हो गया। जिसे काफी आर्थिक नुकसान हुआ। वही बारिश से घर गिरने और आर्थिक क्षति को लेकर लोग अंचल कार्यालय में सीओ को आवेदन देकर सरकार से मुआवजे की मांग कर रहें हैं।

ट्रक ने खड़ी कार को मारी टक्कर

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। सदर थाना क्षेत्र के ब्लॉक मोड़ के पास वरदान हॉस्पिटल के सामने रविवार को बड़ा हादसा होते-होते टल गया। जानकारी के अनुसार घाघरा की ओर से तेज रफ्तार से आ रही ट्रक संख्या जेएच 03 एफ 3698 ने अस्पताल के सामने खड़ी कार संख्या जेएच 01 एफवाइ 3542 को जोरदार टक्कर मार दी। इस टक्कर में कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। ट्रक कुडू निवासी रब्बानी अंसारी की है। वहीं क्षतिग्रस्त कार वरदान हॉस्पिटल के संचालक संतोष राणा की बतायी जा रही है। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि ट्रक तेज रफ्तार से आ रही थी। जिसके कारण यह हादसा हुआ है। तेज रफ्तार होने के कारण ट्रक खड़ी कार से टकरा गया। इस दौरान मौके पर मौजूद कई लोग बाल-बाल बचे, वरना कोई बड़ा हादसा भी हो सकता था। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और ट्रक को अपने कब्जे में ले लिया। प्रशासन ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

बड़की चापी दुर्गा पूजा समिति की बैठक

कुडू (आजाद सिपाही)। कुडू प्रखंड क्षेत्र के बड़की चापी दुर्गा मंदिर परिसर में दुर्गा पूजा समिति बड़की चापी के अध्यक्ष सह समाजसेवी उदय कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में बैठक किया गया। इस बैठक में दुर्गा पूजा धूमधाम से मनाने को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये। इस मौके पर अध्यक्ष उदय कुमार गुप्ता ने कहा कि इस वर्ष पिछले वर्षों से और अच्छी तरह से दुर्गा पूजा मनाया जायेगा। उन्होंने कहा कि सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी की रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। इस मौके पर दुर्गा पूजा समिति बड़की चापी के अध्यक्ष उदय कुमार गुप्ता, अमोद कुमार पाठक,लाल गौरीशंकर नाथ शाहदेव, भूपाल पाठक,लाल पंचम नाथ शाहदेव, ,मुकेश प्रजापति, धनेश लोहरा, ओमप्रकाश प्रजापति, बिट्ठू सिंह, राहुल साहू, कैलू महतो, श्याम प्रजापति, विनय महतो, रौसन अग्रवाल, सुरेन्द्र प्रजापति, भरत वर्मा, आदित्य तिवारी सहित कई लोग उपस्थित थे।

खाद की कालाबाजारी करने वाले दुकानदारों पर होगी कार्रवाई : सीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। यूरिया समेत अन्य खाद की कालाबाजारी रोकने को लेकर जिला उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता के निर्देश पर रविवार को अंचल अधिकारी लोकेश सिंह के द्वारा प्रखंड में संचालित खाद दुकानों में विशेष जांच अभियान चलाया गया। जांच के दौरान बरवाडीह बाजार और बस स्टेंड की सभी खाद दुकानों के साथ छिपादोहर, कुचीला समेत अन्य स्थानों में संचालित खाद दुकानों में जाकर स्टॉक की जांच करने के साथ उसके खरीद बिक्री की जांच की गयी। अंचलाधिकारी के द्वारा सभी खाद की बिक्री करने वाले लाइसेंस धारकों को यूरिया की कालाबाजारी नहीं करने की सख्त हिदायत देने के

साथ साथ स्टॉक में उपलब्ध सभी खाद की उपलब्धता सार्वजनिक करते हुए बोर्ड में दशार्ने का निर्देश दिया । अंचला अधिकारी ने बताया कि किसानों को यूरिया समेत अन्य खाद बीज की खरीदारी करने में किसी भी कालाबाजारी का शिकार न होना पड़े इसको लेकर नियमित रूप से खाद दुकानों की जांच करने के साथ-साथ किसानों को किसी भी तरह की परेशानी होने पर सीधे प्रखंड प्रशासन से शिकायत करने की अपील। मौके पर अंचल सहायक मनोज कुमार, रामनाथ कुमार, दीपक कुमार समेत अन्य लोग मौजूद थे।

काला कानून के विरोध में झामुमो का प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार केंद्र सरकार द्वारा लाए गये 130वें संवैधानिक संशोधन के विरोध में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने जिला मुख्यालय में जोरदार प्रदर्शन किया और पुतला दहन किया। कार्यक्रम का नेतृत्व झामुमो के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व शिक्षा एवं मद्यनिषेध मंत्री बैजनाथ राम तथा जिला अध्यक्ष लाल मोतीनाथ शाहदेव ने किया।

इस दौरान जिला अध्यक्ष लाल मोतीनाथ शाहदेव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने इस संशोधन विधेयक के माध्यम से लोकतंत्र को खतरे में डाल दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस कानून के तहत यदि प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या मंत्री 30 दिन हिरासत में रहते हैं तो उन्हें पद छोड़ना होगा, जो लोकतंत्र और संविधान

की मूल भावना के विपरीत है। उन्होंने इसे 'काला कानून' करार दिया। पूर्व शिक्षा मंत्री बैजनाथ राम ने कहा कि भाजपा सरकार देश के संवैधानिक ढांचे को कमजोर करने का षड्यंत्र कर रही है। यह विधेयक सीधे-सीधे डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा बनाए गए संविधान का अपमान है, जिसकी गंझु पूरे विश्व में सुनाई देती है। उन्होंने कहा कि यह कानून गरीब, मजदूर और आम जनता की आवाज दबाने का काम करेगा और लोकतंत्र की जड़ों को खोखला कर देगा। कार्यक्रम में केंद्रीय सदस्य सह जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष अरुण कुमार दुबे, जिला सचिव बुद्धेश्वर उरांव, जिला प्रवक्ता सुशील कुमार यादव, केंद्रीय सदस्य ममता सिंह, जिला कोषाध्यक्ष मनोज यादव, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष रीना देवी झारखंड अध्यक्ष आर्सेन तिर्की अल्पसंख्यक उपाध्यक्ष नौशाद आलम अंकित तिवारी काजू राय बब्लू रही रंजीत उरांव तौकीर आलम सहित हजारों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जय श्रीराम समिति के निर्वाचित पदाधिकारी पूरा करेंगे कार्यकाल

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। खेमराज स्मृति भवन के प्रांगण में रविवार को जय श्रीराम समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक जिला अध्यक्ष सुनील कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में समिति के संरक्षक, कोर कमेटी के सदस्य, जिला, नगर, प्रखंड एवं पंचायत स्तर के पदाधिकारी, विभिन्न धार्मिक संगठन और जिले के सैकड़ों गणमान्य लोग उपस्थित रहे। बैठक में लंबे समय से चले आ रहे विवाद पर दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी बात रखी। चर्चा के बाद सर्वसम्मति से यह बड़ा निर्णय लिया गया कि समिति के निर्वाचित जिला अध्यक्ष सुनील कुमार अग्रवाल, महामंत्री प्रदीप साहू और कोषाध्यक्ष विक्की कसेरा को उनके पद से हटाने का कोर कमेटी का फैसला गलत था। सभी उपस्थित सदस्यों व सनातन समाज के

अभिभावकों ने एक स्वर में कहा कि निर्वाचित पदाधिकारी अपना पूरा तीन वर्षों का कार्यकाल पूरा करेंगे। बैठक में यह भी तय किया गया कि समिति की कोर कमेटी को समाप्त कर उसकी जगह अब एक 21 सदस्यीय सलाहकार समिति का गठन किया जायेगा। यह समिति संगठन को मजबूत करने के लिए दिशा-निर्देश देगी और अध्यक्ष के नेतृत्व में सनातन समाज के हित में कार्य करेगी। बैठक में जिले के सभी प्रमुख धार्मिक संगठन जैसे झ विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति, केंद्रीय महावीर मंडल और योगी सेना सहित अनेक संगठनों के पदाधिकारी व सदस्य शामिल हुए। सभी ने संगठन की एकजुटता और मजबूती पर बल दिया। मौके पर लाल ओंकार नाथ शाहदेव, अजय पंकज, गुप्तेश्वर प्रसाद, राजीव रंजन, सूरज अग्रवाल, दया सिंह, जीवन महतो, मोहन दुबे, रोहित साहू, रितेश साहू, अशोक साहू, प्रेम प्रजापति, देवेंद्र कुमार मंडल, आनंद पांडे, विनोद राय, विनोद सोनी, राजेश महतो, परमेश्वर साहू, कपिल देव मिश्रा, सुषमा सिंह, अजय सोनी, ओम महतो, अनूप गुप्ता, दीपक पासवान, हेमंत बर्मा, अंगद महतो, कुणाल वर्मा, महावीर साहू, जागेश्वर साहू, अशोक रजक, विपुल तमेड़ा, मनोज साहू, नरेश कुमार, अनिल उरांव, सरोज प्रजापति, निश्चय वर्मा, रवि कुमार वर्मा, नागेंद्र प्रजापति समेत जिले, नगर, प्रखंड और पंचायत स्तर के सैकड़ों सदस्य मौजूद रहे।

नये पदाधिकारी का चयन होने तक समिति का संचालन कोर कमेटी करेगी

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। जय श्रीराम समिति की आम सभा में जिला अध्यक्ष, जिला महामंत्री तथा जिला कोषाध्यक्ष को अनुशासनक करवाई करते हुए समिति से बाहर निकाल दिया गया था जबतक नए पदाधिकारी का चयन नहीं किया जाता है तब तक समिति का संचालन कोर कमेटी करेगी, समिति का फैसला अंतिम फैसला है और जल्द जय श्रीराम समिति का नए चुनाव की घोषणा की जायेगी। समिति से निकाले हुए लोग एवं अन्य संगठनो से मिलकर षड्यंत्र के तहत नकली कमेटी बनाने का प्रयास किया गया है जो सरासर गलत है उसका जय श्रीराम समिति के कोर कमेटी, जिला कमेटी,प्रखंड, पंचायत, नगर कमेटी खंडन करती है और जल्द ऐसे लोगों का समिति की सदस्यता भी रद्द की जाएगी। यह जानकारी सुषमा सिंह, अजय सोनी, शैलेश कुमार, लक्ष्मी भगत, शिवदयाल साहू, अनूप गुप्ता और ओम महतो ने विज्ञप्ति जारी कर दी है।

बेदाल गांव में कच्ची सड़क क्षतिग्रस्त

भंडरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड में भारी वर्षा के बाद ग्रामीणों की समस्या बढ़ गयी है। ग्रामीण क्षेत्र के कच्ची सड़कों की हालत खराब है। इससे मसमानो पंचायत अंतर्गत बेदाल गांव में कच्ची सड़क क्षतिग्रस्त हो चुकी है। इससे बेदाल टाइन टोली का संपर्क गांव से टूट चुका है। इससे बस्ती से लोगों का आवागमन खेत की पगडंडियों से होकर करना पड़ रहा है। इसके अलावे भैसमुंदो गांव से एनएच 143 एजी से भैसमुंदो टंगरा टोली तक बना पीसीसी पथ तेज बारिश के कारण अंदर से मिट्टी पूरी तरह बह गया है। इससे सड़क पर फिलहाल बड़े वाहनों के आवागमन पर स्थानीय ग्रामीणों ने रोक लगा दी है। जिसकी सूचना मिलते ही मुखिया परमेश्वर महली व सामाजिक कार्यकर्ता बालकृष्णा सिंह ने मौके पर पहुंच श्रमदान कर मिट्टी की भराई करने की बात कही है।

अंजुमन इस्लामिया अदलिया कमिटी ने दो मामलों का किया निष्पादन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। अंजुमन इस्लामिया अदलिया कमिटी ने रविवार को दो महत्वपूर्ण मामलों की सुनवाई कर आपसी सुलह के आधार पर उनका निष्पादन कराया। कमिटी की इस पहल से समाज में सौहार्द और भाईचारे का संदेश गया। पहला मामला कुरैशी मुहल्ला के जाबिर कुरैशी बनाम शमीम कुरैशी के बीच जमीन बंटवारे से जुड़ा था। अदलिया कमिटी ने सुलहनामा तैयार कर दोनों पक्षों को आपसी सहमति से विवाद खत्म करने पर राजी कराया। दूसरा मामला आनंदपुर निवासी युसूफ अंसारी और उनकी पत्नी के बीच पारिवारिक विवाद का था, जिसे समझौते के जरिये समाप्त कराया गया। मौके पर नायब सदर सैयद आरिफ हुसैन बब्लू ने कहा कि अदलिया कमिटी हमेशा समाज में शांति और भाइचारा कायम रखने के लिए काम करती रहेगी। वहीं सहसचिव अल्ताफ कुरैशी ने कहा कि विवादों का समाधान आपसी समझौते से ही संभव है, और यह पहल समाज को सही दिशा देने वाला कदम है। सुनवाई के दौरान अबुल कलाम तैगी और असगर तैगी भी मौजूद रहे।

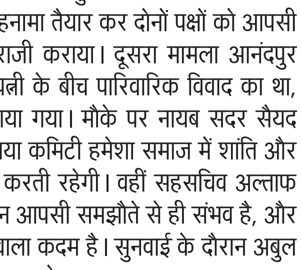

नामांकन के नाम पर विद्यार्थियों से हो रही अधिक राशि की उगाही

शिकायत मिलने पर जिला पार्षद ने किया लालगढ़ 10+2 उच्च विद्यालय का निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर/पलामू। विश्रामपुर प्रखंड के लालगढ़ पंचायत मुख्यालय स्थित 10+2 उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक अभिषेक पांडेय और लिपिक शशि दुबे पर नामांकन में अवैध उगाही का आरोप लगा है। अभिभावकों का आरोप है कि विद्यालय में इंटर विज्ञान एवं कला में नामांकन के नाम पर विद्यार्थियों से निर्धारित शुल्क से अधिक राशि वसूली जा रही है। छात्रों ने जब प्रधान लिपिक शशि दुबे से फीस से ज्यादा वसूली करने का कारण पूछा तो वे आपे से बाहर हो गये और छात्रों को ही डरने-धमकाने लगे। जिससे आक्रोशित होकर छात्र एवं उनके परिजनों ने हंगामा कर दिया। अभिभावकों ने इसकी शिकायत जिला पार्षद विजय रविदास से किया। जिसके बाद जिला पार्षद विजय रविदास ने स्कूल का निरीक्षण किया। उन्होंने छात्रों एवं उनके अभिभावकों से पूरे मामले की जानकारी ली। फिर उन्होंने प्रधानाध्यापक अभिषेक पांडेय और लिपिक शशि दुबे से भी बात की और सरकार की ओर से निर्धारित राशि ही लेने को कहा। उधर, विद्यालय प्रबंधक समिति के अध्यक्ष शरद कुमार ने बताया कि छात्रों द्वारा बताया गया कि इंटर काला में छात्रों से नामांकन के नाम पर 850 रुपए लिया जा रहा है। जबकि छात्रों को सरकार की ओर से निर्धारित 650 रुपए की ही प्राप्ति रशीद दी जा रही है। वहीं 1150 रुपए लेकर 850 रुपए की ही प्राप्ति रशिद दी जा रही है। उन्होंने छात्रों के आरोप को सही करार देते हुए कहा कि इंटर विज्ञान एवं कला संकाय में छात्रों से निर्धारित शुल्क से अधिक लिया जा था है। आठवीं और 10वीं कक्षा के छात्रों से भी अवैध वसूली किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस संबंध में संबंधित विभाग की ओर से इसकी लिखित आवेदन देकर जांच कराने और इसमें संलिप्त लोगों पर कार्रवाई की मांग की है। इधर, इस संबंध में पूछे जाने पर प्रधानाध्यापक अभिषेक पांडेय ने कहा कि आरोप निराधार है। कुछ लोग बेवजह हंगामा कर रहे हैं।

विद्यार्थियों से जानकारी लेते जिला पार्षद विजय रविदास।

प्रधानाध्यापक और लिपिक को पद से हटाया जाये : विजय रविदास

विश्रामपुर जिला पार्षद विजय रविदास ने कहा कि निरीक्षण एवं पूछताछ के क्रम में छात्रों का आरोप सही प्रतीत हो रहा है। इस संबंध में डीसी और जिला शिक्षा अधीक्षक से मिलकर कार्रवाई की अपील करेंगे। उन्होंने कहा कि विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षकों को दरकिनार कर एक कनीय शिक्षक को प्रधानाध्यापक बनाया गया है, जो पूर्णतः गलत है। वहीं, लिपिक शशि दुबे स्थानीय हैं, उन्हें भी वहां से हटाया जाना चाहिए।

झारखंड चिकित्सा एवं जन स्वास्थ्य कर्मचारी संघ की बैठक में विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा

देवघर (आजाद सिपाही)। के कुष्ठ आश्रम रोड स्थित संघ कार्यालय में झारखंड चिकित्सा एवं जन स्वास्थ्य कर्मचारी संघ की एक आपातकालीन बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिलाध्यक्ष मनोज कुमार मिश्र की अध्यक्षता में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। 2211 शीर्ष के कर्मचारियों के मार्च 2025 से अब तक वेतन भुगतान नहीं होने पर रोष प्रकट करते हुए वेतन भुगतान के लिए माननीय उच्च न्यायालय में वाद दाखिल करने का निर्णय लिया गया।अनुबंध पर नियुक्त एएनएम के नियमितीकरण हेतु कर्मचारी चयन आयोग के विज्ञापन में संविदा कर्मियों के उम्र सीमा पचपन वर्ष को साठ वर्ष करने की मांग की गई।अनुबंध पर नियुक्त पारा मेडिकल कर्मचारियों के निबंधन की प्रक्रिया के लिए पत्राचार करने का निर्णय लिया गया।बॉन्ड सेवा पर नियुक्त कर्मचारियों के मार्च 2025 से लंबित मानदेय भुगतान की लड़ाई तेज करने का निर्णय लिया गया।बैठक में जिलाध्यक्ष मनोज कुमार मिश्र के अलावा संयुक्त सचिव संजीव कुमार मिश्र, अनुबंध एएनएम संघ की जिलाध्यक्ष अल्का कुमारी और कई अन्य पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित थे।सभी ने मिलकर कर्मचारियों के हित में निर्णय लेने और उनकी समस्याओं का समाधान करने का संकल्प लिया।संघ द्वारा लिए गए निर्णयों को लागू करने के लिए आगे की कार्रवाई की जाएगी।कर्मचारियों के हित में संघर्ष तेज करने और उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए संघर्ष किया जाएगा।

गणपति पूजा समिति का गठन अमित सोनी बनाये गये अध्यक्ष

विश्रामपुर (पलामू। विश्रामपुर नप मुख्यालय के वार्ड 17 सोरडीहा दुर्गा मंडप के पास रविवार को स्थानीय युवकों की बैठक हुयी।? बैठक में गणपति पूजा महोत्सव को इस बार धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। पूजा के सफल आयोजन व संचालन हेतु पूजा समिति का गठन किया गया। सर्वसम्मति से अमित सोनी को पूजा समिति का अध्यक्ष बनाया गया। वहीं संदीप गुप्ता व अमन कुमार चंद्रवंशी को उपाध्यक्ष,ओम सोनी को कोषाध्यक्ष,सुमंत कुमार विश्वकर्मा व शुभम गुप्ता को सचिव,रवि कुमार,आलोक कुमार चौधरी व दीपक केशरी को मंत्री,अभिनव सोनी व अमन पांडेय को महामंत्री बनाया गया है।? साथ ही अमित सोनी,राकेश गुप्ता,चंदन कुमार व अनुज कुमार गुप्ता को सलाहकार मनोनीत किया गया है। इसके अलावा 21 सदस्यी कार्यकारणी का भी गठन किया गया। जिसमें कई युवाओं को रखा गया है।

बैजंती ने जरूरतमंदों के बीच बांटी खाद्य सामग्री

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। मिशन समृद्धि संस्था के तहत चल रहे समृद्धि की रोटी अभियान निरंतर मौसम की परवाह किये बिना चल रहा है। नर में होता नारायण की सेवा की भावना इस टीम में पूर्ण रूप से व्याप्त है। अध्यक्ष शीला श्रीवास्तव ने कहा कि यह अभियान पूजा से कम नही, ईश्वर की कृपा समाहित है। किसी न किसी रूप में यह अभियान चलता ही रहता है।मौसम प्रतिकूल होने के कारण संस्था ने निर्णय लिया कि आज भोजन वितरण संभव नहीं होगा, क्योंकि जरूरतमंद भी नहीं मिल पाते हैं फिर भोजन का झोला लिए इधर उधर जाना पड़ता है। ऐसा अनेकों बार किया गया है। इसलिए मौसम खराब होने के कारण लगा कि भोजन वितरण संभव नहीं हो पाऐगा। लेकिन बैजन्ती गुप्ता ने जरूरतमंदों को याद करते हुए खुद ही पूरी सब्जी तैयार कर जरूरतमंदों के बीच वितरण करने निकल पड़ी। जिसमें आशा शर्मा वीणा राज शैलेन्द्र सिंह का सराहनीय योगदान रहा।भोजन निष्ठा से बनाई जाती है तो वह प्रसाद बन जाता है। मिशन समृद्धि संस्था का कार्य निःस्वार्थ और निःशुल्क है जो नागरिकों के हृदय तक पहुंचता है।

पलामू भाजपा जिला उपाध्यक्ष को पुत्रशोक

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। पलामू भाजपा जिला उपाध्यक्ष हमीदगंज निवासी अरविंद सिंह के छोटे सुपुत्र 25 वर्षीय विकास सिंह उर्फ विकी का निधन हो गया है। परिवार के लोगों ने बताया कि विकास बीती रात में आराम से खाना खाकर सोया था सुबह नहीं उठने पर घर के लोग जगाने गए तो नहीं उठा न ही कुछ बोल रहा था आनन फानन में सदर अस्पताल मेदिनीनगर ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।विकी के अचानक निधन की खबर सुनकर मोहल्ला वासी,रिश्तेदार एवं भाजपा परिवार के लोग सदर अस्पताल पहुंच कर उसके रोते बिलखते पिता एवं परिवार को ढाढस बधवाने का प्रयास कर रहे थे। अस्पताल से हमीरगंज आवास पर शव पहुंचते ही घर परिवार के लोग बेसुध हो गए उन्हें समझ में ही नहीं आ रहा था कि अचानक यह क्या हो गया। घर पर भी बहुत से लोग आकर शोक संवेदना व्यक्त कर रहे हैं। जिनमें भाजपा के प्रदेश महामंत्री मनोज सिंह, जिलाध्यक्ष अमित तिवारी, बिपिन बिहारी सिंह, मंगल सिंह, विजय ओझा,शिवकुमार मिश्रा, अभिमन्यु तिवारी,भोला सिंह, शिवदीप सिंह,अरुण सिंह, सिंटू सिंह, मुकेश सिंह, अनूप सिंह,अजीत सिंह,अभय सिंह,छोटू सिंह, सोनू सिंह, लल्लू सिंह, अनिल सिंह,सुजीत कुमार, संजय कुमार,प्रदीप सिंह,अविनाश सिन्हा,छोटू आदि शामिल थे।

सारठ में श्री गणेश महोत्सव की तैयारी जोरों पर

सारठ (आजाद सिपाही)। पुराना बाजार स्थित युवा शक्ति क्लब की ओर से श्री गणेश महोत्सव 2025 की तैयारी जोरों पर है। लगभग 21 वर्षों से लगातार आयोजित किए जा रहे इस महोत्सव में इस बार वर्टिकल सिटीके रूप में भव्य पंडाल बनाया जा रहा है। पूजा का आयोजन 27 अगस्त की सुबह 10 बजे से किया जाएगा। 28 अगस्त को हवनी पूजन और कलश विसर्जन के बाद शाम छह बजे भजन कीर्तन होगा। यह पूजा समाज के लोगों की मदद से हर साल किया जाता है, जिसमें युवा शक्ति क्लब के युवा बड़े हर्ष और उल्लास के साथ भाग लेते हैं। इस महोत्सव के माध्यम से समुदाय के लोगों में आपसी प्रेम और सौहार्द बढ़ता है।

क्षत्रिय गौरव यात्रा अभियान समिति की बैठक, यात्रा को सफल बनाने का निर्णय

त्याग, संस्कार, साहस और समर्पण ही क्षत्रियों की परंपरा-पहचानः प्रवीण सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू क्लब में क्षत्रिय गौरव यात्रा अभियान समिति की रविवार को बैठक हुई। बतातें चलें कि रांची में फरवरी 2026 में क्षत्रिय गौरव यात्रा होने वाली हैं। इसे सफल बनाने की निमित्त यह बैठक हुई। इस यात्रा में पलामू में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने का निर्णय लिया गया। बैठक की अध्यक्षता पूर्व एमएलसी प्रवीण सिंह ने की। उन्होंने क्षत्रीय गौरव यात्रा के आयोजन के औचित्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। कहा कि त्याग, संस्कार, साहस, सर्मपण क्षत्रियों की परंपरा और पहचान रही हैं। समाज और राष्ट्र की मजबूती में सक्रिय योगदान देने के संस्कार में हम सभी पले बढ़े हैं। ऐसे में हम सभी की यह नैतिक जिम्मेदारी हैं कि हम अपने समाज के बच्चे को भी संस्का युक्त बनाये। हमारी आने वाली पीढ़ी अपने गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर बेहतर वर्तमान गढ़े। इसके लिए गौरव यात्रा का आयोजन किया गया हैं। हमारे एक जुटता का समाज को क्या लाभ मिले इस विषय को लेकर पूरे प्रदेश का दौरा किया जा रहा है। क्षत्रिय समाज के हक, सम्मान और जनसंख्या के अनुपात में भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यह गौरव यात्रा आयोजित की जा रही है। इस अभियान की शुरूआत फरवरी 2026 में रांची से की जाएगी। इसमें 50 हजार से अधिक क्षत्रिय समाज के लोग शामिल होंगे। इस भव्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में देश स्तर के क्षत्रिय शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि 31 अगस्त को रांची में सम्मेलन का आयोजन किया गया है। जिसमें पूरे प्रदेश से क्षत्रिय समाज के अधिक से अधिक लोग रहेंगे। बताया कि समाज के हित के लिए रणनीति बनाई जाएगी और सरकार से हमें कुछ और नहीं, बल्कि केवल हमारे समाज को मान सम्मान चाहिए। इस मौके पर डॉ अजय शाहदेव, श्याम नारायण सिंह, विवेक भवानी सिंह, अनिल सिंह, दुदुन सिंह, मुकेश सिंह चंदेल, मिथिलेशसिंह, सुधीर सिंह, तरेंद्र सिंह, अरुण सिंह, गिरिनाथ सिंह, अभय कुमार सिंह, भाई गोविंद सिंह, मिनी सिंह, गुंजन सिंह, लाल सिंह, वीर बहादुर सिंह, महाराणा सिंह आदि उपस्थित थे।

हुसैनाबाद के पतरा कला गांव में आहर का पानी खोले जाने से कई घर जलमग्न

- भारी बारिश और जलजमाव से झरगड़ा सहित कई अन्य पंचायत में दर्जनों मिट्टी के घर क्षतिग्रस्त
- स्थानीय प्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने आपदा प्रबंधन विभाग से लगाई मदद की गुहार

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड क्षेत्र में लगातार तीन दिनों से हो रहे मूसलाधार बारिश के कारण जन- जीवन अस्तव्यस्त हो गया है। भारी वारिश के कारण झरगड़ा पंचायत के सुपहा गांव के दशरथ रजवार, विन्देश्वरी राम, सूर्यमनिया कुंवर, गणेश रजवार, बनस्पति गांव के अनोद पासवान, जितेंद्र भुइयां, लालो देवी,चारकोल गांव के कुंती कुंवर, विष्णु देव पासवान, बिगू पासवान, मनोज पासवान, लल्लू पासवान, सुकना डेरा गांव के आंनद राम, शंकर पासवान, सतेंद्र यादव, कैलु यादव, श्यामदेव पासवान, झरगड़ा उतरी, झरगड़ा दक्षिणी और अंबेडकर नगर गांव के दर्जनों ग्रामीण का कच्चा मकान क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण उनका जन- जीवन अस्तव्यस्त हो गया है।ग्रामीणों ने अनुमंडल प्रशासन से अपील की है कि हमारी मदद की जाए,क्योंकि अगर इसी तरह से बारिश होती रही तो हमारे मकान पूरी तरह मलबे में तब्दील हो जाएंगे।वही झरगड़ा गांव का आहर जलजमाव के कारण टूटने के कगार पर था,पंचायत के मुखिया अशोक चौधरी ने तत्काल पहल कर आहर के जल निकासी का व्यवस्था कराया।पंचायत के मुखिया ने बताया कि अबुआ आवास योजना के लिए दर्जनों लाभुक का चयन किया है लेकिन अभी तक प्रथम किस्त भी नही मिल पाया है।जबकि कई वैसे लाभुक भी है जिनका प्रथम किस्त मिल गया है दूसरे किस्त के इंतजार में आवास निर्माण कार्य अधूरा है।जिसके कारण बरसात के मौसम में उन्हें भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।वही जमुआ पंचायत के मुखिया ओमप्रकाश राजवंशी ने बताया कि भारी वारिश के कारण पंचायत क्षेत्र के कई गांव के ग्रामीण का कच्चा मकान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है।वही पतरा कला गांव में आहार का पानी का जलस्तर बढ़ने के बाद ग्रामीणों ने निकासी के लिए भव खोलने से गांव कई घर मे पानी घुस गया है, जिससे मिट्टी का दीवार गिरने की संभावना घरवाले जता रहे है, घर मे रहने वालो दहशत में है की कही दीवार न गिर जाए।वही जलजमाव के कारण क्षेत्र में बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। स्थानीय प्रतिनिधियों व ग्रामीणों ने स्थानीय प्रशासन व आपदा प्रबंधन से मदद की गुहार लगाई है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों के साथ ही अभिभावकों की भी भूमिका अहम : निदेशक

जपला समता स्कूल में अभिभावक-शिक्षक गोष्ठी का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। शहर के जपला छतरपुर रोड नहर मोड़ के समीप धरहरा जपला स्थित समता स्कूल परिसर में रविवार को अभिभावक -शिक्षक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के निर्देशक सह प्रधानाचार्य डॉक्टर अक्षय कुमार चौहान, विनोद चौधरी, संतोष मिश्रा, किरण देवी ,अंजली सिंह, सुधांशु कुमार सिंह, अनुज कुमार सिंह, विनोद कुमार सिंह,राहुल कुमार चौहान, विकास कुमार,दशरथ कुमार , कार्तिक कुमार, राहुल गुप्ता,पंकज राज, सुभाष कुमार, मुकेश कुमार, संजीत कुमार, रिमझिम देवी, बबीता देवी, शकुंतला देवी, प्रियंका देवी,रीना देवी,चांदनी कुमारी, अंशी कुमारी,उम्म सैयद, गार्ड नंदू प्रजापति, राजकिशोर राम,परिचायिका विमला कुंअर, यशोदा देवी, सुनीता देवी,आदि ने मां सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण करने के बाद दीप प्रज्वलित कर किया।गोष्ठी के दौरान अभिभावकों ने छात्र हित के लिए सुझाव भी दिए ।जिस पर विद्यालय के निर्देशक सह प्रधानाचार्य ने सौहार्दपूर्ण तरीके से समाधान व निदान किया।मौके पर उपस्थित अभिभावकों व छात्रों को संबोधित करते हुए विद्यालय के निर्देशक सह प्रधानाचार्य डॉक्टर अक्षय चौहान ने कहा कि छात्र-छात्राओं के गुणात्मक बिकास में विद्यालय प्रबंधन के साथ-साथ अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।उन्होंने कहा कि अभिभावक समय-समय पर विद्यालय से संपर्क करें और गृह कार्य की जानकारी दें।उन्होंने कहा कि अभिभावकों व शिक्षको के बीच सही सामंजस्य से ही विद्यार्थियों का सकारात्मक विकास संभव है।कार्यक्रम के अंत मे विद्यालय परिवार की ओर से सभी अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

प्रजापति भवन का 11वां स्थापना दिवस एवं कांवरिया सेवा शिविर का समापन

आजाद सिपाही संवाददाता

देवघर। रेलवे स्टेशन के समीप स्थित प्रजापति भवन में 11 वां स्थापना दिवस एवं कांवरिया सेवा शिविर का समापन रविवार को हुआ। इसमें कार्यक्रम के अध्यक्ष वरीय अधिवक्ता राम शंकर पंडित और पूर्व वार्ड पार्षद आशीष पंडित थे। पूरे एक महीने तक विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला में आए श्रद्धालुओं को निःशुल्क सेवा प्रदान की गई। श्रद्धालुओं के बीच शरबत, नींबू पानी, स्वास्थ्य सेवा और फलहार का वितरण किया गया। इस सेवा शिविर में प्रजापति समाज के सदस्यों ने तन-मन-धन से सेवा प्रदान की। प्रजापति भवन के 11 वें स्थापना दिवस को धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान अध्यक्ष ने समस्त प्रजापति समाज के लोगों को निःशुल्क सेवा शिविर में सेवा प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन करते हुए अध्यक्ष ने आने वाले साल में और बेहतर करने का संकल्प लिया। प्रजापति समाज के सदस्यों ने एकजुट होकर श्रद्धालुओं की सेवा करने का संकल्प लिया। इस दौरान बड़ी संख्या में प्रजापति समाज के सदस्य उपस्थित थे।

'आमार मधु नगरी' पुस्तक का लोकार्पण

मधुपुर (आजाद सिपाही)। लेखक डॉ अशिष कुमार सिन्हा की चौथी पुस्तक 'आमार मधु नगरी' का लोकार्पण रविवार को आदिति इन में हुआ। रामकृष्ण आश्रम के स्वामी आसु महाराज, डॉ मधुस्त्री सेन सेन्याल, कल्पना घोष प्रोफेसर गौरव गांगोपाध्याय रजत मुखर्जी, बसुदेव झा, बिद्रोह मित्रा संगीतमयी प्रस्तुति के अंतर्गत सौरव घोष, रश्मि सिन्हा एवं बणार्ली सिन्हा ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को सुरमय बना दिया। इस अवसर पर प्रसाद चटर्जी, प्रिंस समद, प्रेम पाठक, वाणी मुखर्जी, अभिषेक सिन्हा, इंद्रजीत सहित नगर के कई सम्मानित नागरिकों की भी उपस्थिति रही। अतिथियों ने लेखक डॉ अशिष कुमार सिन्हा की लेखनी एवं उनके सामाजिक योगदान की सराहना करते हुए मधुपुर के सौहार्दपूर्ण वातावरण पर प्रकाश डाला। वहीं, डॉ सिन्हा ने अपने संघर्षपूर्ण जीवन यात्रा को साझा किया। बताया कि कैसे उन्होंने मधुपुर को अपनाकर, उसी धरती पर रहते हुए मधु नगरी जैसी पुस्तक की रचना की। पुस्तक लोकार्पण में उनके साथ उनकी धर्मपत्नी, पुत्र-पुत्री एवं पूरा परिवार उपस्थित रहा। कार्यक्रम का संचालन शतरूपा मित्रा ने किया।

हड्डी और मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ 30 को गुमला में

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड के सुप्रसिद्ध नस हड्डी और मस्तिष्क विशेषज्ञ डॉ अनिल कुमार 30 अगस्त दिन शनिवार को गुमला में रहेंगे। वे पालकोट रोड स्थित निलेश मेडिकल हॉल में प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक रोगियों की जांच करेंगे। उक्त जानकारी देते हुए निलेश मेडिकल हॉल के संचालक दिलीप निलेश ने बताया कि ससमय पहुंच कर रोगी डॉ अनिल से मिल कर रोग संबंधी परामर्श ले सकते हैं।

चोरी मामले का अप्राथमिकी अभियुक्त धराया

डुमरी (आजाद सिपाही)। रविवार को डुमरी थाना कांड संख्या 32/25 दिनांक 10-08-25, धारा 305 बीएनएस के अप्राथमिकी अभियुक्त राजू कुम्हार उम्र 23 वर्ष, वर्तमान पता हुताप, थाना डुमरी को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। साथ ही कांड में चोरी किये गये पैसा, ज्वैलरी एवं मोबाइल को अभियुक्त के निशांदेही पर बरामद किया गया है। चोरी की घटना 10 अगस्त को दिन मे हुआ था जब वदिनी अपने परिवार के साथ धान की रोपाई करने खेत गयी थी।

जिला स्तरीय प्रोसेस लैब का समापन

गुमला (आजाद सिपाही)। उपायुक्त गुमला के निर्देशानुसार आदि कर्मयोगी अभियान के तहत जिला स्तरीय प्रोसेस लैब का रविवार को सफलतापूर्वक समापन हुआ। यह आवासीय कार्यक्रम 22 अगस्त से 24 अगस्त 2025 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिले के सभी प्रखंडों से लगभग 70 प्रखंड स्तरीय मास्टर ट्रेनर तथा विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान अभियान की बारीकियों एवं क्रियान्वयन की विधियों की जानकारी जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनरों द्वारा दी गयी। समापन समारोह में जिला कल्याण पदाधिकारी आलोक रंजन उपस्थित रहे और उन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए अभियान के उद्देश्यों को धरातल पर सफलतापूर्वक लागू करने का आह्वान किया।

विधिक सेवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड कार्यालय सभागार में रविवार को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं झारखंड राज्य विधि सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विधिक सेवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे परिसंपत्तियों का भी वितरण किया गया जिसमें लक्ष्मी आजिविका सखी मंडल कटिम्बा को छह लाख, अनमोल सखी मंडल बुमतेल को एक लाख, तिरंगा सखी मंडल गोबिंदपुर को छह लाख, जूही सखी मंडल गोबिन्दपुर को छह लाख साथ ही बृद्धा पेंशन, जॉब कार्ड, साड़ी धोती आदि का भी लाभुकों के बीच वितरण किया गया। वहीं मौके पर उपस्थित देवेन्द्रनाथ ओहदार एलएडीसी ने संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण का मुख्य उदेश्य समाज के कमजोर वर्गो को निःशुल्क न्यायिक सेवाएं प्रदान करना। लोगों को उनके कानूनी अधिकारों और कर्तब्यों के बारे मे जागरूक करना। विवादो के निपटान के लिए समय ,समय पर लोक अदालत का भी आयोजन किया जाता है जिसमे आकर अपने विवादो का निपटान किया जाता है। मौके पर जितेंद्र कुमार सिंह प्रमुख उर्मिला केरकेट्टा, मुखिया चाजरेण मिंज, एएसआइ रमेश महतो, पीएलवी दीपक कुमार पीएलवी दीपक एक्का पीएलवी मधुवती देवी, प्रदीप लकड़ा, चांदनी कुमारी, सीमा कुमारी, नागेन्द्र उरांव, विकास कुमार, सुबोध कुमार, गीता कुमारी, आशा कुमारी, बाबूलाल कुमार आदि उपस्थित थे।

बिशुनपुर में भालू ने महिला पर किया हमला

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के डीपाडीह करम टोली गांव में एक जंगली भालू ने 41 वर्षीय महिला विनीता उराइन पर हमला कर दिया। महिला अपने अन्य साथियों के साथ गांव से सटे जंगल में पत्ता तोड़ने गई थी, तभी अचानक भालू ने उस पर हमला कर दिया। हमले में विनीता के दाहिने हाथ की तीन अंगुलियों में गंभीर चोट आयी है। परिजनों ने विनीता को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी स्थिति बेहतर बतायी है। इधर फॉरेस्टर शेखर सिंह ने ग्रामीणों से अपील की है कि जंगल की ओर न जायें और भालू से छेड़छाड़ न करें। उन्होंने कहा कि गांव में ही सुरक्षित रहना बेहतर होगा। इस घटना से गांव में दहशत का माहौल है।

संत मोनिका का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया

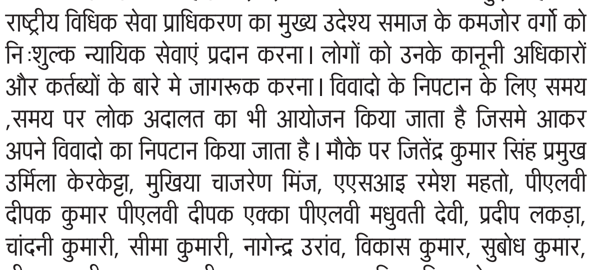

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड के जरमाना पारिश मे संत मोनिका का पर्व रंगारंग सास्कृतिक कार्यक्रम के बीच हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पल्ली मे सबसे पहले सुबह मिस्सा अनुष्ठान का किया गया। मिस्सा अनुष्ठान का मुख्य अधिष्ठाता फादर निरंजन एक्का सहयोगी के रूप मे फादर लौरेन्स टोप्पो फादर सिप्रियानुस कुल्लू ने मिस्सा रस्म निभाया। जरमाना पल्ली के मुख्य अधिष्ठाता फादर निरंजन एक्का ने कहा कि संत मोनिका महान माता में से एक थी उन्होंने कहा कि माता को पांच आदर्श गुण यथा धीरज दया ममता सेवा त्याग को आत्म साथ करने की जरूरत है तभी महिलाएं सफल माता बन सकती है जीवन में कुछ करने के लिए संत मोनिका की जीवनी से सीख लेने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने संदेश मे कहा कि महिलाएं संत मोनिका को अपना आदर्श मानते हुए उनके मार्ग पर चलें ततपश्चात पारिश क्षेत्र के सभी गाँवों के महिलाओं के द्वारा विभिन्न आकर्षक सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे महिलाओं के द्वारा एक से एक बढ़कर सास्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया। जिससे दर्शक देखकर मन्त्रमुग्ध हुए। मौके सैकड़ो की संख्या मे खीस्तीय विश्वासी उपस्थित थे।

दो दिनों के बारिश से कोयल नदी में उफान

गुमला (आजाद सिपाही)। जिले में लगातार दो दिनों से झमाझम बारिश हो रही है। बारिश से नदियों का जलस्तर काफी बढ़ गया है। कोयल नदी का जलस्तर बढ़ने से नागफेनी नदी के पुल तक पानी आ गया है पानी का तेज बहाव हो रहा है नजारा काफी खूबसूरत के साथ-साथ डरावना भी है। इस नजारे को देखने के लिए राहगीर रुक भी रहे हैं साथ ही सेल्फी ले रहे हैं प्रशासन ने लोगों को सतर्क रहने के निर्देश दिये हैं। वहीं नदी का पानी सडक तक पहुंच गया है। खेत पूरी तरह से जलमग्न हो गये हैं कई किसानों के घर गिर गये हैं। भारी-बारिश से जनजीवन पूरी तरह से अस्त व्यस्त हो गया है लोग घरों पर दुबके हुए हैं। इधर नागफेनी नदी के अंबा घाघ का दृश्य काफी मनोरम दिख रहा है। तेज लहरों के साथ नदी उफान पर है।

भारी बारिश से जैरा पुल ध्वस्त

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला/ सिसई। लगातार हो रही बारिश के कारण डाड़हा छारदा रोड स्थित जैरा पुल बुरी तरह क्षति ग्रस्त हो गया। जिससे कई गांवों का संपर्क प्रखंड मुख्यालय से टूट गया है। इस मामले में विधायक प्रतिनिधि प्रकाश उरांव ने जानकारी देते हुए बताया कि सिसई थाना क्षेत्र के डाढ़ा से छारदा जाने वाले सड़क पर स्थित पुल भारी बारिश के कारण टूट गया। शनिवार की दोपहर 3 के आसपास इस पुल टूट जाने के कारण उस सड़क से संबद्ध कई गांव का संपर्क पूरी तरह से टूट गया। हालांकि बताया यह भी जा रहा है कि पुल पहले से ही टूटा हुआ था। जिसके कारण इस पुल से कोई भी चार पहिया वाहन पिछले कई महीनों से नहीं गुजर रहे थे। लेकिन इस पुल का उपयोग लोग पैदल अथवा साइकिल के द्वारा आवागमन के लिए कर रहे थे। विशेष कर ग्रामीणों के पास दो पहिया वाहन होता है जिस कारण पुल के हलके क्षतिग्रस्त हो जाने के बावजूद पुल की उपयोगिता कम नहीं हुई थी। उस?? पुल का प्रयोग ग्रामीण लगातार करते थे।लेकिन अब भारी बारिश के कारण पुल बुरी तरह से टूट चुका है। इस कारण अब पैदल भी आवागमन संभव नहीं है। इस पुल के टूट जाने से सिसई के उत्तरी भाग के बुडका, छरदा, मांगलो, भूरसो, बोंडो, भरनो उत्तरी के अमालिया, अताकोरा, बरन्दा, मालगो, आदि गाँवो के लोग प्रभावित हो रहे हैं। हालांकि इसी नदी इस पुल के डेढ़ किमी दूर स्थित कूदरा बुडका पुल, और बांस टोली सिसई के समीप स्थित पुल अभी सही सलामत है। जिससे अभी आवागमन जारी है। इन दो पुलों के कारण आज दर्जनों गांव टापू होने से बच गये।

विधायक प्रतिनिधि प्रकाश उरांव ने इस स्थान पर नये पुल निर्माण करने की मांग की है।

28 को कांग्रेस के झारखंड प्रभारी का गुमला आगमन

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। झारखंड प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के राजू का राज्य में पांच दिवसीय दौरा आगामी 26 अगस्त से लेकर 31 अगस्त तक होगा। इस बीच झारखंड प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के राजू का 28 अगस्त को गुमला में होंगे। इस दौरान वे सिसई और भरनो प्रखंड में पार्टी के जिला स्तरीय पदाधिकारियों, अग्रणी मोर्चा संगठन के सभी जिला अध्यक्ष, सभी प्रखंडों के अध्यछ, सभी पंचायतो के पंचायत अध्यछ व सिसई प्रखण्ड के 18 पंचायतो के कार्यकारिणी सदस्यों व अग्रणी मोर्चा के प्रखण्ड अध्यछ के साथ बैठक कर उनसे सीधा संवाद करते हुए कई दिशा निर्देश देंगे। इसकी जानकारी देते हुए जिला अध्यछ चैतू उरांव ने बताया कि पदाधिकारियों के साथ पहला संवाद कार्यक्रम दिन के दस बजे से सिसई क्षेत्र में संवाद एक बजे तक चलेगा। इसके बाद डेढ़ से ढाई बजे तक उतरी भरनो में व ढाई से करीब 4 बजे तक तुरियाम्बा में होगा। तुरियम्बा व उतरी भरनो में आयोजित संवाद में पंचायत कमिटी के लोग शामिल होंगे।

दादी प्रकाशमणि की पुण्य स्मृति पर रक्तदान शिविर का आयोजन

लोगों ने बढ़-चढ़ कर किया रक्तदान

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि एवं रक्तदान कार्यक्रम का आयोजन शिव दर्शन भवन, गुमला के सभागार में किया गया। इस अवसर पर संस्थान से जुड़े भाई-बहनों एवं स्थानीय नागरिकों ने दादी जी के महान योगदान को स्मरण करते हुए उनके बताये आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को अपनाने का संकल्प लिया। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि का यह पुण्य स्मृति दिवस विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी उपलक्ष्य में भारत और नेपाल में एक विशाल रक्तदान महाभियान चलाया गया, जिसमें एक लाख यूनिट रक्त संचित करने का लक्ष्य रखा गया। इसके अंतर्गत रविवार को गुमला में भी संस्थान से जुड़े सदस्यों समेत एनसीसी के कैडेट एवं उनके अधिकारियों ने रक्तदान कर इस अभियान को सफल बनाया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लेफ्टिनेंट कर्नल (सीसी गुमला) पीबी शर्मा उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का जीवन त्याग, सेवा और समर्पण का आदर्श रहा है। उनके मार्गदर्शन से समाज में आध्यात्मिक जागरण और भाईचारे की भावना प्रबल हुई है। इस अवसर पर गुमला थाना अधीक्षक महेंद्र कमार्ली, सदर अस्पताल ब्लड बैंक प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ सुनील राम एवं टेक्नीशियन मारवाड़ी वामन की विशेष उपस्थिति रही। रक्तदान शिविर में सुमित अग्रवाल, रोहित खंडेलवाल, संजय अग्रवाल सहित अनेक दानवीरों ने सक्रिय सहयोग दिया। राजयोगिनी शांति दीदी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का जीवन मानवता के लिए अनुपम प्रेरणा है। उन्होंने सेवा, त्याग और निस्वार्थ भाव से विश्व भाईचारे का जो संदेश दिया, वही आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे सकारात्मक सोच, नशामुक्त जीवन और आत्मिक शक्ति से समाज को नयी दिशा दें। कार्यक्रम का समापन श्रद्धांजलि सभा के साथ हुआ, जिसमें ब्रह्माकुमारी संस्थान के वरिष्ठ बीके बहनों व भाइयों ने दादी प्रकाशमणि जी की स्मृतियों को नमन करते हुए सभी को प्रेरक संदेश दिए।

गुमला में स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र खुला

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र का उद्घाटन 24 अगस्त, रविवार को गोकुल नगर नियर बैंक ऑफ इंडिया जयपुर रोड गुमला में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि योग परिवार के अध्यक्ष लायंस क्लब के रीजन चेयरपर्सन अशोक कुमार जायसवाल और योग परिवार के कोषाध्यक्ष लायंस क्लब के जॉन चेयरपर्सन एमजेएफ शंकर लाल जाजोदिया उपस्थित थे। दोनों मुख्य अतिथियों ने मौके पर कहा कि स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र गुमला के लोगों के लिए एक वरदान साबित होगा। यह प्रतिष्ठान सभी प्रकार की जांच से युक्त है और यहां पर उचित दर पर जांच की जायेगी। उन्होंने संचालक वीरेंद्र शाह को शुभकामनाएं दी और उनका हौसला बढ़ाया। इस अवसर पर संचालक के पिता योग शिक्षक संजय कुमार, माताजी प्रेमा देवी, शशि किरण जयसवाल, संजय सिंह, विशाल कुमार बिड्ढ, कृष्णा सोनी, रविंद्र कौर, जय श्री बढ़ाइक अशोक गोयल, भगत आदि अनेक लोग उपस्थित थे। सभी ने प्रतिष्ठान के संचालक को शुभकामनाएं संदेश दिया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र के संचालक वीरेंद्र शाह ने सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि वह अपने प्रतिष्ठान में उच्च गुणवत्ता वाली जांच सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य गुमला के लोगों को उनके दरवाजे पर ही विश्वसनीय और सटीक जांच सेवाएं प्रदान करना है। उद्घाटन समारोह के दौरान, मुख्य अतिथियों ने स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र की सुविधाओं का अवलोकन किया। मौके पर संजय कुमार साहू, प्रभा देवी, वीरेन साहू, अभिषेक कुमार, अशोक जायसवाल, किरण जायसवाल, शंकर लाल जाजोदिया विशाल कुमार बिड्ढ, संजय सिंह, लाल बाबू, उमा शंकर सिंह, हरी, कृष्णा सोनी, रोहित, जैकांत राय, अनीता सिंह, मंजू गोयल, सूदन सिंह, मुन्ना जी, पारस साहू, राजू श्रीवास्तव, कोमल कुमारी मीणा देवी, कौसौलेन्द्र जमुआर, वीणा देवी, किशोर गोयल समेत क्षेत्र के कई लोग मौजूद रहे।

आम जनता को अपने अधिकारों को जानना जरूरी : ओम प्रकाश

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। घाघरा ब्लॉक परिसर सभागार में जिला विधिक सेवा प्राधिकार की ओर से विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय गुमला ओम प्रकाश मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। वही अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। शिविर में एडवोकेट शारदा पांडे और अवनीत पांडेय द्वारा लोगों को कानूनी अधिकारों, मुफ्त विधिक सहायता, लोक अदालत की उपयोगिता, डायन बिसाही, महिला एवं बच्चों से जुड़े अधिकार, घरेलू हिंसा अधिनियम, बाल विवाह निषेध कानून, नशामुक्ति अभियान व वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के दौरान पात्र लाभुकों के बीच सरकारी योजनाओं से जुड़ी पेंशन, धोती साड़ी, ट्राइसाइकिल, साइकिल, सावित्रीबाइ फुले समृद्धि योजना, आवास संबंधित कई परिसंपत्तियों का वितरण भी किया गया। कई बच्चों का अन्नप्राशन भी कराया गया। इससे लाभुकों में खुशी का माहौल देखा गया। मौके पर प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय गुमला ओम प्रकाश ने अपने संबोधन में कहा कि आम जनता को अपने अधिकारों की जानकारी होना बेहद जरूरी है ताकि वे अन्याय व शोषण के खिलाफ आवाज उठा सकें।

साथ ही यह भी कहा कि विधिक सेवा प्राधिकार का मुख्य उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचाना है। कोई भी गरीब, असहाय व्यक्ति अपने अधिकार से वंचित न रहे, यही इस तरह के शिविरों का उद्देश्य है। वही शिविर में प्रखंड विकास पदाधिकारी दिनेश कुमार, पशुपालन पदाधिकारी डॉक्टर सीमा एक्का, बीपीओ पुष्पा टोप्पो, बीपीआरओ शंकर साहू सहित सामाजिक कार्यकर्ता, पदाधिकारी कर्मी और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

मिट्टी का घर गिरा छह बकरियों की मौत

सिसई/ भरनो (आजाद सिपाही)। गुमला जिला में तीन दिनों से लगातार हो रही बारिश से किसानों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं मिट्टी के घर भी भरभराकर कर गिर रहे हैं। गुमला जिला के भरनो प्रखंड अंतर्गत सुपा टू गांव निवासी रमेश राम पिता स्वर्गीय देवचरण राम का रविवार के अहले सुबह 3 बजे के लगभग मिट्टी का घर गिर गया जिससे घर में रखे पांच खस्सी और दो बकरी की मिट्टी में दबने से मौत हो गई है। जिससे किसान को लगभग 70 हजार रुपए का भारी नुकसान हुआ है। पीड़ित किसान ने बताया कि दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद सभी बकरियों को बाहर निकाला गया। पीड़ित किसान ने प्रखंड प्रशासन और पशुपालन विभाग से मुआवजे की मांग की है।

विधिक जागरूकता शिविर में परिसंपत्तियों का वितरण

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड कार्यालय सभागार में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे गुमला के जिला अपर सत्र न्यायाधीश संजीव भाटिया थे। कार्यक्रम की शुरूआत न्यायाधीश संजीव भाटिया, बीडीओ सुलेमान मुंडरी, सीओ शेखर वर्मा पर्यवेक्षिका शकुंतला कुमारी, एडवोकेट ओम प्रकाश ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इससे पूर्व प्रखंड प्रशासन ने न्यायाधीश को बुक्के देकर सम्मानित किया। इस शिविर में विभिन्न लाभुकों को कई योजनाओं का लाभ प्रदान किया गया। जिनमें 5 जॉब कार्ड, जेएसएलपीएस की महिला समूहों के बीच 45 लाख रुपये का ऋण, 9 दिव्यांग व्यक्तियों को ट्राई साइकिल और अन्य सामग्री, 50 राशन कार्डधारियों को धोती साड़ी, 28 लाभुकों को पेंशन स्वीकृति प्रपत्र और 100 छात्रों को साइकिल का वितरण शामिल है। इसके अलावा, 5 किसानों को एक-एक लाख रुपये का केसीसी ऋण और 25 किसानों को मृदा कार्ड वितरित किया गया। शिविर में जन्म प्रमाण पत्र का भी वितरण किया गया, जिससे ग्रामीणों को अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने में मदद मिली। शिविर के माध्यम से ग्रामीणों को विभिन्न योजनाओं का लाभ प्रदान किया गया और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया गया। न्यायाधीश विधिक सेवा प्राधिकार ने कहा कि इस तरह के शिविरों का उद्देश्य ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इस तरह के शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

गुमला में 196 लाभुकों के बीच 30 करोड़ की परिसंपत्ति का वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। डालसा गुमला के द्वारा जिले के सभी 12 प्रखंड कार्यालयों में विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रखंडों में न्यायिक पदाधिकारी, एलएडीसी, पैनल लॉयर, पीएलबी उपस्थित रहे। जिले के सभी प्रखंडों में कुल 22 हजार लाभुकों के बीच कुल 29 करोड़ 61 लाख 43 हजार की परिसंपत्तियों की वितरण की गयी। गुमला प्रखंड कार्यालय में आयोजित शिविर का उद्घाटन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश धुव्रचंद मिश्र, पुलिस अधीक्षक हरीश बिन जमां, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार राम कुमार लाल गुप्ता, अपर सम्हर्ता सचिंद्र बडाईक, अनुमंडल पदाधिकारी राजीव नीरज, शंभू सिंह सदस्य स्थायी लोक अदालत गुमला, प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक चोपड़ा, अंचल अधिकारी हरीश कुमार ने सम्मिलित रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर उपस्थित मुख्य अतिथि प्रधान न्यायाधीश ध्रुव चंद्र मिश्र ने कहा कि डालसा द्वारा आयोजित इस सशक्तिकरण का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है और समाज में फैली कुरीतियों को रोकना है। उन्होंने आगे कहा की जानकारी के आभाव में गरीब एवं ग्रामीण इलाके के लोग सरकारी योजना का लाभ लेने से पीछे रह जाते हैं, ऐसे में नालसा एवं झालसा के निर्देश पर डालसा के द्वारा जागरूकता शिविर का आयोजन कर समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी लाभ की जानकारी देना सुनिश्चित कराया जाता है तथा उन्हें विधिक सहायता की भी जानकारी दी जाती है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि समाज का उत्थान तभी हो सकता है जब हम सजग हो हमें कानून एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी हो तभी हम उसका लाभ ले सकते हैं। डालसा के द्वारा प्रचार प्रसार के माध्यम से लोगों तक कानूनी जानकारी और सरकारी योजनाओं की जानकारी सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाया जा रहा है तथा पीड़ित व्यक्तियों को मुआवजा भी प्रदान किया जाता है। आगे उन्होंने कहा कि आप लोग सभी हेलमेट का प्रयोग करें और सुरक्षित रहें। इस अवसर पर किसान क्रेडिट कार्ड, आवास योजना का स्वीकृत पत्र, जॉब कार्ड, पेंशन स्वीकृति पत्र, जॉब कार्ड, आदि का वितरण किया गया।

सुरक्षा, रोजगार, लोन माफी और पूंजी के लिए नारी जागरूकता अभियान शुरू

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड नवनिर्माण दल से जुड़ी महिला मंडल सहयोग संचालन समिति- गुमला प्रखंड के तत्वाधान में गुमला कचहरी में जुटकर भीख नहीं अधिकार चाहिए, सुरक्षा सम्मान रोजगार अनुदान लोन माफी और व्यवसाय के लिए पूंजी चाहिए, नशाखोरी पर अविलंब रोक लगाओ, जैसे आक्रोषपूर्ण नारे के साथ भारी बारिश के बावजूद पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत नारी जागरूकता अभियान सीता उरांव की अध्यक्षता में शुरू की गयी। अभियान शुरू करने आये ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के प्रभारी सह झारखंड नवनिर्माण दल के केंद्रीय संयोजक विजय सिंह ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार महिलाओं को सुरक्षा व रोजगार देने में विफल साबित हो रही है। यही कारण है कि गुमला के सिसई में छात्रा की अपहरण के बाद बलात्कार हो जाता है। वहीं सरकार की लापरवाही के कारण लगातार झारखंड में बलात्कार, हत्या जैसी घटना आम हो गयी है जो भारी चिंता का विषय है, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। श्री सिंह ने मोदी शासन के इन 10 वर्षों में पूंजीपतियों के 14 लाख करोड़ रुपए लोन माफी का जिक्र करते हुए कहा कि महिलाओं को लोन में फंसा कर माइक्रोफाइनेंस कंपनी द्वारा झारखंड में महाजनी व सूदखोरी का काम कर रही है जिससे अविलंब बंद करने की मांग राज्य सरकार से की है। कहा कि अनुबंध पर कार्यरत सभी कर्मियों को न्याय देने तथा जिले में बढ़ते महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ 7 सितंबर को विशाल धरना कार्यक्रम आयोजित की जायेगी।

शिकंजा : बैंक वालों की मिलीभगत से संचालित हो रहा साइबर अपराध

बंधन बैंक के पांच सीनियर अधिकारी गिरफ्तार

सरायढेला शाखा के सेल्स मैनेजर और जामताड़ा-हजारीबाग के मैनेजर भी शामिल

- कड़े दिशा-निर्देशो के बावजूद कुछ कर्मचारियों ने नियमों का उल्लंघन किया : धनबाद बंधन बैंक के जीएम

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। बैंक में पैसा रखकर उसे सुरक्षित समझना अब लोगों पर भारी पड़ने लगा है। सुरक्षित तरीके से अपने मोबाइल या लैपटॉप से नेट बैंकिंग के जरिए पैसे के लेनदेन करने और बैंक की गोपनीयता को सुरक्षित समझने वालों को थोड़ा सतर्क होने की जरूरत है। क्योंकि हो सकता है आपके पैसे जिस बैंक में हैं वहां के बैंक कर्मचारी या अधिकारी की नजर उस पर है और आपका डाटा चोरी कर साइबर अपराधी तक पहुंचा दिए जा रहे हैं। यह खुलासा उस समय हुआ जब पश्चिम बंगाल साइबर अपराध शाखा ने करोड़ों रुपये की साइबर धोखाधड़ी के मामले में बंधन बैंक के पांच वरिष्ठ अधिकारियों को गिरफ्तार किया है। इनमें धनबाद की सरायढेला शाखा के सेल्स मैनेजर सौरभ कुमार भी शामिल हैं। इन अधिकारियों पर ग्राहकों की गोपनीय जानकारी, रकम की लेन देन से संबंधित डेटा साइबर अपराधियों को बेचने का आरोप है। इसके चलते 2.5 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई। दरअसल, बंगाल की साइबर क्राइम शाखा 2.5 करोड़ रुपये की साइबर धोखाधड़ी की जांच कर रही थी। इस दौरान, अधिकारियों ने पाया कि बैंक के कुछ कर्मचारी सीधे तौर पर इस जालसाजी में शामिल थे। गिरफ्तार अधिकारियों में झारखंड के हजारीबाग और जामताड़ा शाखाओं के मुख्य जोखिम अधिकारी (सीआरओ) के साथ ही कोलकाता के मटियाब्रुज शाखा के सीआरओ और सेल्स मैनेजर भी शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक ये अधिकारी कोर बैंकिंग सिस्टम और अन्य तरीकों से ग्राहकों की संवेदनशील जानकारी, जैसे कि केवाईसी डिटेल और अकाउंट नंबर इकट्ठा करते थे। जिसे बाद में साइबर अपराधियों को बेचते थे। वो ग्राहकों को फोन, एसएमएस या व्हाट्सएप के जरिए संपर्क कर उनसे और जानकारी भी निकलवाते थे। उन्हें आकर्षक फिक्स्ड डिपाजिट या बीमा योजनाओं का लालच देते थे। बंधन बैंक की कोलकाता मुख्य शाखा की ओर से मामले में विद्याननगर थाने में शिकायत की गई थी।

-2.5 करोड़ रुपये की साइबर धोखाधड़ी की जांच में अधिकारियों की संलिप्तता के बारे में पता चला

- कोर बैंकिंग सिस्टम एवं ग्राहकों से गुप्त जानकारी इकट्ठा कर साइबर अपराधियों को बेचने का है आरोप

- 23 जुलाई को बंधन बैंक की ओर से कोलकाता के बिधाननगर थाने में साइबर धोखाधड़ी की दर्ज कराई गयी थी शिकायत

प्रतिकात्मक तस्वीर।

बैंक कर्मचारियों ने किया नियमों का उल्लंघन

धनबाद के बंधन बैंक के जीएम राकेश कुमार ने बताया कि उनके कड़े दिशा-निर्देशो के बावजूद, कुछ कर्मचारियों ने नियमों का उल्लंघन किया, इसका नतीजा यह गिरफ्तारी है। बताया कि सेल्स आफिसर सौरभ की गिरफ्तारी के बाद पुलिस उसे पूछताछ के लिए कोलकाता ले गई है। फिलहाल सभी गिरफ्तार बैंक अधिकारियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस इनसे यह पता लगाने कोशिश कर रही है कि अब तक कितने बैंक ग्राहकों के डेटा बेचे गए हैं। यह सिंडिकेट किन-किन राज्यों में चल रही है और इस अनोखे गोरखधंधे में और कितने लोग किस राज्य में शामिल है। संभावना व्यक्ति की जा रही कि जल्द ही पुलिस बड़ा खुलासा करेगी।

शिक्षा के साथ ही मानवीय मूल्यों का समावेश जरूरी: राजश्री बनर्जी

- डीपीएस बोकारो में झारखंड, बंगाल और ओडिशा के 144 विद्यार्थी हुए पुरस्कृत
- शैक्षिक उपलब्धियों एवं गणितीय मेधाविता के लिए दिया गया सम्मान

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में बच्चों की प्रतिभा एवं मेधाविता को एक बार फिर सम्मानित कर प्रोत्साहित किया गया। विद्यालय में आयोजित उत्कृष्टता सम्मान समारोह के दौरान शैक्षिक उपलब्धियों एवं गणितीय मेधाविता के लिए तीन राज्यों के कुल 144 छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। इनमें कक्षा 5 से 6 में आए 87 विद्यार्थियों को सत्र 2024-25 में उत्कृष्ट परिणाम के लिए अचीवर्स बैज एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। वहीं, डीपीएस बोकारो की ओर से विगत 36 वर्षों से आयोजित की जा रही आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता (एएमसी) के विद्यालयवार एवं ओवरऑल 57 विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। इनमें झारखंड सहित पश्चिम बंगाल और ओडिशा के प्रतिभागी भी शामिल रहे। विभिन्न प्रांतों की इस प्रतियोगिता में कुल 1800 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में डीपीएस बोकारो विद्यालय प्रबंधन समिति की प्रो-वाइस चेयरमैन एवं बोकारो स्टील प्लांट की अधिशासी निदेशक (मानव संसाधन) राजश्री बनर्जी उपस्थित रहीं, जिन्होंने विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए उनकी हौसला-अफजाई की। अपने संबोधन में उन्होंने शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश पर बल देते हुए उपस्थित विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को समाज का भावी स्तंभ बताते हुए कहा कि विद्यार्थी-जीवन से ही कामयाबी और उपलब्धि के पीछे की भागदौड़ में इंसान कहीं न कहीं अपने जीवन के आनंद को पीछे छोड़ देता है। सफलता जरूरी है, पर असफलता से घबराएं नहीं। हर समस्या का समाधान संभव है। जीवन में धैर्य एवं स्थिरता बनाए रखें और जीवन आनंद जरूर लें। उन्होंने डीपीएस बोकारो द्वारा वर्ष 1988 से लगातार आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता के आयोजन की सराहना करते हुए विद्यार्थियों की गणितीय क्षमता के विकास में मील का पत्थर बताया। आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए विद्यालय के प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनाएं दीं और उत्कृष्टता का यह क्रम आगे भी बरकरार रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने डीपीएस बोकारो की ओर से गणित में बच्चों की तार्किक क्षमता और उनके कौशल को परखने के लिए लगभग साढ़े तीन दशक से लगातार आयोजित की जा रही आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता के उद्देश्य व महत्व को भी रेखांकित किया। इसके पूर्व मुख्य अतिथि एवं प्राचार्य ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। इसी बीच प्राचार्य डॉ गंगवार ने मुख्य अतिथि राजश्री बनर्जी को स्मृति-चिह्न एवं शॉल भेंटकर सम्मानित भी किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा अनुष्का, आलिया, आशु और शुभम ने किया। जबकि, धन्यवाद ज्ञापन हेड बॉय प्रिशु आनंद डे ने किया। इस अवसर पर तीन राज्यों से आए विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी, उनके शिक्षक एवं स्थानीय विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य उपस्थित रहे।

वीर दत्ता ने जीता सिल्वर मेडल सिंदरी विधायक ने दी बधाई

झरिया/बलियापुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के आमटाल पंचायत निवासी एवं डीएवी कोयलानगर के छात्र वीर दत्ता ने प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए सिल्वर मेडल जीता है। वीर दत्ता, सिंदरी विधायक के मीडिया प्रभारी शीतल दत्ता के पुत्र हैं। धनबाद के अपर्णा पब्लिक स्कूल में आयोजित 5वें धनबाद जिला योगआसना स्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2025-26 में हुए प्रतियोगिता में वीर दत्ता ने हैंड बैलेंस कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन कर दूसरा स्थान हासिल किया। इस उपलब्धि पर सिंदरी विधायक चंद्रदेव महतो ने वीर दत्ता को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। कहा कि वीर जैसे होनहार बच्चे क्षेत्र और राज्य का नाम रोशन कर रहे हैं। आने वाले समय में यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता प्राप्त करेंगे।

चौराहे-टी-मुहाना चौक पर ट्रैफिक पुलिस-सिग्नल बहाली की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

बिरनी/गिरिडीह। जिले के बिरनी प्रखंड क्षेत्र में होने वाले सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में इन दिनों वृद्धि हुई है। बतातें ज्ञात हो कि प्रखण्ड के चौक चौराहे व भीड़-भीड़ वाले इलाकों में सड़क यातायात नियमों के पालन में कमी देखी जा रही है। जिससे सड़क हादसे में काफी इजाफा हुआ है। इस समस्या का समाधान करने के लिए, चौराहे और टी-मुहाना चौक पर ट्रैफिक पुलिस और ट्रैफिक सिग्नल बहाल करना आवश्यक हो गया है।

बिना हेलमेट-लाइसेंस के गाड़ी चलाना खतरनाक

प्रखंड अंतर्गत दो पहिया वाहन चालकों में हेलमेट के उपयोग में भारी कमी देखी जा सकती है। जिससे सड़क दुर्घटनाओं में जान-माल की अधिक क्षति पहुंचती है। अक्सर लोग बिना लाइसेंस के चार पहिया वाहन लेकर भी सड़क पर उतर जाते हैं। जिससे घटना होने की संभवना बढ़ जाती है। लोगों का ट्रैफिक पुलिस और ट्रैफिक सिग्नल की मांग करते हुए कहना है कि भीड़-भाड़ इलाकों में ट्रैफिक पुलिस द्वारा गति नियंत्रण तथा सिग्नल होने से घटनाओं को टाला जा सकता है।

जागरूकता बढ़ाने को किया गया पौधे का निःशुल्क वितरण

झरिया/पाथरडीह (आजाद सिपाही)। ग्रीन धनबाद अभियान के तहत अधिक से अधिक पौधारोपण करने के लिए रविवार को लोगों को जागरूक करने के उद्देस्य से वार्ड 52 की पूर्व पार्षद एवं भाजपा धनबाद महानगर के जिला मंत्री प्रियंका देवी और भाजपा नेता उचित महतो के सौजन्य से गौर खूंटी, परघाबाद बस्ती, लोको बाजार, चासनाला मोड़, चासनाला सम्राट नगर आदि स्थानों पर निःशुल्क सैकड़ों फलदार पौधे बांटे गये। इस अभियान के तहत ट्रैक्टर में 1000 फलदार पेड़ लाद कर जगह-जगह निःशुल्क वितरित किया गया। इस अवसर पर प्रियंका देवी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण जरूरी हो गया है। बरसात में जिला प्रशासन एवं नगर निगम की ओर से पेड़ पौधे लगाना चाहिए। पर पेड़-पौधे लगाने में उनकी नकारात्मक सोच देखने को मिल रही है। उन्होंने कहा कि हम खुद पेड़ खरीद कर लगा रहे हैं। इस मानसून में हमने 10 हजार पौधे लगाने एवं लोगों को वितरण करने का संकल्प लिया है। इस मौके पर उचित महतो, शिबू गोराई, अजय दास, नागेंद्र सिंह, राजेश साव, मुकेश ओझा, अमर पाल, अभिषेक बाउरी, रॉकी साव, पंकज पासवान आदि मौजूद थे।

धनबाद जिला डेकोरेटर्स एसोसिएशन शाखा सम्मान समारोह का आयोजन

झरिया/जोरापोखर (आजाद सिपाही)। धनबाद जिला डेकोरेटर्स एसोसिएशन के जोरापोखर शाखा की ओर से आशीर्वाद लॉज में रविवार को सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर सत्र 2025-28 के लिए नवनिर्वाचित अध्यक्ष गौतम कुमार रंजन, सचिव राजेंद्र विग एवं कोषाध्यक्ष समिमुद्दीन को संगठन के सदस्यों ने फूल-माला पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अध्यक्ष गौतम कुमार रंजन ने कहा कि गरीब एवं जरूरतमंदों की सेवा करना ही हमारे लिए सच्चा सम्मान है। डेकोरेटर्स एसोसिएशन हमेशा समाज के हित और सहयोग में तत्पर रहेगा। वहीं, कोषाध्यक्ष शमिमुद्दीन ने कहा कि हमारा उद्देश्य लोगों की हर संभव मदद करना और संगठन को मजबूत बनाना है। सभी सदस्यों के सहयोग से जोरापोखर शाखा को जिला का नंबर वन शाखा बनाना हमारा संकल्प है। कार्यक्रम को सफल बनाने में रमेश पांडेय, बिश्वजीत चटर्जी, रफिक, मंटू दा, पिंटू राय, संतोष कुमार, मधु सेन, बबलू साव, हैदर, दिलीप गुप्ता, ताबीज, प्रवीण, अरविंद, अभिषेक, रोहित, बाबू दा, आकाश एवं नसीम आदि का सराहनीय योगदान रहा।

झरिया शहर के मकानों को एनक्रोंचर की श्रेणी में डालने की हो रही है साजिश : अनूप

- पूर्व मंत्री से मिला झरिया का प्रतिनिधिमंडल

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया। नागरिकों का प्रतिनिधि मंडल राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग के पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी से मुलाकात किया। इसमें पूर्व पार्षद अनूप कुमार साव, बलदेव महतो, रंजन साहू, राजू वर्मा और पिंटू बर्मन आदि शामिल थे। पूर्व पार्षद ने कहा कि झरिया अंचल के 58 मौजा में 10 मौजा का हाल सर्वे ऑनलाइन एंट्री नहीं होने के कारण झरिया के रैयतदार का रजिस्ट्री, दाखिल खारिज, पंजी 2, में नाम दर्ज नहीं हो रहा है। ऐसी आशंका है कि हम रैयतदारों को एंक्रोचर की श्रेणी में डालने के लिए बीसीसीएल एवं जेआरडीए साजिश रच रही है। आवेदन को उस समय के वर्तमान सचिव कमल किशोर सोन को अनुशंसा कर अग्रसरित किया था पर उसकी अधतन स्थिति क्या है! विभाग से संचिका निकलवा कर यह जानने एवं उसे अंजाम तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इस पर पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी ने कहा कि वे रांची जाकर विभाग में उक्त संचिका की वस्तु स्थिति देखकर अग्रेतर कार्रवाई के लिए प्रयास करेंगें।

सेंट्रल अस्पताल में घायल सीसील कर्मी का घंटों बाद इलाज शुरू करने का आरोप

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। ढोरी सेंट्रल अस्पताल में लापरवाही का मामला सामने आया है। घायल विजय कृष्ण कुमार नामक एएडीओसीएम अमलो परियोजना का मजदूर रविवार की दोपहर सीक फिट लेकर जाने के दौरान अपने आवास सुभाष नगर के निकट बाइक से गिरकर घायल हो गया। उसके पैर में गंभीर चोट लगी। पड़ोसियों ने घायल सीसीलकर्मी को लेकर सेंट्रल अस्पताल पहुंचाया। पर वहां कोई चिकित्सक नहीं था। पूर्व सांसद रवींद्र कुमार पांडेय के निजी सचिव मृत्युंजय कुमार पांडेय ने बताया कि उन्हें अस्पताल में फोन करना पड़ा। एक घंटे बाद डॉ अंकित गौरव पहुंचे और इलाज शुरू किया। दो घंटे में एक्स रे टेक्नीशियन पहुंचा तब घायल कर्मी का एक्स रे हुआ। तबतक मृत्युंजय पांडेय अस्पताल पहुंचे और उन्हें भर्ती कराया। फिर उन्होंने सीएमओ डॉ संजय कुमार सिन्हा को फोन कर लापरवाही की जानकारी देते हुए व्यवस्था में सुधार की बात कही।

भाकपा माले का सांगठनिक चुनाव शुरू अनिल सिंह बने वार्ड नंबर 53 के सचिव

झरिया/सिंदरी (आजाद सिपाही)। भाकपा माले का सांगठनिक चुनाव शुरू हो गया है। रविवार को आर्य समाज मंदिर गौशाला में हुए चुनाव में अनिल सिंह निर्विरोध सचिव चुने गए। चुनाव का संचालन अमर सिंह और सहदेव सिंह के नेतृत्व में हुआ। मौके पर धनबाद जिला समिति के सदस्य विमल कुमार भी मौजूद थे। चुनाव प्रक्रिया की निगरानी माले के राज्य समिति के सदस्य सुरेश प्रसाद ने किया। नगर सचिव राजीव मुखर्जी ने चुनाव परिणाम की घोषणा करते हुए बताया कि अनिल सिह वार्ड 53 से निर्विरोध सचिव निर्वाचित हुए और उनका कार्यकाल एक वर्ष के लिए होगा। वहीं, निर्वाचन मंडल ने तत्काल प्रभाव से अनिल सिंह को कार्यभार सौंप दिया। अनिल सिंह ने अपने चयन पर आभार व्यक्त किया और कहा कि बहुत शीघ्र ही संपूर्ण समिति का गठन किया जाएगा।

सीबीएसइ की दो-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन

शिक्षकों ने सीखे विद्यार्थियों में सीखने और समझने की क्षमता विकसित करने के गुण

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप विद्यार्थियों में सीखने-समझने की क्षमता बढ़ाने और शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार के उद्देश्य से सीबीएसई शिक्षकों को लगातार विशेष प्रशिक्षण मुहैया करा रही है। इसी कड़ी में दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में सीबीएसई (केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड) के पटना उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की ओर से विद्यालय के शिक्षकों के लिए दो-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई। मूल्यांकन एवं आकलन कार्यों के सुदृढ़ीकरण विषय पर आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन रविवार को हुआ। जिसमें बतौर रिसोर्स पर्सन स्थानीय चिन्मय विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं राष्ट्रीय स्तर के टीचर ट्रेनर गोपालचंद्र मुंशी और त्रिमूर्ति पब्लिक स्कूल के उपप्राचार्य अनिल कुमार मोदी मौजूद रहे। इस असर पर गोपालचंद्र मुंशी ने आकलन (असेसमेंट) की परिभाषा, इसकी महत्ता, अनिवार्यता और लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कहा कि आकलन एवं मूल्यांकन विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन की जांच का पैमाना है। विद्यार्थी और बेहतर तरीके से सीख एवं समझ सकें, इसके लिए आकलन की प्रक्रिया और सुदृढ़ एवं संवर्द्धित किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने इस संबंध में स्व-मूल्यांकन (सेल्फ असेसमेंट), आवधिक परीक्षा (पीरियोडिक टेस्ट), विषय-संवर्द्धन गतिविधियों सहित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। दूसरे रिसोर्स पर्सन एके मोदी ने भी कहा कि समय के अनुसार शिक्षा में बदलाव जरूरी है। इस दिशा में शिक्षकों की आकलन एवं मूल्यांकन क्षमता को और प्रभावशाली बनाए जाने की जरूरत है। कार्यशाला के दौरान निर्धारित विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, प्रश्नोत्तरी एवं अंतःक्रिया सत्र भी आयोजित किए गए। प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने इस प्रकार की कार्यशाला को शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने और विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ ही उनके समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण बताया। कहा कि डीपीएस बोकारो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुपालन हेतु कटिबद्ध है। कार्यशाला में विद्यालय के वरीय उप प्राचार्य अंजनी भूषण सहित लगभग 60 शिक्षक-शिक्षिकाएं शामिल हुए।

कार्यशाला में उपस्थित रिसोर्स पर्सन एव डीपीएस बोकारो के शिक्षक।

किशोरी से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

धनसार/झरिया (आजाद सिपाही)। बोरागढ़ ओपी क्षेत्र में रविवार को 13 वर्षीय किशोरी से दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। इसकी शिकायत पीड़िता की मां ने बोरागढ़ ओपी में की है। साथ ही स्थानीय लोगों ने बोरागढ़ ओपी में जाकर आरोपी को पकड़ने की मांग की। उधर, बोरागढ़ पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कांड संख्या 228/25 धारा एस 65(1),बीएनएस और 4/8 पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। दूसरी ओर, पुलिस ने आरोपी आकाश कुमार राम (22) को उसके आवास भालगोरा से गिरफ्तार कर लिया है। बोरागढ़ पुलिस किशोरी का मेडिकल जांच कराने के बाद मामला दर्ज कर लिया और आकाश को जेल भेज दिया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि शनिवार की देर शाम आकाश उसे बहला फुसलाकर पास की झाड़ी में ले गया और जबरन उसके साथ कुकर्म किया। इस घटना के बाद पीड़िता ने इसकी शिकायत बोरागढ़ ओपी में की।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

अनिल अंबानी का बैंक ऑफ इंडिया अकाउंट फ्रॉड घोषित

- रिलायंस कम्युनिकेशंस पर 700 करोड़ रुपये के गलत इस्तेमाल का आरोप, आधे पैसों की एफडी करायी

आजाद सिपाही संवाददाता

मुंबई। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बाद बैंक ऑफ इंडिया ने भी अनिल अंबानी की रिलायंस कम्युनिकेशंस के लोन खाते को फ्रॉड घोषित किया है। बैंक ऑफ इंडिया ने फाइलिंग में बताया है कि हमसे लिए फंड का गलत इस्तेमाल किया गया था। इसमें कंपनी के पूर्व निदेशक अनिल अंबानी का नाम भी शामिल है। ये लोन का मामला 2016 का है। बैंक का कहना है कि अनिल अंबानी और उनके कुछ पूर्व डायरेक्टर्स ने फंड्स को डायवर्ट यानी इधर-उधर कर दिया। इसलिए बैंक ऑफ इंडिया ने अनिल अंबानी का नाम भी इस फ्रॉड केस में लिया है। बैंक ऑफ इंडिया ने रिलायंस कम्युनिकेशंस को 700 करोड़ रुपये का कर्ज दिया था। इस मामले में रिलायंस कम्युनिकेशंस ने कहा कि उसे 22 अगस्त को बैंक ऑफ इंडिया से 8 अगस्त का एक लैटर मिला है। इसमें बैंक ने अनिल अंबानी (कंपनी के प्रमोटर और पूर्व

निदेशक) और मंजरी अशोक कक्कड़ (कंपनी की पूर्व निदेशक) के लोन अकाउंट को फ्रॉड घोषित करने के बारे में बताया है।

सीबीआइ ने अनिल अंबानी के खिलाफ केस दर्ज किया इससे पहले कल यानी 23 अगस्त को सीबीआइ ने अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस के खिलाफ 2,929 करोड़ रुपये के बैंक फ्रॉड मामले में केस दर्ज किया था। सीबीआइ ने मुंबई में रिलायंस कम्युनिकेशन लिमिटेड के ऑफिस और अनिल अंबानी के घर पर शनिवार को छापेमारी भी की थी। यह फ्रॉड स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से जुड़ा है। लोन के गलत इस्तेमाल का आरोप कुछ दिन पहले स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने रिलायंस कम्युनिकेशंस और खुद अनिल अंबानी को 'फ्रॉड' घोषित किया था। एसबीआइ का कहना है कि रिलायंस कम्युनिकेशंस ने कई बैंकों से लिये गये 31,580 करोड़ रुपये के लोन का गलत इस्तेमाल किया।

बिहार में राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा का 8वां दिन

चिराग पासवान बड़े भाई, जल्द शादी करें: तेजस्वी

- राहुल गांधी बोले, यह मुझ पर भी लागू
- युवक ने सुरक्षा घेरा तोड़ कर राहुल को किस किया

आजाद सिपाही संवाददाता

पूर्णिया/अररिया। वोटर अधिकार यात्रा के 8वें दिन राहुल-तेजस्वी का काफिला अररिया पहुंचा। यहां मीडिया से बात करते हुए तेजस्वी यादव ने केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान को शादी करने की सलाह दी। चिराग को लेकर किये सवाल पर बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि वे एक व्यक्ति विशेष के हनुमान हैं। हम जनता के हनुमान हैं। चिराग पासवान आज कोई मुद्दा नहीं हैं। मैं उन्हें सलाह जरूर दूंगा, वह हमारे बड़े भाई हैं और उन्हें जल्द से जल्द शादी करनी चाहिये। इस बयान पर राहुल गांधी ने कहा कि यह बात मुझ पर भी लागू होती है।

राहुल गांधी ने दो किमी बाइक चलायी : इससे पहले रविवार सुबह यात्रा पूर्णिया से शुरू हुई, जहां राहुल गांधी ने बुलेट मोटरसाइकिल चलायी। इस दौरान उनके पीछे कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम बैठे दिखे। राहुल ने दो किमी तक बाइक चलायी। इस दौरान उनका एक समर्थक अचानक से सामने आ गया। राहुल कुछ समझ पाते, इससे पहले उसने राहुल किस किया। तब तक सिक्योरिटी गार्ड पहुंच गये और उन्होंने युवक को थप्पड़ जड़ दिया। वहीं तेजस्वी यादव दूसरी बुलेट पर नजर आये। उनके पीछे बॉडीगार्ड था। यात्रा में तेजस्वी यादव के साथ-साथ मुकेश सहनी, माले नेता दीपांकर भट्टाचार्य के साथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी मौजूद हैं।

प्रियंका भी यात्रा में शामिल होंगी: पूर्णिया से अररिया जाने के दौरान जलालगढ़ ब्लॉक में राहुल गांधी ने ढाबे पर रुककर चाय पी। करीब 30 मिनट तक वो ढाबे पर रुके। ढाबे वाले से हालचाल भी पूछा। यहां से राहुल गांधी दिल्ली के लिए रवाना हो गये। सोमवार को यात्रा में एक दिन का ब्रेक होगा। 26 अगस्त को प्रियंका गांधी भी यात्रा में शामिल होंगी।

हवाई हमले नाकाम करनेवाले स्वदेशी सिस्टम का परीक्षण सफल

- दुश्मन के ड्रोन और मिसाइलें हवा में ही मार गिरायेगा
- सुदर्शन चक्र मिशन के तहत बनाया

आजाद सिपाही संवाददाता

चांदीपुर। भारतीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) के बनाये स्वदेशी इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस वेपन सिस्टम (आइएडीडब्ल्यूएस) का पहला टेस्ट कामयाब रहा। इसका टेस्ट शनिवार को ओड़िशा के तट पर किया गया। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। उन्होंने लिखा कि इस परीक्षण ने हमारे देश की मल्टी लेयर एयर डिफेंस कैपेबिलिटी बढ़ायी है। यह सिस्टम दुश्मन के हवाई खतरों के खिलाफ रीजनल डिफेंस को मजबूती देगा। यह एक मल्टीलेयर एयर डिफेंस सिस्टम है, ये दुश्मन के हवाई हमले नाकाम करेगा। इसमें सभी स्वदेशी क्विक एक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल (क्यूआरएसएएम), एडवांस्ड वैरी शॉर्ट एयर डिफेंस सिस्टम मिसाइलें (वीएसएचओआरएडीएस) और हाइ पावर लेजर बेस्ड डायरेक्टेड एनर्जी वेपन (डीइडब्ल्यू) शामिल हैं। आइएडीडब्ल्यूएस को सुदर्शन चक्र मिशन का एक हिस्सा माना जा रहा है। यह स्वॉर्म (एक साथ छोड़े गये कई ड्रोन) ड्रोन अटैक के खिलाफ रक्षा कवच बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से दिये अपने भाषण में सुदर्शन चक्र मिशन की घोषणा की थी।

एक साथ 3 टारगेट मार गिराये : परीक्षण के दौरान इस सिस्टम ने दो हाई स्पीड फिक्स विंग अनमैन्ड ड्रोन, मल्टी कॉप्टर ड्रोन समेत तीन अलग-अलग टारगेट पर अटैक किया। ये तीनों टारगेट अलग-अलग दूरी और ऊंचाई पर थे। आइएडीडब्ल्यूएस ने इन तीनों को एक साथ निशाना बनाकर पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया। सिस्टम का कांसेप्ट इस तरह से तैयार किया गया है कि पहले रडार यूनिट आने वाले खतरों पर नजर रखती है और उन्हें क्लासिफाई करती है। इसके बाद कमांड सेंटर ज्यादा ऊंचाई से आने वाले तेज खतरों के लिए क्विक एक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल को निर्देश देता है। कम रेंज वाले और धीमी गति से होने वाले हमले के लिए एडवांस्ड वैरी शॉर्ट एयर डिफेंस सिस्टम मिसाइलें एक्टिवेट होती हैं। इसके साथ ही साथ ड्रोन और चीप सैचुरेटेड अटैक के लिए लेजर बेस्ड डायरेक्टेड एनर्जी वेपन हमला करते हैं।

अंतरिक्ष से वापसी के क्रू मॉड्यूल का टेस्ट सफल

भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान की तैयारी में बड़ी कामयाबी मिली है। इसरो ने रविवार को पहला इंटीग्रेटेड एयर ड्रॉप टेस्ट सफलतापूर्वक पूरा किया। यह टेस्ट गगनयान मिशन के लिए तैयार किये गये पैराशूट सिस्टम की असली परिस्थितियों में जांच करने के लिए किया गया। इसका मकसद गगनयान मिशन से पहले पैराशूट खुलने के प्रोसेस को चैक करना था। ये प्रोसेस मिशन के समय अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षित वापसी तय करेगी। टेस्ट के दौरान लगभग 5 टन वजनी डमी क्रू कैप्सूल को वायुसेना के चिनूक हेलिकॉप्टर से 4 किमी की ऊंचाई से छोड़ा गया। पैराशूट ने नीचे आते समय तय प्रोसेस में खुलकर कैप्सूल की रफ्तार धीमी की और उसे सुरक्षित लैंडिंग के लिए तैयार किया। इस टेस्ट में इसरो, भारतीय वायुसेना, डीआरडीओ, भारतीय नौसेना, इंडियन कोस्ट गार्ड ने मिलकर काम किया।

जर्मनी से छह पनडुब्बियां खरीदेगा भारत

भारत सरकार वायुसेना और नौसेना की ताकत बढ़ाने के लिए दो बड़ी डील करने के लिए तैयार हो गयी है। पहली डील रक्षा मंत्रालय और मझगांव डॉकयार्ड्स लिमिटेड (एमडीएल) जर्मनी से 6 सबमरीन खरीदने वाली है। सरकार ने 'प्रोजेक्ट 75 इंडिया' के तहत भारत में बनने वाली इन पनडुब्बियों की खरीद को लेकर बातचीत शुरू करने की मंजूरी दे दी है। यह डील 70 हजार करोड़ में हो सकती है। वहीं, भारत सरकार इजराइली रैम्पेज एयर-टू-ग्राउंड मिसाइलों की बड़ी खेप खरीदने वाली है। सूत्रों के अनुसार, यह ऑर्डर जल्द ही फास्ट-ट्रैक प्रक्रिया के तहत दिया जायेगा। रैम्पेज मिसाइलों का इस्तेमाल पाकिस्तान के मुरीदके और बहावलपुर स्थित आतंकवादियों मुख्यालयों पर सटीक हमलों में किया था।

यूरोपीय देशों ने अमेरिका के लिए डाक सेवा रोकी

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। भारत के बाद कई यूरोपीय देशों ने भी अमेरिका के लिए डाक सेवाएं सस्पेंड कर दी हैं। इनमें इटली, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, ऑस्ट्रिया समेत कई देश शामिल हैं। सर्विस सस्पेंड होने की वजह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नये टैरिफ नियम हैं। दरअसल, ट्रंप प्रशासन ने इसी साल 30 जुलाई को आदेश जारी किया था, जिसमें 800 डॉलर (70 हजार रुपये) तक के सामान पर मिलने वाली टैरिफ छूट को खत्म कर दिया गया है। यह छूट 29 अगस्त से खत्म हो जायेगी। यूरोपियन डाक संगठन पोस्ट यूरोप और दूसरे डाक विभागों के मुताबिक नये नियमों पर अब तक साफ जानकारी नहीं दी गयी है।

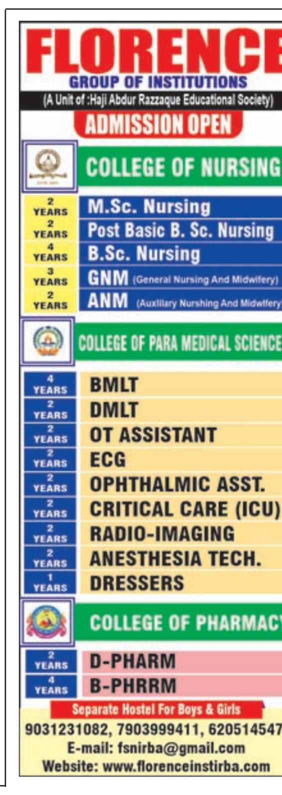

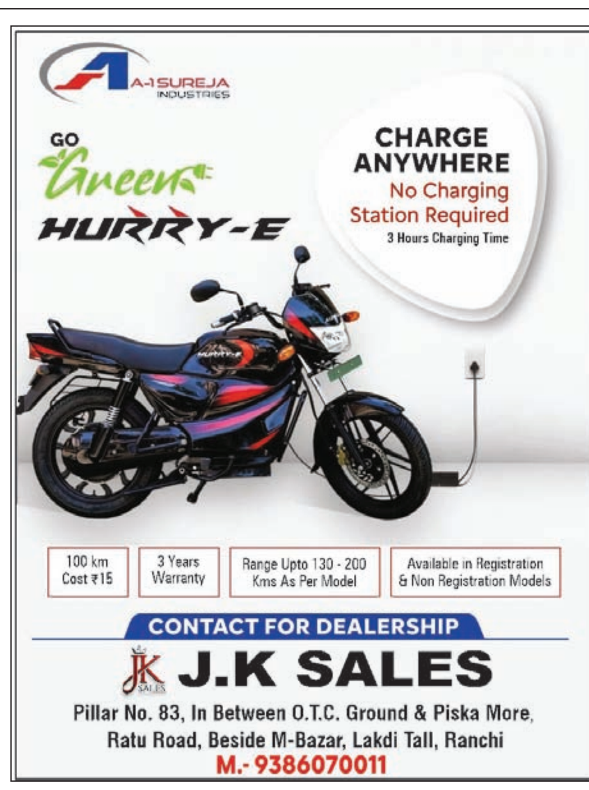

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची, झारखंड से मुद्रित। **संस्थापक प्रधान संपादक :** स्व. हरिनारायण सिंह, **संपादक :** राकेश सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**